लील बहादुर छेत्री के नेपाली उपन्यास (ब्रह्मपुत्र का छेउ) के हिंदी अनुवाद (ब्रहमपुत्र के आस पास मैं सैम एवं विषम समाजों का सांस्कृतिक और भाषिक विश्लेषण

AN ANALYTICAL STUDY OF HINDI LINGUAL AND CULTURAL SIMILARITIES AND DISSIMILARITIES IN THE HINDI TRANSLATION (BRAHMAPUTRA KE AAS PAAS) OF LIL BAHADUR CHETRI'S NEPALI NOVEL (BRAHMAPUTRA KA CHEU CHAU)

Dissertation Submitted to Jawaharlal Nehru University in Partial Fulfillment of the Requirement for the Award of the Degree

Master of Philosophy

Submitted by

Lakhima Derori

Submitted to

PROF. CHAMAN LAL
(Research Supervisor)

Dr. RANJIT K. SAHA
(Co-Supervisor)

Centre of Indian Languages

School of Language, Literature and Culture Studies

Jawaharlal Nehru University

New Delhi-110067

India

2012

Date: 20 /07/2012

DECLARATION

I declared that the M.Phil. Dissertation entitled "**Lil BahadurChetrike Nepali Upanyas (Brahmaputra KaCheuChau) ke Hindi anuvad (BrahmaputaKeAasPaas) mein Sam EvamVishamSamajokaSanskritikAurBhashikVishleshan [An analytical study of lingual and cultural translation (Brahmaputra KeAasPaas) of Lil BahadurChetri's Nepali novel (Brahmaputra KaCheuChau)]"** submitted by me in partial fulfillment of the requirements for the award of the Degree of **Master of Philosophy** of Jawaharlal Nehru University, is an original research work. This dissertation has not been submitted for any degree in this University or any other university/institution.

LakhimaDeori

CERTIFICATE

We recommend that this dissertation be placed before the examiners for evaluation.

PROF. CHAMAN LAL
(Research Supervisor)

Dr. RANJIT K. SAHA
(Co-Supervisor)

PROF. K. NACHIMUTHU
(Chairperson)
Centre for Indian languages, SLL - CSJNU, New Delhi

अनुक्रमणिका

आमुख i-iv

आभार v-vi

अध्याय प्रथम . लेखक, अनुवादक एवं पाठ : परिचयपरक विश्लेषण 1•13

1.1 लेखक का परिचय : लील बहादुर क्षत्री

1.2 अंतर्वस्तु

1.3 अनुवादक का परिचय

अध्याय द्वितीय . ब्रह्मपुत्रका छेउ•छाउ (मूल एवं लक्ष्य) का भाषिक विश्लेषण 14•60

2.1 नेपाली भाषा : उद्‌भव, विकास और उसकी रचनात्मक प्रकृति (वाचिक एवं मुद्रित)

2.2 नेपाली और हिन्दी : परस्पर संबंध (भौगोलिक, भाषिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक)

2.3 नेपाली भाषा की भाषिक संरचना . प्रदत्त पाठ के आलोक में

2.4 भाषागत विशिष्टताओं का अध्ययन

अध्याय तृतीय . ब्रह्मपुत्रका छेउ•छाउ के हिंदी अनुवाद का विश्लेषण 61•95

3.1 समतुल्यता के आधार पर मूल एवं लक्ष्य पाठ का विश्लेषण

3.2 सांस्कृतिक विश्लेषण

3.3 पाठाधारित समस्याएँ : लोप एवं संयोजन

3.4 प्रस्तावित पाठ

उपसंहार 96•97

परिशिष्ट .संबंधित चित्र 98•100

साक्षात्कार (लेखक से) 101•104

संदर्भ-ग्रंथ-सूची 105•115

आमुख

प्रस्तुत मूल नेपाली उपन्यास लील बहादुर क्षत्री कृत 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' असम के ब्रह्मपुत्र के आसपास बसे लाखों नेपालियों की पुनर्स्थापन एवं जीविकोपार्जन की एक मार्मिक संघर्ष-गाथा है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र गुमान है और उसी के इर्द-गिर्द पूरी कहानी घूमती है। उसी पात्र के द्वारा असम में नेपाल से आए हुए नेपाली, असम में बसे नेपाली, उनके व्यवसाय, रहन-सहन, लोगों के स्वार्थी स्वभाव या बदलते उसूलों आदि सभी का यथार्थ वर्णन है। क्षत्री जी के एक अन्य उपन्यास 'बसाइँ' में नेपाल के ग्रामीण समाज का वर्णन है। 'बसाइँ' यदि नेपाल के ग्रामीण समाज के शोषित लोगों के करुण तथा दारुण जीवन का चित्र प्रस्तुत करने में सफल है तो 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' असम के लाखों प्रवासी नेपालियों के वास्तविक जीवन संघर्ष से संबंधित चीज़ों को दर्शाता है। ऐसा लगता है कि 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' जैसे बसाइँ का ही उत्तरकथा है। 'बसाइँ' में लेखक ने यह दिखाया है कि नेपाल से नेपाली लोग जीविका की तलाश में विदेश क्यों जाते हैं तथा 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' में बाहर जाकर करते क्या है, इसका वर्णन है।

इस उपन्यास में एक ओर एक देश से दूसरे देश की ओर विचरण, उसके प्राकृतिक वातावरण आदि का सौन्दर्यमय चित्रण किया गया है, तो वहीं दूसरी ओर अनेक समस्याओं से जूझते हुए प्रवासी नेपाली जाति की अन्तर्वेदना के बारे में अधिकारिक सूचना देकर जिज्ञासा को शांत किया गया है। यह एक ओर विशुद्ध यथार्थवादी सामाजिक उपन्यास है, तो दूसरी ओर प्रवासी नेपाली जनजीवन से संबंधित प्रामाणिक दस्तावेज़। इसमें अनेक सांस्कृतिक परिवेश को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसलिए नेपाली साहित्य में 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' एक विशिष्ट उपन्यास है। साथ ही इसके अनुवाद 'ब्रह्मपुत्र के आसपास' का भी अपना एक विशेष महत्त्व है।

अनुवाद के कारण ही ग़ैर नेपाल यह जान पाने में सक्षम हुए हैं कि भारत में प्रवासी नेपालियों की स्थिति क्या है ? साथ ही उनकी समस्याओं से रू-ब-रू हो पाए हैं।

प्रस्तुत शोधार्थी ने इस लघु शोध प्रबंध के लिए इस उपन्यास का चयन इसलिए किया है क्योंकि सर्वप्रथम तो यह उपन्यास 1987 में साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत हुआ। यह पुरस्कार तत्कालीन अकादेमी अध्यक्ष डॉ वीरेन्द्र कुमार भटट्ाचार्य के हाथों प्राप्त हुआ। साथ ही इस उपन्यास के महत्त्व के कारण भी। असम में रहनेवाले नेपाली लोगों के जीविकोपार्जन के उपाय के बारे में नेपाली साहित्य में किसी ने नहीं लिखा था, जिसके फलस्वरूप असम के नेपालियों के बारे में केवल अनुमान के सिवाय अध्ययन का कोई आधार न था। प्रत्येक जाति अपने साहित्य में अपनी संस्कृति को उपस्थापित करते हैं। असम में बसे प्रवासी नेपालियों के बारे में नेपाली साहित्य में कहीं भी न लिखने के कारण निश्चय ही एक शून्यता की स्थिति है। लील बहादुर क्षत्री ने 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' लिखकर इस शून्यता को भरने का प्रयास किया है। इस रचना में असम के नेपालियों के बारे में भरपूर जानकारी है। असम के प्रति जिज्ञासु पाठक के लिए यह उपन्यास 'टूरिस्ट गाइड' की तरह है।

इस उपन्यास के चयन का एक अन्य कारण यह भी है कि यह शोधार्थी के स्थान से जुड़ा उपन्यास है, जिसके कारण उपन्यास की कथावस्तु, स्थान, रीति-रिवाज़ आदि से तादाम्य स्थापित हुआ है। शोधार्थी को नेपाली भाषा, साहित्य, संस्कृति में पहले से रुचि थी। अपने सीमित ज्ञान को विस्तृत करने हेतु भी इसका चयन किया गया। शोधार्थी ने पहले 'बसाइँ' उपन्यास का अध्ययन किया था। 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' की विषयवस्तु शोधार्थी के स्थान असम से संबंधित होने के कारण इस ओर शोध करने हेतु और अधिक रुचि बढ़ी। यह उपन्यास बहु-सांस्कृति अध्ययन के लिए उपयुक्त है। इसमें भारतीय संस्कृति के साथ असमिया और नेपाली संस्कृति को देख सकते हैं। साथ ही, इस मूल उपन्यास का हिंदी अनुवाद भी उपलब्ध है। इस कृति का सरल एवं संतुलित अनुवाद डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद साह ने किया है। इस कृति से नेपाली भाषा और

संस्कृति का ज्ञान तो होगा ही। साथ ही तुलनात्मक अध्ययन के लिए भी यह कृति यथोचित है।

प्रस्तुत शोधार्थी द्वारा उक्त नेपाली उपन्यास (ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ) के हिंदी अनुवाद (ब्रह्मपुत्र के आसपास) में सम एवं विषम समाजों का सांस्कृतिक एवं भाषिक विश्लेषण करते हुए लघु शोधकार्य को एक व्यवस्थित रूप देने के लिए तीन अध्यायों में बाँटा गया है, जिनका संक्षिप्त ब्योरा आगे दिया जा रहा है

प्रथम अध्याय के अंतर्गत निम्नलिखित शीर्षकों को रखा गया है।

- लेखक का परिचय
- अनुवाद का परिचय
- उपन्यास का कथ्य (अन्तर्वस्तु)

द्वितीय अध्याय में ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ (मूल एवं लक्ष्य) का भाषिक विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय में चार उपअध्याय है।

- नेपाली भाषा : उद्‌भव, विकास और उसकी रचनात्मक प्रकृ ति
- नेपाली और हिंदी : परस्पर संबंध (सांस्कृतिक, भाषिक, भौगोलिक एवं रचनात्मक)
- नेपाली भाषा की भाषिक संरचना . प्रदत्त पाठ के आलोक में
- भाषागत विशिष्टताओं का अध्ययन

चौथे उपअध्याय में हिंदी और नेपाली भाषा की विशिष्टताओं का अध्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय में ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ के हिंदी अनुवाद का विश्लेषण है। इसमें तीन उपअध्याय है।

- समतुल्यता के आधार पर मूल एवं लक्ष्य पाठ का विश्लेषण

-सांस्कृतिक विश्लेषण : रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, उत्सव, स्थानीय विशिष्टताएँ, लोकगीत, लोकोक्ति, मुहावरे एवं देशज प्रयोगों का अध्ययन

- पाठाधारित समस्याएँ : लोप एवं संयोजन

- प्रस्तावित पाठ

पहले उपध्याय में समतुल्यता सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए शब्द, भाषा, संस्कृति, प्रतीक आदि अनूदित पाठ के कितने समतुल्य है, इसका अध्ययन किया गया है। प्रस्तावित पाठ के अंतर्गत प्रस्तुत शोधाथ्री ने उक्त पुस्तक के अनुवाद में सुधार की जो गुंजाइश थी, उनको अपने शब्दों में व्यक्त किया है। शोधार्थी की दृष्टि से जिन शब्दों या वाक्यों के जुड़ने या घटने से अनुवाद बेहतर बन सकता है, उनको इसमें स्थान दिया गया है। अनुवाद में भाषिक, व्याकरणिक, मुहावरों संबंधी एवं शैली संबंधी जो कमियाँ नज़र आईं उनको भी प्रस्तुत उपअध्याय के अंतर्गत सुधारने का प्रयास किया गया है। प्रस्तावित पाठ के साथ लेखक से साक्षात्कार लेकर कृति के बारे में जानने का मेरा श्रम सफल एवं सार्थक हुआ है। साक्षात्कार में शोधार्थी द्वारा मूल लेखक के साथ हुई बातचीत प्रस्तुत है। परिशिष्ट में कुछ पाठ से संबंधित चित्र प्रस्तुत है। तीन अध्यायों के अंतर्गत कई बिन्दुओं से गुज़रते हुए इस लघु शोध-प्रबन्ध का पूरा वृत्त तैयार किया गया है।

आभार

इस लघु शोध-प्रबंध की शुरूआत से पहले से आज इसकी पूर्णता तक के सफ़र में डॉ.रणजीत साहा का सहयोग हमेशा मिलता रहा, न सिर्फ़ एक शिक्षक, शोध निर्देशक के तौर पर, अपितु एक अभिभावक के तौर पर भी। शोध विषय के चयन, उसकी रूपरेखा तैयार करने से लेकर पूरे प्रबध-लेखन के दौरान सर का अपेक्षित सहयोग मिलता रहा। उनके महत्त्वपूर्ण दिशा निर्देशन ने प्रतिपल मुझमें उत्साह का संचार किया। उनके सहयोग के लिए मैं कृतज्ञ रहूँगी। अपने शोध-निर्देशक डॉ. रणजीत साहा के साथ शोध विषय तय करते समय विषय के सामाजिक सरोकार और प्रासांगिकता का विशेष ध्यान रखा गया। शोध का प्रस्तुत विषय इस लिहाज़ से काफ़ी उपयुक्त लगा। शोध-निर्देशक व शोधकर्ता के बीच इस विषय पर सहमति हो गई। यह विषय था . नेपाली भाषा और हिंदी भाषा के अनुवाद का तुलनात्मक अध्ययन। विषय चयन से लेकर लघु शोध-प्रबंध के इस रूप में आने तक मेरे शोध-निर्देशक का मशविरा उसके रूप-निर्धारण में विशेष सहायक रहा है। उनकी महत्त्वपूर्ण सलाहों ने इस शोध के न केवल बाहरी, बल्कि आंतरिक रूप (content) को भी मज़बूती प्रदान की है।

मैं अपने मार्ग-निर्देशक प्रो. चमनलाल के प्रति कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे अनेक सकारात्मक सुझाव दिए और हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया। मेरे अंदर जो थोड़ी-बहुत शोध की अभिरुचि पैदा हो सकी है, इसका श्रेय उन्हीं को जाता है।

मैं एक प्रमुख डॉ. शांति थापा का नाम लेना चाहूँगी। उनकी मैं बहुत आभारी हूँ। उन्होंने मुझे बहूत सारी सामग्री तथा अपना शोध भी उपलब्ध कराया और मेरा मार्गदर्शन भी किया।

लील बहादुर क्षत्री जी ने मेरा पूरा सहयोग दिया और उनके साक्षात्कार से मेरी इस शोध-प्रबंध में काफी सहायता मिली। माता-पिता का आशीर्वाद एवं भाई-बहन का

विश्वास सदा मुझे प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान करता रहा, उन्हें व्यक्त कर मैं उस कृतार्थता से मुक्त होने का प्रयास भी नहीं कर सकती।

इस सफ़र की शुरुआती दौर में जब लेखन को लेकर कई सारी उलझनें थीं, तो स्वाती दीदी और रमेश भाई का काफ़ी सहयोग प्राप्त हुआ, जिससे काफ़ी सुविधा मिली। इसी क्रम में मैं अपने दोस्तों को कैसे विस्मृत कर सकती हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध-लेखन के हर स्थल पर अजय, छोरोल का सहयोग मिलता रहा। उनको यहाँ आभार व्यक्त कर मैं उनकी दोस्ती के स्नेहपूर्ण संबंध को औपचारिकता नहीं बनानी चाहती।

विजेयता दीदी, मुनिंद्र, एनिदृशा, ताशी, प्रांजल, रमेश कुमारी, मोंटी, गिनीमा, मीनाश्री, सुमेध, पूजा, मनोरमा दीदी, कौशिक, सीमा, अपराजिता दीदी का सहयोग भी किसी-न-किसी रूप में मुझे लगातार मिलता रहा। जे.एन.यू. आने के शुरुआती समय में सबसे पहले व्योमकेश सर ने मुझे हिंदी अनुवाद विभाग से परिचय कराया, इसके लिए मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में प्रयुक्त अध्ययन सामग्री के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, साहित्य अकादेमी, दिल्ली विश्वविद्यालय, नेहरू मेमोरियल लाइब्रेरी के कर्मचारियों से मिले सहयोग और शोध में प्रयुक्त पुस्तकों के लेखकों और संपादकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

गुरुजनों से दिशा निर्देश लेकर, स्वजनों के प्रोत्साहन से ओत-प्रोत होकर मित्रों के निष्प्रयोजन स्नेह एवं सहयोग से अनुप्रणित होकर तथा अपने परिश्रम में प्राण डालकर जो आकार बना, वह इस रूप में प्रस्तुत है।

लखिमा देउरी

अध्याय द्वितीय

(मूल एवं लक्ष्य) का भाषिक विश्लेषण

2.1 नेपाली भाषा : उद्‌भव, विकास और उसकी रचनात्मक प्रकृति (वाचिक एवं मुद्रित)

2.2 नेपाली और हिन्दी : परस्पर संबंध (सांस्कृतिक, भाषिक, भौगोलिक, एवं रचनात्मक)

2.3 नेपाली भाषा की भाषिक संरचना . प्रदत्त पाठ के आलोक में

2.4 भाषागत विशिष्टताओं का अध्ययन

2.1 नेपाली भाषा : उद्‌भव, विकास और उसकी रचनात्मक प्रकृति (वाचिक एवं मुद्रित)

भारोपीय परिवार की दो प्रमुख शाखाएँ हैं . सत्‌म, केन्तुम। भारोपीय परिवार के सत्‌म शाखा से विकसित भाषाओं के मध्य नेपाली भाषा की भी उत्पत्ति हुई। नेपाली की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों का समुदाय मुख्यतः दो दलों में बँटा है . एक दल 'शौरसेनी अपभ्रंश' को मानता है, दूसरा 'खस अपभ्रंश'। 'शौरसेनी अपभ्रंश' से नेपाली भाषा उद्‌भूत माननेवालों में आर.एल. टर्नर, भोलानाथ तिवारी, बालकृष्ण पोखरेल आदि हैं। दूसरी ओर 'खस' अपभ्रंश से उत्पत्ति मानने वालों में सुनीति कुमार चटर्जी, जार्ज ग्रियर्सन, पारसमणि प्रधान, चूड़ामणि उपाध्याय रेग्मी आदि प्रमुख हैं। ऐसा लगता है कि नेपाली भाषा की उत्पत्ति में शौरसेनी और खस दोनों का किसी-न-किसी रूप में योगदान अवश्य है।

विक्रम की तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में नेपाल के कर्णाली क्षेत्र में खसों ने अपना छोटा-सा प्रदेश स्थापित कर लिया था। वहाँ खस भाषा का वर्चस्व था। इसी कारण 'खस' प्राकृत के क्षेत्र नेपाल, गढ़वाल, कुमाऊँ और इसके आस-पास के क्षेत्र में नेपाली बोली जाती है है। नेपाली भाषा कुमाऊँनी तथा गढ़वाली से बहुत मिलती-जुलती है। उदाहरण -

नेपाली	कुमाऊँनी / गढ़वाली	खस अपभ्रंश
औसी (अमावस्या)	टमुसी	अमुसी
असजिलो (कठिन)	टसजिल	असज्जिलो
खकार्नु (खखारना)	खखराण	खखराण
चाहनु (चाहना)	चहाण	चाहाण

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार खस प्राकृत का क्षेत्र पहाड़ खण्ड था। ग्रियर्सन ने भी नेपाली भाषा को पूर्वी पहाड़ी भाषा माना है। इन्होंने पहाड़ी भाषा को तीन भागों में बाँटा है -

1) पूर्वी पहाड़ी भाषा . नेपाल

2) केन्द्रीय या मध्य पहाड़ी भाषा . गढ़वाल, कुमाऊँ।

3) पश्चिमी पहाड़ी भाषा . कश्मीर, चम्बा, मण्डी, कुल्लू, शिमला।[2]

आधुनिक आर्य भाषा सिन्धी, लहँदा, पंजाबी, पहाड़ी, सिंहली, गुजराती, हिंदी, बिहारी, बंगाली, असमिया, उड़िया, मराठी आदि वास्तव में अपभ्रंश से विकसित विभिन्न भाषाएँ हैं। इसी में पहाड़ी भाषा के अंतर्गत नेपाली भाषा आती है। अपने भारतीय भाषा के सर्वेक्षण के आधार पर ग्रियर्सन ने नेपाली को खसों की भाषा स्वीकार की है, जिसे 'खसकुरा' या 'खसभाषा' कहते हैं। अतः भारोपीय परिवार के अंतर्गत भाषा का मूलरूप संस्कृत होते हुए भी खस अपभ्रंश से नेपाली भाषा की उत्पत्ति हुई है, इस तथ्य को अनेक भारतीय, नेपाली तथा विदेशी विद्वानों ने माना है।

"नेपाल की अति प्राचीन जाति खस है, जो ब्राह्मणों और क्षत्रियों के मिश्रित रक्त से उत्पन्न हुई एक वर्णसंकर जाति है, जो पहले अपने को हिन्दू नहीं कहती थी।'"[3]

हिमालय के दक्षिण में बोली जाने वाली अनेक भारतीय आर्य भाषाओं में अत्याधिक समानताएँ मिलने का कारण वहाँ प्राचीन समय में पश्चिमोत्तार से खसों का स्थानांतरण होना है।

'खस कुरा', 'खसभाषा' आदि नाम से परिचित इस भाषा को फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता के संस्कृत के प्राध्यापक जे.ए. एटन ने अपनी कृति 'न्यू ग्रामर ऑफ द नेपाली लेंगवेज,[4] जो नेपाली भाषा का प्रथम व्याकरण है, में प्रथम बार 'नेपाली' शब्द का प्रयोग

---

[2] नेपाली और हिंदी का तुल्नात्मक अध्ययन, डॉ. आशा सिंह, पृ. 18

[3] नेपाल की कहानी, के.पी. श्रीवास्तव, पृ. 4

[4] सन् 1920 grammer of Nepali Language, भारतीय नेपाली साहित्य को विकासक्रम : अजीत राई, पृ. 51

किया। बाद में पृथ्वीनारायण शाह के प्रयास से नेपाल के एकीकरण के पश्चात् नेपाली भाषा को जनसमूह के सम्पर्क का माध्यम बना दिया गया।

एक अन्य ग्रंथ 'Nepal and the Gurkhas' में भी यह पुष्ट किया गया है कि 'नेपाली' का ही पूर्व नाम 'खसकुरा' है .

"The original term of Parbatiya, meaning a hill language, has long been obsolete, but controversy still exists regarding the use of other names – Khaskura, Nepali and Gurkhali. Khaskura means the language of the Khas, which is an old and derogatory name of the 'Chhetri, 'the fallen', and this word is therefore not approved of by the Nepalese authorities, at whose request the official name of the language in the Indian Army was changed from Khaskura to Nepali".(p. 50-51)[5]

हिमालय क्षेत्र के पश्चिम तथा पश्चिमी नेपाल की पुरानी जाति खसों के आधार पर नेपाली भाषा को खस भाषा कहा जाता है। 'खसकुरा' या 'खसभाषा' कहने से अभी भी लोग उसे नेपाली का ही दूसरा नाम समझते हैं। नेपाल के अधिकांश क्षेत्र में पहाड़-ही-पहाड़ हैं। अतः यहाँ के वाशिंदों को समतल में रहनेवाले लोग पहाड़ी या पहड़िया तथा इनकी भाषा को 'पहाड़ी' भाषा कहते हैं। भाषाशास्त्रियों ने भी संपूर्ण हिमाली क्षेत्र की आधुनिक आर्य भाषा को पहाड़ी वर्ग में रखा है तथा नेपाली को 'पूर्वी पहाड़ी' कहा है।

सुन्दरलाला बड़ा ने इसे 'पार्वती भाषा' कहा, जिसे 'पर्वत्या' भी कहा जाता है। श्री 5 बड़ा महाराज पृथ्वीनारायण शाह द्वारा नेपाल एकाकीकरण के बाद 'नेपाली', 'गोर्खाली' नाम से भी प्रसिद्ध हुआ।[6] भाषा के रूप में राजकीय मान्यता प्राप्त करने के बाद इनका प्यापक प्रयोग देखने में आया है। इसी सिलसिले में इसे 'गोरक्ष भाषा', 'गोरखा भाषा', 'गोर्खे भाषा', 'गुर्खाली भाषा' आदि नाम भी दिए गए हैं। प्रसंगवश नेपाली भाषा के अन्य नाम भी देखने को मिलते हैं। काठमांडौ उपत्यका के शिलालेखों

[5] Nepal and the Gurkhas, pp. 50-51.
[6] मध्यकालीन अभिलेख, मोहन प्रसाद, पृ. 1.8

में इसे 'भाषा', 'स्वदेश भाषा', 'देश भाषा', 'गिरिराज भाषा' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। शक्तिवल्लभ ने इसे 'लोकभाषा', विद्यापति ने 'राजभाषा', जयपृथ्वी बहादुर सिंह ने 'प्राकृत भाषा' की संज्ञा दी है।[7]

नेपाली भाषा का विकास

नेपाली भाषा वास्तव में नेपाल देश की भाषा है, मगर यह अब न केवल नेपाल बल्कि विश्व में जहाँ भी नेपाली जाति रहती है, वहाँ की मातृभाषा है। पहले यह केवल खसों की भाषा मानी जाती थी, परन्तु सत्य पृथ्वीनारायण शाह ने जब नेपाल का एकीकरण किया तब इस भाषा को वहाँ के जनजातियों . गुरुङ्, तामाङ्, राई, लिम्बु आदि ने भी अपनाया।

नेपाली भाषा के विकास क्रम को विद्वानों ने प्राथमिक, माध्यमिक, आधुनिक काल में सरल तरीक़े से विभाजित किया है।

प्राथमिक काल : नेपाली भाषा के प्राचीनतम् नमूने अभिलेखों में मिलते हैं। नेपाली भाषा के प्राचीन रूप का नमूना सन् 1321 के आदित्यमल्ल के ताम्रपत्र में मिलता है।

अन्वेषक मोहन खनाल ने परिश्रम और प्रयास से प्राप्त अभिलेख 'अशोक चल्ल के ताम्रपत्र वि. स. 1312 (सन् 1255) को नेपाली भाषा का प्राचीनतम् रूप ठहराया है। इस तथ्य का उल्लेख डॉ. तारानाथ शर्मा के 'नेपाली साहित्य को इतिहास' तथा डॉ. कुमार प्रधान के 'ए हिस्ट्री ऑफ नेपाली लिटरेचर' (A history of Nepali literature) में है। अतः आज तक सभी इसी को नेपाली भाषा का प्रथम अभिलेख मानते चले आ रहे हैं। इस कारण नेपाली भाषा के प्राचीन युग को चल्लयुग भी कहा जाता है। इस काल में मुख्यतः अभिलेख ही प्राप्त होते हैं। जैसे . अक्षयमल्ल (सन् 1280), आदित्यमल्ल (सन् 1321) आदि के अभिलेख।

प्रो. बालकृष्ण पोखरेल ने नेपाली भाषा के विकास क्रम को पन्द्रवीं शती के अंतर्गत रखा है। उन्होंने सन् 1393 'मोदिनीबम्ब' के ताम्रपत्र, सन् 1396 'संसारबम्ब' के

---

[7] नेपाली और हिंदी : तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. आशा सिंह, पृ. 11

ताम्रपत्र, सन् 1498 'विगोप शाही' के ताम्रपत्र के काल का उल्लेख कर पन्द्रहवीं शती के अंतिम समय को नेपाली भाषा का प्राचीन काल माना है। इस काल को प्राचीन काल भी कहा गया है क्योंकि इस काल में अभिलेखों की भरमार है।

मध्यकालीन विकास

पंद्रहवीं शती के अंत तथा सोलहवीं शती के आरंभ में मध्यकालीन भाषा का लक्षण दिखना शुरू हो गया। इस तथ्य को उजागर करने के लिए (सन् 1529) भानशाही के लालमोहर की भाषा का उदाहरण ले सकते हैं -

"भानसाइको आग्या। मनुपाध्य उपर गया भैछ, मोतिवाको चोलो, पुब्रालको घाघ्रो, काफल को माडा पाय राषि बाउलि शंकल्प गरि र आना मोतिपुरका र आना वक्शि दियौ छौ। अन्यो अन्य स्ववंश प्रवंश कैसे धर्म नघाल।" (पोखरेल, विक्रमी संवत् 2021 : 51)

उपर्युक्त उदाहरण में नेपाली के अनेक प्राचीन शब्द मिलते हैं। जैसे . 'आज्ञा' को 'अग्या', 'माया' को 'मया', 'भएछ' को 'भछै', 'पाए' को 'पाय', 'राख्नु', 'राषि', तथा 'नहाल' को 'नघाल' आदि।

सत्रहवीं शताब्दी तक आते-आते नेपाली भाषा के पाँच उपभेद हो गए . (1)जावेश्वरी (2) गोर्खाली (3) महाकाली (4) खप्तडेली (5) मालिकाली

प्रतापमल्ल के समय में 'वाणी विकास' ने 'ज्वरोत्पत्ति चिकित्सा' का अनुवाद 'ज्योतिविद' (सन् 1716) नाम से किया है। इसकी भाषा महाकाली है। सन् 1772 की 'प्रेमनिधि' की रचना 'प्रायश्चित प्रदिप' की भाषा महाकाली व खप्तडेली मिश्रित है। मध्यकालीन नेपाली भाषा के विकास में निम्नलिखित कृतियाँ आती हैं . भानुभक्त के 'हितोपदेश मित्रलाभ' (सन् 1776) का अनुवाद, रामचन्द्र उपाध्याय का 'लक्ष्मीधर्म संवाद'

(सन् 1795), शक्तिवल्लभ का 'हास्यकदम्ब' (सन् 1798), 'दशकुमार चरित' (1812), जे. ए. एटन का 'नेपाली व्याकरण' (सन् 1820) इत्यादि।[8]

आधुनिककालीन नेपाली भाषा का विकास

आमतौर पर आधुनिक नेपाली भाषा का प्रारंभ 1901 के आसपास से माना जाता है। बीसवीं शती के बाद के उत्तरोत्तर काल को आधुनिक नेपाली भाषा के विकास का काल माना जाता है। इस काल की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है 'गोरखापत्र' का प्रकाशन है।[9] इस पत्रिका के प्रकाशन के पश्चात् की उत्तरोत्तर नेपाली भाषा में सरलता, कथ्यरूप तथा स्वाभाविक मोड़ दिखाई पड़ते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में 'गोरखापत्र' और 'माधवी' जैसी पत्रिकाओं में भी मध्यकालीन नेपाली शब्द मिलते हैं जैसे. 'गया', आया, थिया इत्यादि। सन् 1913 में 'गोर्खा भाषा प्रचारिणी समिति' की स्थापना के बाद मध्यकालीन शैली को त्यागकर तत्कालीन कथ्य शैली को स्थान दिया गया। इसी को आधुनिक आदर्श नेपाली भाषा के नाम से जाना गया है। इस तरह बीसवीं शताब्दी में नेपाली भाषा ने अपना स्थायित्व कायम किया। 'गोरखापत्र', 'माधवी' के बाद 'चन्द्र' (सन् 1914), 'शारदा' (सन् 1934) आदि के प्रकाशन के बाद नेपाली भाषा ने अपना मानक रूप बनाना शुरू कर दिया था।

उपर्युक्त तथ्य तो केवल नेपाल राज्य के भीतर नेपाली भाषा के विकास के बारे में संक्षिप्त परिचय है। भारत में भी नेपाली लोग काफ़ी संख्या में बसे हैं, जो कि भारतीय नागरिक हैं। इसी कारण नेपाली भाषा का भारत में भी व्यापक मात्रा में विकास हुआ है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही भारत में भी नेपाली भाषा ने अपना नया रूप ग्रहण कर लिया था। पादरी गंगाप्रसाद प्रधान द्वारा संपादित 'गोर्खे खबर कागत' दैनिक पत्र (सन् 1902-1932) नेपाली भाषा के विकास की पृष्ठभूमि में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

[8] नेपाली और हिंदी : तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. आशा सिंह, पृ. 24
[9] नेपाली और हिंदी : तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. आशा सिंह, पृ. 25

है। आधुनिक नेपाली भाषा के विकास के संदर्भ में अनेक पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है, जो भारत से प्रकाशित होती हैं।

. पारसमणि प्रधान 'चंद्रिका' (सन् 1917), दार्जिलिंङ्

. ठाकुर चन्द्रसिंह 'गोर्खा संसार' (सन् 1926), 'तरुण गोर्खा' (सन् 1927), 'स्वतंत्र नेपाली' (सन् 1954)

. 'गोर्खाली' (सन् 1914) बनारस

. 'गोर्खामित्र' (सन् 1924), 'गोर्खा साथी'

. 'नेपाली साहित्य सम्मेलन पत्रिका' (सन् 1932)

. 'उद्योग' (सन् 1935)

. 'गोर्खा ऐनक' (सन् 1936)

. 'खोजी' (सन् 1940), दार्जीलिंङ्

. 'गोर्खा दुख निवारक समिति'

. 'गोर्खा साथी', शिलाङ् (मेघालय)

भारत के परिप्रेक्ष्य में नेपाली भाषा के विकास के संदर्भ में शिक्षा के क्षेत्र द्वारा भी कई उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की गई है। सन् 1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने नेपाली भाषा को माध्यमिक स्तर आइ.ए. तथा बी.ए. में नेपाली भाषा और साहित्य को पढ़ने का अनुमोदन किया था। यह बात भारत में बसने वाले नेपालियों के लिए गर्व की बात थी। इसी कारण पाठ्यपुस्तक, व्याकरण, शब्दकोश आदि के क्षेत्र में नेपाली भाषा विकसित होती गई। सन् 1961 में नेपाली भाषा को बंगाल सरकार के कानून के अनुसार राज्य स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई। पश्चिम बंगाल राज्य के अन्तर्गत 'दार्जीलिंङ्' ज़िला के विशेषकर करसीओंङ्, कालिम्पोंग में सरकारी कार्यालयों में कामकाज नेपाली भाषा में करने की स्वीकृति दी गई। इसके बाद नेपाली भाषा न केवल राज्य में बल्कि राष्ट्र स्तर पर आगे बढ़ने लगी। सन् 1974 में 'साहित्य अकादेमी' नई दिल्ली ने भी

इसे मान्यता प्रदान की। उसके बाद लगातार भारतीय नेपाली साहित्यकारों ने सम्मान तथा पुरस्कार प्राप्त किए। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि देर से ही सही पर नेपाली भाषा को 20 अगस्त 1992 को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया।

सन् 1977 में उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर में नेपाली भाषा और साहित्य पढ़ाया जाने लगा। शोध के स्तर पर भी विद्यार्थी इस भाषा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। असम के 'गौहाटी विश्वविद्यालय' में भी नेपाली भाषा के पठन-पाठन की व्यवस्था है। 'पट्टि सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लेंगवेजज़' मैसूर भी नेपाली भाषा के विकास हेतु यथासाध्य कार्य हो रहे हैं। भारत के महत्त्वपूर्ण साहित्यिक सम्मान जैसे भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार बिड़ला फाउंडेशन, सरस्वती सम्मान (trust) आदि ने नेपाली भाषा को सम्मानपूर्ण स्थान सुरक्षित कराया है।

नेपाली भाषा न केवल नेपाल में बल्कि भारत के कई जगहों में बोली और समझी जाती है जैसे . दार्जीलिंङ्, सिक्किम, देहरादून, असम। नेपाली भाषा दार्जीलिंङ् और सिक्किम में इतनी भारी संख्या में बोली जाती है कि जिसके चलते कई सालों से वहाँ आंदोलन चल रहा है, ताकि इन्हें अलग से 'गोर्खालैंड' (Gorkhaland) दे दिया जाए। भारत सरकार से इनकी यही माँग है। भारत के अलावा नेपाली भाषा भूटान में भी बोली जाती है। नेपाली भाषा का विकास भौगोलिक सीमा को लाँघ चुका है।

नेपाली भाषा की रचनात्मक प्रकृति

विभिन्न राजाओं और सामंतों के काल में भी नेपाली भाषा के अभिलेख तथा ताम्रपत्र और अन्य सामग्री उपलब्ध थे, जिससे यह ज्ञात होता है कि नेपाल में साहित्य का प्रारंभ बहुत पहले से हो चुका था। अनेक नेपाली विद्वानों ने विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी से पंद्रहवीं शताब्दी तक के समय को नेपाली भाषा का प्राचीन काल माना है। महाराज 'पृथ्वीनारायण शाह' के समय से नेपाली साहित्य का लिखित साहित्य मिलता है। नेपाली साहित्य के लिखित रूप के पद्य में प्रथम प्रमाण है स्वानन्द की 'पृथ्वीस्तुति'

और गद्य के क्षेत्र में पृथ्वीनारायण शाह की उपदेशपरक कृति 'दिव्योपदेश'। इसमें उन्होंने एक जगह कहा है -

"मेरा साना दुख ले आर्ज्या को मुलुक सबै जात को फूलबारी हो सबैलाई चेतना भया यो फूलबारी को छेविमहा चारैजात छत्तीस वर्ण, यो असल हिन्दुस्थान हो। आफना कुलधर्म न छोड़न्।"[10]

अर्थात् मैंने बहुत कष्ट से इस मुल्क को प्राप्त किया है। यह मुल्क हर जाति की फुलवारी है। सभी को इससे चेतना मिली है। इस फुलबारी के भीतर चार जाति छत्तीस वर्ण रहते हैं, यही असल हिन्दुओं का स्थान है। अपने कुल धर्म को कभी मत छोड़ो।

नेपाली भाषा में साहित्य लेखन आरंभ होने से पूर्व, लोकगीत व लोककथा के रूप में साहित्य थे, किन्तु ये केवल मौखिक थे। हर देश, हर जाति की अपनी लोक संस्कृति होती है। नेपाली के लोकगीतों में प्रेमगीत, वीरगीत, बारहमासा गीत, प्रकृति गीत, धान रोपनगीत आदि हैं। 'लाहुरे गीत' का उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है -

"घरबारी क्यै छैन घर मा खाइहाल्यो साहु ले खोसेर

मर्नु बरू धावै मा पसेर भागी मरे गिद्ध ले खाने

लड़ी मरे जीउंदै स्वर्ग मा मर्नु निको धावै मा पसेर

लाहुरे भै खुकुरी मिरेर केको डर बैरीलाई देखेर

मर्नु बरू धावै मा पसेर।"[11]

अर्थात् घरबार मेरे पास कुछ भी नहीं है। जो था वह सब महाजन, साहूकारों ने मिलकर लूट लिया। इससे तो लड़ाई में पड़कर मरना ही अच्छा है। भागकर रास्ते में मर जाने से गिद्ध खा लेगा, लड़ते-लड़ते मरूँ, तो जीवित ही स्वर्ग पहुँच जाऊँगा। युद्ध

---

[10] नेपाली साहित्य . कमला सांकृत्यायन, पृ. 85

[11] नेपाली साहित्य . कमला सांकृत्यायन, पृ. 271

में लड़ना ही मेरे लिए अच्छा है। सिपाही बनकर खुकुरी कमर में बाँधकर लड़ाई में जाए, तो शत्रु को देखकर क्या डरना। युद्ध में लड़ते-लड़ते मरना ही अच्छा है।

इस लोकगीत का नाम लाहुरे गीत इसलिए है क्योंकि यह मुख्य रूप से नेपाली भारतीय सिपाहियों के लिए गाया जाता है। 'लाहुरे' का अर्थ ही है 'सिपाही'। नेपाली साहित्य में चिकित्सा संबंधी कुछ कृतियाँ भी लिखी गई हैं। जैसे. वाणोविलास पाण्डे 'ज्योतिर्विद' की 'ज्वरोत्पत्ति', 'तीन जीर्ण मंजरी', 'बाजपरिक्षा' इत्यादि।

नरहरिनाथ के प्रयासों से ही प्राचीन अभिलेख तथा ताम्रपत्र हमारे सामने आए हैं। इन्होंने 'इतिहास प्रकाश' नाम से इन्हें प्रकाशित कराया है। नेपाली भाषा में पद्य से पूर्व गद्य की शुरूवात हुई थी। गद्य का आरंभ शिलालेख तथा ताम्रपत्रों पर हुआ। दुल्लु के राजा पुण्यमल्ल का 'गोलहण' लेखक कृत ताम्रपत्र सबसे प्रथम माना जाता है। इसका रचना काल संवत् 1359 है। इसमें संस्कृत मिश्रित प्राचीन नेपाली भाषा दिखती है। उदाहरण के रूप में कुछ पंक्तियाँ -

"...पुण्यमल्ल की शाखा यो भाषा प्रतिपाल। जयाकर पंडितको पूत् नाति भाई भतिजा चेलिका चेला आदि भुंचन्। बस्यो रस्यो देखि कोहि उपटा पलटि कर्न न पावंन्। आपनँ उचितै करि जयाकर पंडितै ढुँयन्। अत्र साक्षिणौ सूर्याचन्द्रमसौ, बुद्धधर्मसंहाः, लंवपादानां चत्वारि स्थानानि, सर्वेहिताः, सर्वे भांडागारिणः ...लिखितं श्रीगोल्हणेन। शिवमस्तु। श्रीपुण्यमल्ल।"[12]

अर्थात् . पुण्यमल्ल की संतान इस भाषा का पालन करें। जयाकर पंडित के बेटे, नाती, पाते, भाई, भतीजे, बेटी का बेटा इसका भोग करें। रहने की बस्ती को बसा हुआ देखकर कोई भी गलत काम न कर पावें। अपना ही समझकर जयाकर पंडित इसका उपभोग करें। साक्षियों में . सूर्य-चन्द्र, बुद्ध-धर्म-संघ, चारों तीर्थों (बोधगया, सारनाथ, लुम्बिनी, कपिलवस्तु) के लामागण, सभी हित गोत्र के लोग, सभी भण्डारी (अधिकारी) लोग। लेखक .श्रीगोलहण। शिवजी रक्षा करें। श्रीपुण्यमल्ल।

---

[12] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 86

निम्नलिखित कुछ अन्य राजाओं के ताम्रपत्र। यद्यपि ये साहित्यिक कृति के अन्तर्गत नहीं आते, फिर भी नेपाली गद्य साहित्य की गतिविधि की ओर संकेत करते हैं।

. अभयमल्लराइ का ताम्रपत्र (संवत् 1433)

. मेदिनीवर्मा राउला का ताम्रपत्र (संवत् 1450)

. संसारवर्मा राउला का ताम्रपत्र (संवत् 1453)

. कल्याण नरेश बलिराज का ताम्रपत्र (संवत् 1455)

. राजा उदयवर्मा और राजा आजीतवर्मा का ताम्रपत्र (संवत् 1484)

. कार्वरिक विवोष शाही का ताम्रपत्र (संवत् 1555)

. राजा सुरतीशाही ठाकुर का ताम्रपत्र (संवत् 1638)

. गणेश जोशी, धशु जोशी और फुगु जोशी का ताम्रपत्र (संवत् 1647)

. कल्याणराज संग्रामशाही का ताम्रपत्र (संवत् 1661)[13]

अनेक शिलालेख और लालमोहर भी लिखे गए हैं। लालमोहर यानि श्री 5 बड़ा महाराज का मुहर। नेपाल के महाराजाधिराज की मुहर का ठप्पा लगा दस्तावेज। उनमें से कुछ के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं -

. राजा भानशाही का लालमोहर (संवत् 1586)

. अजन्या बूढ़ां का पुरसो कुथरो का लालमोहर (संवत् 1648)

. राजा जयनृसिंहमल्ल का शिलालेख (संवत् 1682)

. राजा जयप्रतापमल्ल देव की रानी पोखरी का शिलालेख (संवत्1727)

. राघव जोशी के अनन्तलिंगेश्वर का शिलालेख (संवत् 1769)

---

[13] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 88

. कल्याणराजा सुदर्शनशाह का लालमोहर (संवत् 1814)[14]

नेपाली भाषा में नाटक, कहानी की शुरूआत सर्वप्रथम अनुवाद के माध्यम से हुई। पहले तो दरबार में संस्कृत में नाटक लिखे गए, जैसे 'हरगौरी विवाह'। बाद में संस्कृत नाटकों का ही नेपाली भाषा में अनुवाद होने लगा। उदाहरण - शक्तिवल्लभ अर्चाल ने अपने ही लिखे हुए संस्कृत नाटक संवत् 1855 (1798 ई.) 'हास्यकदम्ब' का अनुवाद किया। आरंभ के नाटकों में आंशिक उर्दू, हिंदी, नाटकों का प्रभाव रहा है। केदार शमशेर ने 'वीर सुन्दर' नामक नाटक लिखा, जिसमें गद्य भाग हिंदी और पद्य भाग नेपाली भाषा में थे। मोतीराम भट्ट ने 'कालिदास' कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का अनुवाद किया।

नेपाली कहानियों की शुरूआत भी संस्कृत कथाओं के अनुवाद से हुई है। जैसे . क्षेमेन्द्र की 'वृहद् कथामंजरी', सोमदेव कृत 'कथासरित्सागर', 'पंचतंत्र', 'हितोपदेश', 'दशकुमारचरित' इत्यादि। धीरे-धीरे मौलिक नाटक और कहानियाँ भी लिखे गए। बालकृष्ण सम कृत 'मुकुन्द इन्दिरा' नेपाली भाषा का प्रथम मौलिक नाटक है।

नेपाली भाषा तथा साहित्य में कहानी और नाटक आदि का पूर्ण उदय सोलहवीं सदी में हुआ। इसी कारण इनमें यथार्थ चित्रण, प्रगतिशील विचार, शिल्प, शैली की नवीनता आदि मिलती है। नाटक में 'गोपालप्रसाद रिमाल' कृत 'मसान' तथा कहानी में 'मल्ल गोठाले' कृत 'बिचारी ऊ' को उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं।

नेपाली साहित्य में अनेक प्रकार की कविताएँ लिखी गई हैं। जैसे .

'वीर रस' प्रधान काव्य। इसमें दरबारी कवि मुख्यतः अपने राजा का गुणगान करते हैं। ये कविताएँ वीर रस से ओत-प्रोत हैं। उदाहरण .

रघुनाथ भाट कृत 'आशिष' की कुछ पंक्तियाँ -

"काली, गोरष, भैरवी, महिषमर्दिनी वोई।

---

[14] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 88-89

यो चारै की आशिष नित्य शुभ तोइ।।"[15]

अर्थात् देवी काली, गोरखनाथ, भैरवी और महिषमर्दिनी, इन चारों का अशीष तुम्हें नित्य मिलता रहे।

. युदुनाथ पोखरेल कृत 'स्तुतिपद्य'

. सुन्दरानन्द बाँड़ा कृत 'त्तिरत्नसौंदर्य गाथा'

सन्त काव्य . नेपाली साहित्य में सन्त काव्य भी काफ़ी लिखा गया है। अधिकतर मुक्तक छंद में रचे गए हैं तथा सभी लोकलय में बद्ध हैं। स्वामी शशिधर रेसुंगावले कृत 'सच्चिदानन्द लहरी', संत ज्ञानदिलदास कृत 'उदयलहरी', 'झयाउरे भजन', 'टुंगना भजन' इत्यादि।

कृष्ण काव्य . कृष्ण काव्य धारा में मुख्यतः कृष्णस्तुति होती है।

उदाहरण . इन्दिरस रचित 'गोपिकास्तुति' (वि.सं. 1884) का एक पद इस प्रकार हैं -

"ब्रज कि दुःख हरी वीर नारिका

मन खंगालिन्या हामि गोपिका

गर भजन तिमी दासी भन्दछन्

कमल झै असल हेर्न द्यौ मन।।"[16]

अर्थात् कृष्ण ने ब्रज का दुख हर लिया है। वीर नारी की भाँति हमने अपना मन साफ कर लिया है। दासी कहती है कृष्ण का भजन करो, किन्तु हम तुम्हारे कमल समान सुन्दर मन को देखना चाहती हैं।

'विद्यारण्यकेशरी' कृत 'युलगीत' 'वंशी चरित्र' तथा वसंत शर्मा कृत 'कृष्णचरित्र' आदि कृष्ण काव्य हैं।

राम काव्य . इसी प्रकार रामभक्ति काव्य भी लिखे गए हैं।

---

[15] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 100
[16] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 130

उदाहरण . प्रेम प्रसाद भट्टराई कृत 'विरक्तपुष्पांजलि' (1928 ई.)

श्रृंगारिक काव्य . श्रृंगारिक काव्य लिखने का श्रेय सर्वप्रथम मोतीराम भट्ट को जाता है। 'संगीत-चंद्रोदय' तथा 'पिकदूत'। बाद में श्रृंगारिक काव्य अनेक कवियों ने लिखा। जैसे . राजीवलोचन जोशी (केदारकल्प), शिखरनाथ सुवेदी (श्रृंगारदर्पण), गोपीनाथ लोहनी (नलदमयन्ती), कृष्णप्रसाद रेग्मी (पट्ठा-पट्ठी को प्रीति, ऋतुबन्धु, बारहमासा, विरह लहरी) इत्यादि।

. रहस्यवादी कविता भी लिखी गई। अवानी भिक्षु कृत 'प्रकाश'।

. नेपाली भाषा के साहित्य में शोक काव्य भी लिखे गए। 'तर्पण' (1918 ई.)

नारी प्रधान काव्य . नारी प्रधान काव्य बहुत सारे लिखे गए। उनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया गया है -

कवि गोपाल प्रसाद रिसाल (1918 ई.) कृत 'नारी', 'आमा को सपना' (1963 ई.) 'कवि माधव प्रसाद घिमिरे' रचित 'राजेश्वरी' तथा 'पापिनी आमा' आदि।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि नेपाली भाषा में हर प्रकार की रचनाएँ लिखी गई हैं। चाहे काव्य हो, नाटक हो या कहानी। और साथ में यह भी देखा गया है कि समय के साथ नेपाली भाषा में बदलाव आता गया है।

2.2 नेपाली और हिन्दी : परस्पर संबंध (सांस्कृतिक, भाषिक, भौगोलिक एवं रचनात्मक)

नेपाली और हिंदी : परस्पर संबंध सांस्कृतिक संबंध

दक्षिण एशिया के हर देश की अपनी-अपनी एक विशिष्टता है, पर कहीं-न-कहीं सभी की संस्कृति एवं रहन-सहन में समानता है। नेपाल की भी अपनी एक अनोखी भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत है और अब भी नेपाल, भारतीय उपमहाद्वीप के विस्तृत सांस्कृतिक, इतिहास और परम्परा का अभिन्न अंग है। ठीक ही कहा जाता है कि संस्कृति की कोई सीमा नहीं होती।

दक्षिण एशिया का हिस्सा होने के कारण भी नेपाल और भारत में एक विशेष आंतरिक संबंध है। सांस्कृतिक परम्पराओं में भी पर्याप्त समानता है। इन दोनों में बहुत ही क़रीबी संबंध है। सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक परम्परा के कारण भी वे इतनी मज़बूती से जुड़े हैं कि इन्हें कोई अलग करने की सोच भी नहीं सकता। दोनों देश ने एक दूसरे के धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने में महान योगदान दिया है।

नेपाली और हिंदी के सांस्कृतिक संबंध के कई पहलू हैं। इनमें 'धर्म' सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है, जो दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंध को बनाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। भगवान बुद्ध, नेपाल (लुम्बिनी) में जन्में और बोधगया (बिहार) में उन्होंने प्रबुद्ध (enlightenment) प्राप्त किया। बोधगया का 'बोधिवृक्ष' (Bodhi tree) दोनों देशों के बीच धार्मिक पुल के समान है। विपुल संख्या में हर वर्ष लोग एक-दूसरे के यहाँ तीर्थयात्रा के लिए जाते हैं। नेपाल के हज़ारों नागरिक प्रत्येक वर्ष तीर्थ स्थलों के दर्शन के लिए भारत आते हैं। इनमें विशेष तौर पर 'चारधाम यात्रा' यानी भारत में स्थित चार तीर्थ स्थलों - उत्तराखण्ड स्थित बद्रीनाथ/केदारनाथ, उड़ीसा स्थित जगन्नाथ, तमिलनाडु स्थित रामेश्वरम और गुजरात स्थित द्वारका की यात्रा शामिल है।

इन तीर्थों की यात्रा की इच्छा प्रायः प्रत्येक हिन्दू के मन में होती है। भारत में और भी स्थान हैं, जिन्हें नेपाली लोग पवित्र मानते हैं। उनमें ऋषिकेश, हरिद्वार, वाराणसी, गया, वैष्णोदेवी आदि आते हैं। उसी प्रकार नेपाल में भी कई धार्मिक स्थल हैं। जो भारतीयों के लिए पवित्र तथा महत्त्वपूर्ण स्थल है। जैसे . 'पशुपति' (काठमांडौ), 'लुम्बिनी' (बुद्ध का जन्म स्थल), 'रामजानकी मंदिर' जनकपुर (जनक और सीता का जन्मस्थल) आदि। दोनों देशों में धार्मिक विश्वास एवं दर्शन भी समान है तथा दोनों ही देशों के लोग एक से भगवान और अवतार जैसे विष्णु, शिव, ब्रह्म, इन्द्र आदि को पूजते हैं। इनके सांस्कृतिक संबंध बहुत ही घनिष्ठ और अविभाज्य है।

उदाहरण . भारत में लक्ष्मी माता की पूजा की जाती है और लड़की तथा गाय दोनों को 'लक्ष्मी माता' का ही रूप माना जाता है। वैसे ही नेपाल में भी लक्ष्मी की पूजा होती है। 'भइली' नाम से गाया जाने वाला गीत मुख्यतः लक्ष्मी पूजा तथा नारी को लक्ष्मी के रूप में दर्शाता है। लड़कियों की टोली यह गीत गाते हुए हर घर जाकर आशीष देती है। यहाँ 'भइलीनी', यानी 'लड़कियों की टोली' माता लक्ष्मी का प्रतीक है।

"भइलीनी आयो आँगन

बरारी कुरारी राखन

आउसी को दिना गाय तिहारो भइलो।"

अर्थात् भइलीनी घर के आँगन में आ पहुँची है। घर को साफ़-सुथरा, स्वच्छ रखो। अमावस के दिन 'माता गाय' की पूजा का त्योहार मनाया जाता है।

भारत और नेपाल दोनों ही जगह पर्व, त्योहार समान रूप से मनाया जाता है। जैसे . दिवाली, पूर्णिमा, दशहरा, जन्माष्टमी आदि। दोनों राष्ट्र की हिन्दू विवाहिता औरतें अपनी माँग में सिंदूर लगाती हैं। भारत में जैसे विवाहिता औरत 'मंगलसूत्र'

पहनती हैं, वैसे ही नेपाली औरत 'पोते'[17] पहनती हैं। नेपाल की जनजातियाँ हरे रंग की 'पोते' पहनती हैं, बाक़ी सभी लाल रंग की।

एक अन्य उदाहरण है, नेपाल के मगर और गुरूंग जनजातियों में हिन्दू प्रथा के अनुसार ही विवाह-संस्कार का संपन्न होना है। भारत में जिस प्रकार विवाह में सात फेरे लिए जाते हैं, वैसे ही नेपाल में भी, जिसे 'फेरा' (सप्तपदी) कहते हैं और विवाह के पश्चात् वर तथा वधू का वस्त्र गाँठ देकर बाँधा जाता है, इसे नेपाली में 'अंचल गाँठ' कहा जाता है। इसमें विवाह की बातचीत वर-पक्ष की ओर से चलाई जाती है। वर किसी शुभ दिन आकर वधू का मूल्य चुकाता है अर्थात् वर को दहेज देना पड़ता है, जिसे 'सियामबुदी' कहते हैं। इसी प्रकार की प्रथा भारत के पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश की 'गालो', 'आदी', 'निशी' आदि जनजातियों में है। इसमें लड़कों को वधू के घर से आई माँग के मुताबिक भैंसें तथा उनके पारंपरिक बहुमूल्य आभूषण देने पड़ते हैं।

नेपाल की एक अन्य प्रथा जिसके अनुसार जब लड़कियों का यौवनारंभ होता है, तब उनकी संस्कृति के अनुसार लड़की की शादी एक सुपारी के साथ कर दी जाती है। इस प्रकार की प्रथा भारत के असमिया समाज में भी है। वहाँ लड़कियों का जब यौवनारंभ होता है, तब केले के पेड़ के साथ उनका विवाह कर दिया जाता है। दोनों ही समाजों में बाद में लड़की का विवाह सामान्य तरीक़े के साथ लड़के से ही होता है।

नेपाल और भारत में सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराएँ तथा आस्थाएँ भी समान हैं। उदाहरण के लिए 'आतिथ्य-सत्कार' की भावना। दोनों ही राज्यों में अतिथि को भगवान का रूप माना जाता है। 'अतिथि देवो भवः' का जप आज भी जपा जाता है। उनकी सेवा तन-मन-धन से की जाती है। दोनों देश में लोग गुरु तथा ईश्वर में भेद नहीं मानते।

नेपाल में जो गुरु का तंत्र नहीं लेता, उसे पहाड़ी 'निगुड़ा' कहते हैं। उनका विश्वास है कि 'निगुड़ा' चाहे जितना विद्वान और चित्तवान क्यों न हो, वह गुरु से मंत्र

---

[17] पोते' . यह छोटे.छोटे लाल और हरि मोतियों से बनाया जाता है। और बीच में सोना रहता है।

यदि कान में नहीं फुँवाएगा, तो अंत में वह नरक ही जाएगा। कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि पंचतत्त्व को प्राप्त निगुड़ों को भी श्मशान घाट पर चिता से उतारकर गुरु से मंत्र दिलवाया जाता है।

दोनों देश में पहनावे में भी काफ़ी समानताएँ हैं। जैसे - पुरुष (धोती, कुर्त्ता-पजामा, आदि) , महिलाएँ (साड़ी तथा रंगबिरंगी लुंगी)। वैसे ही भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों की महिलाएँ पहनती हैं। केवल नाम अलग है। उन्हें इगु (असम), मेखला (असम, नागालैंड), गाले (अरुणाचल प्रदेश) आदि कहा जाता है।

नेपाल और भारत के बीच कला, संस्कृति, संगीत, साहित्य, खेल आदि के आयोजन के कारण सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता रहा है। इस प्रकार के आयोजन न केवल सरकारी संस्था बल्कि यह अब और लोक स्तर का हो चला है। हिंदी सिनेमा तथा हिंदी संगीत नेपाल में बहुत लोकप्रिय है। ठीक उसी प्रकार नेपाली संगीत और सिनेमा भारत में, विशेष रूप से नेपाली मूल के लोग जहाँ बसे हैं। मसलन 'उत्तर' में देहरादून, हिमाचल आदि तथा उत्तर-पूर्व में असम, मेघालय, नागालैंड, मिज़ोरम, अरुणाचल में लोकप्रिय है। अनेक हिन्दी फ़िल्में नेपाल में बनाई गई हैं। संगीत के क्षेत्र में भी अनेक नेपाली संगीतकार हिंदी सिनेमा जगत (बॉलीवुड) में हैं। भारत के भी अनेक संगीतकार नेपाली गाने गाते हैं। सबसे लोकप्रिय रहे हैं . 'आशा भोंसले' तथा 'डेनी डेनज़ोङपा',। उदाहरण के लिए एक गीत की पंक्तियाँ -

"आगे आगे तोपाई को गोला, पछि पछि मशिनगन ब र र

सिगरेट न देउ म बीड़ी खानेलाई, माया न देउ म हीड़ी जाने लाई...।"

दोनों देशों की सामाजिक कुरीतियाँ भी समान हैं। राणाशासकों ने नेपाल में गाँधी जी के खादी प्रचार योजना की प्रशंसा की और वहाँ भी खादी, चर्खा आदि का प्रचलन है। मगर 'अछूतोद्धार' के कारण बापू को वे हिंदू धर्म के कट्टर शत्रु के रूप में प्रचार करते थे। दोनों ही देश में 'अछूत' या 'दलितों' की समस्या आज भी है। नेपाल में भारत की ही भाँति उच्च वर्ण का व्यक्ति दलित के हाथ से यदि पानी पी लेता है,

तो उस पर 'पानी को मुद्दा' कहलाने वाला मुक़दमा न्यायालय में चलता है। वह 'अछूतोद्धारक' कहलाने के बजाय 'अधार्मिक' कहलाता है। जिस प्रकार भारत में दलितों का कार्यानुसार नाम रखा है, वैसे ही नेपाल में भी। जैसे- 'चयामे' (भंगी), 'मुमाले' (कुम्हार), दमाई (नगाड़ा बजाने वाला) इत्यादि। यह समस्या दोनों ही देशों के लिए अभिशाप है। अब आधुनिक शिक्षा के चलते इसका बंधन काफ़ी ढीला होता जा रहा है और सुशिक्षित समाज इसे कलंक समझकर समाप्त कर रहा है।

नेपाल की विविध सांस्कृतिक विरासत - शास्त्रीय और लोक नृत्य, संगीत, नाट्यशाला, ललितकला सभी भारत के कोने-कोने में पहुँच रही है। यह नेपाल से अच्छे संबंध बनाने में योगदान भी देता है तथा एक-दूसरे की परंपराओं को समझने का और भी अच्छा मौका देता है। कला और संस्कृति का हर पहलू जीवन जीने की प्रेरणा देता है, जो शिल्पकला, चित्रकला, मूर्तिकला, प्रदर्शन कला (नृत्य, संगीत, अभिनय) द्वारा अभिव्यक्त होता है। दोनों देशों की धार्मिक परम्पराओं तथा पौराणिक कथाओं से इन देशों में कला की हर शैली पर भारी प्रभाव पड़ा। साथ ही, इनके धार्मिक मानदंडों और मूल्यों को आकार देने में सहायक साबित हुई है।

नेपाली और हिन्दी : परस्पर भाषिक संबंध

नेपाली और हिंदी के आंतरिक संबंध में 'भाषा' एक महत्त्वपूर्ण घटक है। दोनों ही भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। नेपाली और हिंदी यद्यपि दो पृथक-पृथक भाषाएँ हैं परन्तु व्याकरणिक दृष्टि से दोनों में आधारभूत समानताएँ हैं। ये भाषाएँ संसार के सबसे व्यापक एवं महत्त्वपूर्ण भारोपीय भाषा परिवार की भाषाएँ हैं। व्याकरणिक दृष्टि से देखें तो अनेक असमानताओं के बावजूद इनमें समानताएँ भी हैं। जैसे -

संयुक्त स्वरों की दृष्टि से देखें तो नेपाली तथा हिंदी में समानता है, क्योंकि दोनों में 'ऐ' (अ+ई) और 'औ' (आ + ऊ), इस प्रकार के संयुक्त स्वर मिलते हैं। जैसे.
ऐ . मैले, पैसा, कैलास आदि।

औ . औतार, औषधि आदि।

नेपाली तथा हिंदी में इस बात में समानता है कि दोनों के प्रायः सभी मूल स्वरों में अनुनासिक रूप भी पाए जाते हैं। अनुनासिक यानी उच्चारण करने पर बाहर निकलने वाली हवा कुछ मात्रा में नाक से भी निकलती है। उदाहरण :

नेपाली शब्द : हँस्यौलो, अँध्यारो, भइँसी आदि।

हिंदी शब्द . आँधी, भाँग, आँखें, हँस आदि।

नेपाली और हिंदी दोनों आर्य परिवार की आधुनिक आर्य भाषाएँ हैं, जिनका विकास संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश स्रोत से हुआ है, इन दोनों ही भाषाओं में अधिकांश शब्द समूह उपर्युक्त तीन स्रोतों से आए हैं, परन्तु भारत और नेपाल का संबंध सैकड़ों वर्षों से अपनी पड़ोसी देशों से भी रहा है, फलतः इनमें काफ़ी विदेशी शब्द समाहित हो गए हैं। देखा गया है कि विदेशी शब्द दोनों भाषाओं में एक ही तरीके के हैं। उपर्युक्त स्रोत को ध्यान में रखते हुए दोनों भाषाओं के शब्दों को इस प्रकार बाँटा जा सकता है.

तत्सम् शब्द . 'जल', 'वायु', 'आत्मा', 'अवधि', 'दण्डनीय', 'दृष्टव्य' आदि दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रयोग होता है।

तद्भव शब्द . नेपाली और हिंदी के तद्भव शब्दों में भी एकरूपता है जैसे- 'पानी', 'माँझ' 'आठ', 'चाँद', 'घर', 'लोहा', 'कपड़ा' आदि।

देशी शब्द . 'गड़बड़', 'झगड़ा', 'अड्डा', 'चकमक', 'फटाफट', 'खटखट' आदि।

विदेशी शब्द . इसके अंतर्गत उर्दू, अरबी-फ़ारसी' पुर्तगाली, अंग्रेज़ी आदि शब्द आते है।

उर्दू . 'बेगम', 'चेचक', 'सुराग', 'बारूद', 'तोप' आदि।

अरबी-फ़ारसी . 'सरकार', 'हवलदार', 'फ़ौज', 'चिट्ठी', 'पता', आदि।

अंग्रेज़ी . सबसे अधिक मात्रा में विदेशी भाषाओं में से अंग्रेज़ी के ही शब्द मिलेंगे। कारण यह भी है कि सोलहवीं सदी के अंतिम और उन्नीसवीं सदी के आरंभ में शिक्षा, व्यापार आदि के कारण संपर्क शुरु हुआ और धीरे-धीरे अनेकानेक शब्द हिंदी में जुड़ते गए तथा उससे प्रभावित नेपाली आदि में आए। भोलानाथ तिवारी के अनुसार हिंदी में लगभग तीन हज़ार अंग्रेज़ी शब्द हैं जो बढ़ती ही जा रही है। अंग्रेज़ी के कुछ शब्द जो नपाली और हिंदी में समान हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं. पंचर, टिन, कैमरा, मोटर, टैक्सी, बस, स्कूल, मलेरिया आदि।

स्पेनी शब्द . सिगार, सिगरेट, आदि।

नेपाली और हिंदी में ऐसे अनेक शब्द हैं, जो एक-दूसरे की भाषा में प्रयोग होते हैं। नेपाली के कुछ शब्द हिंदी के आम बोलचाल में प्रयोग होते हैं। जैसे . कान्छा, कान्छी, बहादुर, खुकुरी, गोर्खा आदि। इसी प्रकार हिंदी के कुछ शब्द नेपाली भाषा में बोले जाते हैं। जैसे . चालू, गद्दार, हड़ताल, छत्री आदि।

नेपाली तथा हिंदी के नामपदों के तीन व्यापक वर्ग होते हैं, जिन्हें संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण कहते हैं।

संज्ञा के शब्द इस प्रकार हैं . राम, कलम, घोड़ा, दिल्ली आदि।

सर्वनाम शब्द इस प्रकार है -

हिंदी . मैं, हम, तू, तुम, वे, वह, कोई, आदि।

नेपाली . म, हामी, ते, तिमि, उ, त्यो, काही आदि।

विशेषण शब्दों के उदाहरण इस प्रकार है-

हिंदी . लाल, चालाक, अच्छा, काला, बहुत आदि।

नेपाली . रातो, बाठी, राम्रो, कालो, धैरे आदि।

नेपाल और भारत दोनों बहु भाषा-भाषी देश हैं। उनमें से कुछ भाषाएँ तथा बोलियाँ समान रूप से दोनों ही देशों में बोली जाती है जैसे - मैथिली, भोजपुरी, अवधी, तामाङ्, शेरपा, बघेली, गुरुङ्, मारवाड़ी, हिंदी, नेपाली। इनमें से तामाड़, शेरपा की लिपि पहले बौधी लिपि (तिब्बती लिपि) थी, मगर अब यह भी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। नेपाल में भारत से मिलने वाली निम्नलिखित बोलियाँ कहाँ मिलती हैं, उसका ब्योरा नीचे दिया गया है -

मैथिली . नारायणी क्षेत्र (ज़िला रौताहत), जनकपुरी क्षेत्र (ज़िला धनुसा), सागरमथ्था क्षेत्र (ज़िला सप्तगिरि), कोशी क्षेत्र (ज़िला सुनसारी)।

भोजपुरी . भारत की सीमाओं के पास मुख्यतः नारायणी क्षेत्र, लुम्बिनी क्षेत्र (ज़िला नवलपाड़ासी) जनकपुर क्षेत्र, मेची क्षेत्र (ज़िला झापा), लुम्बिनी क्षेत्र (ज़िला कपीलवस्तु)।

बघेली . कोशी क्षेत्र (ज़िला मोरांग)।

मारवाड़ी . मेची क्षेत्र, कोशी क्षेत्र, नारायणी क्षेत्र।

तामाड़ . जनकपुर क्षेत्र, पूरब में सिंधुपालचौक, रामछप्प, ढोलाखा जिला, गनदाकी क्षेत्र, बागमती क्षेत्र (ज़िला नवाकोटा)।

शेरपा . सागरमथ्था क्षेत्र (सोलु खुमबु, ज़िला), मेची क्षेत्र।

भारत में नेपाली भाषा मुख्य रूप से पूरे सिक्किम, पश्चिम बंगाल के दार्जीलिंङ, असम आदि में बोली जाती है।

नेपाल और भारत दोनों ही देशों की मुद्रा (करेंसी) 'रुपया' ही है। भाषा इतनी मिलती-जुलती है कि गिनती भी मिलती है। केवल कुछ अंक दूसरी तरह से उच्चारण करते हैं तथा शब्दों में कुछ वर्ण भिन्न होते हैं। जैसे . दो (दुई), ग्यारह (एगार), अठारह (अठार), इक्यावन (एकाउन्न), बाबन (बाउन्न), साठ (साठी), उन्तीस (उनन्तीस), उनसठ (उनसाठी), चौंसठ (चौसट्ठी) आदि।

हिंदी भाषा में जिसे 'मुहावरा' कहते हैं नेपाली में उसे ही 'उखान' कहते हैं। मुहावरों के संदर्भ में भी हम कह सकते हैं कि दोनों भाषा में हू-ब-हू या अर्थ मिलने वाले अनेक मुहावरें हैं। उदाहरण.

हिन्दी	नेपाली
आँख लगना	आँखा लागनु
आँखों का तारा	आँखा को तारा
उँगली पर नचाना	आँलों मा नाचाउनु
दिमाग खाना	कपाल खानु
सर चढ़ाना	कपाल मा चराउनु
ताना मारना	ताना मारनु
मन मारना	मनमारनु
खोदा पहाड़ निकला चूहा	खोई न पाई छाला टोपी लाई

मुहावरे समाज के सामूहिक अनुभव की ठोस अभिव्यक्तियाँ होती हैं। ये वाक्य को और अधिक प्रभावशाली बनाती हैं। ये मुहावरे मुख्यतः स्थानीय जीवन की गहराइयों से जुड़े हुए रहते हैं।

नेपाली और हिंदी : परस्पर भौगोलिक संबंध

भारत और नेपाल के भौगोलिक संबंध के बारे में जानने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि देशों के बीच यानी प्राचीन काल से दोनों देशों में आपसी संबंध है। "भौगोलिक दृष्टि से नेपाल तीन विभिन्न पट्टियों में विभाजित है . दक्षिण में तराई (मैदानी भाग), मध्य में पहाड़ियाँ और उत्तर में उच्च पर्वत श्रृंखलाएँ। तराई क्षेत्र भारत के गंगा के मैदान का प्रसार है और नेपाल के कुल क्षेत्रफल का १७ प्रतिशत अंश इसमें सम्मिलित है।"[18]

नेपाल चारों ओर से दूसरे देशों की सीमाओं से घिरा हुआ है, जो तीन दिशाओं से भारत से जुड़ा हुआ है तथा एक ओर चीन से। नेपाल के उत्तर भाग की सीमा. चीन के 'ज़ींनजीआंग स्वायत्त परिषद्' (China's Xinjiang Autonomous Council, Tibet) से जुड़ी है तथा बाक़ी तीन तरफ की सीमाएँ भारत के राज्यों से जुड़ी हैं . पश्चिम में उत्तराखण्ड, दक्षिण में उत्तर प्रदेश, बिहार और पूर्वी में बंगाल (सिलगुढ़ी)।

भारत और नेपाल के भौगोलिक संबंध बनने का एक कारण 1815 की 'सिगौली संधि' है। यह संधि भारत की आज़ादी से पूर्व हुई थी क्योंकि ब्रिटिश इंडिया या ईस्ट इंडिया कम्पनी और नेपाल के मध्य युद्ध हुआ था। इस युद्ध के पूर्व दोनों पक्षों के बीच लम्बे समय तक शांति तथा मैत्री का संबंध था। उसी को बरकरार रखने के लिए 2 दिसम्बर 1815 में 'सिगौली संधि' हुई। इसी संधि के अंतर्गत धारा 1 में ईस्ट इंडिया कम्पनी और नेपाल के राजा के मध्य स्थायी शांति रहेगी।

धारा 6 में नेपाल के राजा प्रतिज्ञा करते हैं कि वे सिक्किम के राजा को उनके अधिकार के क्षेत्र को लेकर कभी परेशान नहीं करेंगे और इस बात की सहमति व्यक्त

---

[18] नेपाल में तराई समुदाय एवं राष्ट्रीय एकता, डॉ. हरिवंश झाँ (अनुवादक, डॉ. सुरेश धींगड़ा) पृ. 1

करते हैं कि नेपाल राज्य और सिक्किम के राज्य या उनके नागरिकों के मध्य कोई मतभेद उत्पन्न हो, तो उन्हें वे ब्रिटिश सरकार के समक्ष मध्यस्थता के लिए प्रस्तुत करें, जिसके निर्णय को मान्य करने के लिए नेपाल के राजा वचनबद्ध होते हैं।[19]

भारत की आज़ादी के बाद भी शांति और मैत्री का संबंध बनाए रखने के लिए एक अन्य संधि 'शांति एवं मैत्री-संधि' 31 जुलाई 1950 में की गई। इसके बाद दोनों देशों के बीच निम्न प्रकार से सहमति हुई .

धारा 1

भारत सरकार और नेपाल सरकार के मध्य स्थायी शांति और मित्रता रहेगी। दोनों सरकारें एक-दूसरे की संपूर्ण सम्प्रभुता, भौगोलिक एकता तथा स्वतंत्रता को मान्यता और आदर प्रदान करने को सहमत हैं।

धारा 5

नेपाल सरकार भारतीय क्षेत्र से अथवा बरास्ता भारतीय क्षेत्र नेपाल की सुरक्षा के लिए अनिवार्य हथियार, गोला, बारूद अथवा युद्धक सामग्री और उपकरणों का आयात करने के लिए स्वतंत्र होगी। इस समझौते को लागू करने के लिए दोनों सरकारें पारस्परिक परामर्श से व्यवस्था का निर्धारण करेंगी।

धारा 6

प्रत्येक सरकार इस बात के लिए प्रतिश्रुत होती है कि भारत और नेपाल के मध्य पड़ौसी मित्रता प्रमाणस्वरूप दूसरे के नागरिकों के साथ अपने राज्य में औद्योगिक और आर्थिक विकास तथा इस विकास हेतु रियायतें और अनुबंध प्रदान करने में राष्ट्रीय व्यवहार करेगी।

---

[19] नेपाल में तराई समुदाय एवं राष्ट्रीय एकता, डॉ. हरिवंश झाँ (अनुवादक डॉ. सुरेश धींगरा) पृ. 111.112

धारा 7

भारत और नेपाल की सरकारें सहमत हैं कि पारस्परिक आधार पर एक के नागरिकों को दूसरे के राज्य में आवास, सम्पत्ति स्वामित्व, व्यापार और विपणन, आवागमन तथा अन्य सुविधाएँ समान रूप से प्रदान करेंगी।

धारा 8

जहाँ तक इनमें वर्णित विषयों का संबंध है, यह संधि भारत के लिए ब्रिटिश सरकार तथा भारत सरकार के बीच की गई समस्त पूर्ववर्ती संधियों, समझौतों तथा व्यवस्थाओं को निरस्त करती है। [20]

उपर्युक्त भौगोलिक संबंध के दर्शन के लिए राजनीतिक संदर्भ देना आवश्यक है तथा यह विषय को और स्पष्ट कर देता है।

व्यापार के कारण नेपाल भारत पर निर्भर है, इसका एक अन्य कारण भौगोलिक भी है क्योंकि व्यापार में आयात-निर्यात के लिए नेपाल के पास बंदरगाह नहीं है। नेपाल को यदि किसी अन्य देश से व्यापार करना है, तो भी भारत के रास्ते ही आना पड़ता है। इसी कारण नेपाल, भारत के प्रदेशों एवं बंदरगाहों पर पूरी तरह निर्भर है। इसी को ध्यान में रखते हुए 1950 अक्तूबर में 'व्यापार और वाणिज्य की संधि' (Treaty of Trade and Commerce) हुई।

नेपाल के तराई क्षेत्र में भारत मूल के लोग बहुसंख्या में बसे हैं। हिंदी भाषा के एक कोश 'भार्गव कोश' bhargava (हिंदी-अंग्रेज़ी) में 'तराई' का अर्थ Marshy ground (दलदली भूमि), a meadow (घास का मैदान) आदि दिया है। तराई, नेपाल का वह क्षेत्र है, जो हिमालय पर्वत की निचली क्षेत्र और विंध्या पर्वत शृंखला का उत्तर भाग है तथा यहाँ के निवासी को 'मधेशी' कहते हैं।

---

[20] नेपाल में तराई समुदाय एवं राष्ट्रीय एकता, डॉ. हरिवंश झाँ (अनुवादक डॉ. सुरेश धींगरा) पृ. 119.121

नेपाली और हिंदी : परस्पर रचनात्मक प्रकृति

भारतीय भक्ति साहित्य और नेपाली भक्ति साहित्य के उद्‌भव और विकास की भिन्न-भिन्न सामाजिक स्थिति है। नेपाल देश में धार्मिक सहिष्णुता प्राचीन काल से ही स्थिर रही। यहाँ भारत की तरह किसी विधर्मी का अधिक आक्रमण नहीं हुआ और न किसी ने ज़बर्दस्ती प्रवेश कर लोगों को अपने धर्म में दीक्षित करने की हिम्मत की। यहाँ धार्मिक संकट कभी नहीं आया। इस सामाजिक भिन्नता के बावजूद भारतीय भक्ति साहित्य का यहाँ प्रशस्त प्रभाव पड़ा है। एक प्रमुख कारण है कि नेपाल से पंडित लोग उच्च-विद्या के अध्ययन तथा वेदों की भाषा संस्कृत पढ़ने के लिए काशी आया करते थे, जो प्रक्रिया आज तक चली आ रही है। "कृष्ण भक्त कवि विद्यारण्य केशरी, रामभक्त कवि भानुभक्त आचार्य ने अपना विद्यार्थी जीवन काशी में ही बिताया था।"[21]

हिंदी साहित्य में जिस प्रकार भक्ति साहित्य से दो प्रकार की धाराएँ विकसित हुई . निर्गुण और सगुण के रूप में, वैसे ही नेपाली साहित्य में भी दोनों धाराएँ मिलती हैं, अंतर केवल इतना है कि नेपाली के निर्गुण भक्ति काव्य में प्रेममार्गी सूफ़ी भक्तिधारा का समावेश नहीं मिलता। शेष संत काव्य नेपाली में भी विद्यमान है। भारत और नेपाल दोनों ही धार्मिक देश हैं। हिंदी तथा नेपाली साहित्य में भक्ति काव्य रचे गये और दोनों साहित्य में निर्गुण भक्ति धारा की विशेषताएँ भी मिलती हैं। जैसे . गुरुमहिमा, निर्गुणोपासना, आडम्बर-परम्पराओं-रूढ़ियों का उग्र विरोध आदि। हिंदी के प्रमुख संत कवि हैं . कबीरदास, रैदास, नामदेव, दादूदास आदि।

नेपाली संत कवि ज्ञानदिलदास के पद कबीरदास के पदों से काफ़ी मिलते हैं, अर्थ के संदर्भ में। उन पर कबीरदास का प्रभाव साफ़ दिखता है।

उदाहरण :

कबीरदास का एक पद -

---

[21] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 117

"मनीषा जन्म दुर्लभ है, मिलै देह न बारम्बार।

तरवर के फल झड़ि पड़या बहुरि न लागै डार।।"

इसी भाव को संत ज्ञानदिलदास इस प्रकार प्रकट करते हैं-

""ऐले छ कि भे छ भोलि मर्नु

कच्चा माटों को छाला क्या न छ तर्मु

पाउनु छ दुर्लभ मुनुसे को चोला

यो जन्म बित्या पछिफिरि कसो होला।"[22]

अर्थात् मनुष्य को यह ज्ञान नहीं होता कि उसकी मृत्यु कब होगी। यह शरीर तो चमड़े के रूप में कच्ची मिट्टी मात्र है, इससे भवसागर पार करना कठिन है। एक बार मरने के बाद फिर मनुष्य का चोला (जन्म) पाना कठिन है। इसलिए इस जन्म के बीत जाने के बाद पता नहीं कि आगे क्या होगा ?

सगुण पक्ष में रामकाव्य और कृष्ण काव्य दोनों तरह के साहित्य की रचना हुई। दोनों ही साहित्य में कृष्ण काव्य में काफ़ी समानताएँ हैं। निम्नलिखित हिंदी कृष्ण भक्ति धारा के कुछ कवियों तथा उनकी कृतियों के नाम -

सूरदास . सूरसागर, सूरसरावली, साहित्यलहरी

नन्ददास . रासपंचाध्यायी

परमानन्द . परमानन्दसागर

मीराबाई . राग, सोरठा

नेपाली साहित्य के कृष्ण भक्ति कवियों की गिनती अध्याय के प्रथम उपअध्याय में की जा चुकी है। नेपाली और हिंदी दोनों ही कृष्ण भक्ति काव्य में कृष्ण की महिमा, गुणगान आदि है। नेपाली कृष्ण भक्ति हिंदी साहित्य से काफ़ी प्रभावित है।

---

[22] नेपाली साहित्य – कमला सांकृत्यायन, पृ. 125

उदाहरण . 'सूरदास' कृत 'भ्रमरगीत' का एक पद। जिसमें उद्धव गोपियों को निर्गुण-निराकार ब्रह्म की उपासना करने को कहते हैं तथा गोपियाँ अपनी विरह-व्यथा, एवं कृष्ण को देखने की अभिलाषा प्रकट करती हैं-

"अँखियाँ हरि दरसन की भूखी।

कैसे रहे रूपरसराची ये बतियाँ सुनि रूखी।।

अवधि गनत इकटक मग जोवत तब फटी नहिं झूखी।

अब इन जोभ सँदेसन ऊधो अति अनुलानी दूखी।।

बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पै पिवत पतूखी

सूर सिकत हठि नाव चलायो ये सरिता हैं सूखी।।"

इसी प्रकार नेपाली साहित्य के कृष्ण भक्ति धारा के कवि इन्दिरस द्वारा रचित 'गोपिकास्तुति' के पद को देख सकते हैं, जिनमें उद्धव के स्थान पर दासी है -

"ब्रज कि दुःख हरी वीट नारिका

'मन खंगालिन्या हामि गोपिका गर

भजन तिमी दासी भन्दछन् कमल

झै असल हेर्न द्यौ मन।"[23]

नेपाली और हिंदी दोनों भाषाओं में मौखिक और लिखित दोनों रूप मिलते हैं। दोनों ही बहु भाषा-भाषी देश हैं और उनके अंतर्गत अनेक बोलियाँ मिलती हैं। इन बोलियों में अनेक लोकगीत-लोककथाएँ हैं, जो केवल मौखिक हैं। कुमाऊँनी लोकगीत का एक नमूना प्रस्तुत है -

"राजा तेरे गोरखियों ने लुटया पहाड़।

---

[23] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 130

लुटया पहाड़ गोरी रा लुटया पहाड़।

तीस लुटया वै रा लुटया लुटया भान्दल कि हार,

पांगी दी पंगवालीया लुटयाँ लूटी वा की नार। राजा तेरे०

सुन्ना लुटया चान्दी लुटया, लुटया जबाहरा

सेजा सुत्ती कामिनी लुटियाँ लुटिया पहाड़। राजा तेरे०" [24]

इस लोकगीत में गोर्खाली सेनिकों की क्रूरता का वर्णन कर, अपने राजा से शिकायत करते हैं। गोर्खा सैनिकों ने उनके पूरे पहाड़ को लूट लिया आदि।

नेपाल में भी लोकगीत की प्रथा बहुत पहले से चली आ रही है। नीचे एक नेपाली लोकगीत प्रस्तुत है। जिसमें एक सखी अपने पति से मार खाते रहने के कारण बहुत दुखी है और अपनी सखी से कहती है कि उसे अपने पति के घर अब नहीं जाना। तब उसकी सहेली उसे चिढ़ाती है -

"सुनको माला लाऊन भनी लाहुरे पाई खोजिस्

लाउंला हामलाई धक्कु भनी सुइंको कहाँ दिइस्।।

लंड़ाई गर्ने लाहुरे दाई कहाँ लंड़ाई गर्ने पुगिस्

दाउरे दाउरा खांदा ऐले जान्ना भनिस्।

यता हेर बाटुला, हामी पनि संगै जाउंला।"[25]

अर्थात् . सोने की माला पहनूँगी सोचकर, तुमने लाहुरे पति : फौजी पति को चुना।

हम सब तुम्हें बाधा देंगे यह सोचकर, तुमने हमें ज़रा भी ख़बर लगने नहीं दी।

भारत में अनेक शासकों ने शासन किया। उनके दरबारी कवियों ने अपने राजाओं को खुश करने हेतु अनेक काव्य रचे। साथ ही कुछ कवियों ने ईमानदारी से

---

[24] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 112

[25] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 267

अपने राजाओं की वीरता, कीर्ति की सराहना करते हुए अनेक काव्य रच डाले। दोनों भाषाओं में अनेक काव्य लिखे गए, जिसकी प्रेरणा संस्कृत से प्राप्त हुई, तो यह सामान्य-सी बात है कि दोनों में ही 'वीर रस', श्रृंगार रस' आदि काव्य की रचना हुई। हिंदी साहित्य के आदिकाल को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'वीरगाथा काल' की संज्ञा दी। हिंदी साहित्य के कुछ वीर भावना के काव्य -

पृथ्वीराज रासो -	चन्दबरदाई (सं. 1225-1249)
जयचन्द्र प्रकाश .	भट्ट केदार (सं. 1225)
बीसलदेव रासो .	नरपति नाल्ह (सं. 1292)
परमाल रासो -	जगनिक (सं. 1230)
विजय पाल रासो .	नल्लसिंह (सं. 1350)
हम्मीर रासो -	शार्ङ्धर (सं. 1357)
कीर्तिलता, कीर्तिपताका -	विद्यापति (सं. 1460)
खुमान रासो -	दलपति विजय (सं. 1180-1205)[26]

नेपाली राजाओं के राजदरबारी कवियों ने भी अपने राजाओं के लिए, उनके कीर्ति, परिवारजनों आदि पर ताम्रपत्र लिखे, जिसका वर्णन पहले हो चुका है। नेपाली भाषा में रचित 'सांढया को कविता' का विषय वस्तु महाराजा पृथ्वीनारायण शाह से संबंधित है। इसमें राजा द्वारा विशाल नेपाल के निर्माण हेतु विजय अभियान का वर्णन मिलता है -

"लड़ाई गराउंदा बहुतै भूटया चारौं तरफसौ लाठिले कुट्या

पिट् पिट्ता लाठि फुट्या...।

तड् तड् तडक्यो फरक् फरक् फर्क्यो।

---

[26] हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा पृ. 27

कडाचूर लडाकि रह्यो महासुर

ताको डंका पुगै दूर दूर

और घोर ठान्या झयालटुङ्,

लडाइं कियो डाङ् डुङ्

भये वाङ् वुङ् टाङ् टुङ् यैसो है झयालटुङ्।"[27]

उपर्युक्त पंक्तियाँ विषय को चित्रात्मक रूप से आँखों के सामने मूर्तिमान कर देती है। इसी की भाँति हमें हिंदी साहित्य के वीरगाथा काल के कवि चन्दबरदाई की रचना 'पृथ्वीराज रासो' की कुछ पंक्ति देखने को मिलती हैं। पृथ्वीराज रासो की कुछ पंक्तियाँ -

"छुटे बान चहुआन आवद्ध राजा। लगे मेछ अंगं मनों वज्र बाजं।।

फुटे संगिसंनाह के अंग अंग। उटै श्रोन छिंछे जरै जानि ढंगं।।

हते राज प्रथिराज सामंत सेतं। भय मेछ अद्धे मनों राह केतं।।

बढयो बीर नन्दी सुसूली अनन्दी। नै नचै भूत भैरू बके जानि बंदी।।

भिरें जुद्धजानीय जुथ्थानि जथ्थं। ग्रहै गिद्धि सेवाल लुथ्यानि लुथ्थं।।

चुवै श्रोन सट्टी किक्कतं धुट्टै। ग्रहं मेछ लागें जुरै सूर छुट्टै।।"[28]

दोनों के रचयिताओं के समय में बहुत बड़ा अंतर है फिर भी विषयवस्तु की दृष्टि से काफ़ी समानता है। हिंदी साहित्य के वीरगाथा काल और नेपाली काव्य के वीरगाथा काल में अंतर है, किन्तु जहाँ तक वीरता के वर्णन की बात आती है, दोनों में ओजपूर्ण चित्रण मिलता है।

हिंदी और नेपाली साहित्य दोनों में ही अनूदित कार्य हुए। अनेक उपन्यास, नाटकों का हिंदी में अनुवाद हुआ . अंग्रेज़ी, उर्दू, मराठी, गुजराती, बांग्ला। सबसे

---

[27] नेपाली साहित्य, कमला सांस्कृत्यायन, पृ. 104
[28] नेपाली साहित्य, कमला सांकृत्यायन, पृ. 104

अधिक बांग्ला से। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं - रामकृष्ण वर्मा की अनूदित रचनाएँ 'ठगवृत्तांत माला', 'पुलिस वृत्तांत माला', 'अकबर'।

अंग्रेज़ी उपन्यास हेरियट ब्रिचर स्टो कृत 'Uncle Tom's Cabin' का भी हिंदी में अनुवाद हुआ . 'टाम काका की कुटिया' नाम से अनुवाद महावीर प्रसाद पोद्दार ने किया है। कई अन्य अंग्रेज़ी उपन्यासों का भी अनुवाद हुआ है। भारतेन्दु ने भी अनेक नाटकों के अनुवाद किए हैं. 'विद्यासुंदर', 'पाखण्ड विडम्बना', 'धनंजय विजय'।

नेपाली साहित्य की गद्य विद्या की शुरुआत ही संस्कृत रचनाओं के अनुवाद से मानी जाती है। जैसे. मोतीराम ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' का अनुवाद किया, भानुदत्त ने 'मुद्राराक्षस', 'हितोपदेश (सन् 1776), शक्तिवल्लभ अर्याल ने 'महाभारत विराटपर्व' (सन् 1771) का नेपाली में अनुवाद किया। "सत्रहवीं शताब्दी से तो संस्कृत से 'अश्वशुभाशुभ परिक्षा', 'बाज परिक्षा', 'ज्वरोत्पत्तिचिकित्सा', 'पिनासरोगहरणोपाख्यान', 'प्रायश्चित प्रदीप' आदि अनेक साहित्येतर विषय के ग्रंथों का नेपाली में अनुवाद होने लगा।"[29]

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि नेपाली और हिंदी की रचनात्मक प्रकृति काफ़ी हद तक मिलती हैं।

[29] : भारतीय भाषाएँ और हिंदी अनुवाद समस्या समाधान, सं. कैलाश चंद्र भाटिया पृ. 31

2.3 नेपाली भाषा की भाषिक संरचना . प्रदत्त पाठ के आलोक में

नेपाली विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसका आरंभ दसवीं शताब्दी से माना जाता है। आरंभ में यह भाषा 'खसकुरा' के नाम से जानी जाती थी, परन्तु नेपाल के इतिहास के मध्यकाल में, नेपाल के एकीकरण के बाद से यह भाषा 'पर्वते', 'पर्वतीया', 'गोर्खा', 'गोर्खाली' और आधुनिक काल में 'नेपाली' भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। नेपाली का साहित्य समृद्ध है। इसकी लिपि देवनागरी है, जिसमें संस्कृत शब्दों का बाहुल्य है। इसका कारण स्पष्ट है, क्योंकि संस्कृत नेपाली भाषा की भी जननी है। नेपाली मुख्यतः नेपाल राष्ट्र की राष्ट्रभाषा है। यह भाषा भारत में भी अत्यधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। नेपाली और हिंदी दोनों ही भाषाओं का मूल स्रोत संस्कृत है, लेकिन भाषा विकास के क्रम में दोनों दो भिन्न भाषाओं के रूप में विकसित हुई। इसलिए इनके व्याकरण, उच्चारण तथा प्रयोगों में मौलिक अंतर देखने को मिलता है।

नेपाली भाषा की भाषिक संरचना पर ग़ौर करें तो सर्वप्रथम व्याकरण ही आता है। नेपाली व्याकरण को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं-

1) वर्ण विभाग 2) शब्द विभाग 3) वाक्य विभाग

जिस विभाग में अक्षर का आकार, उच्चारण तथा नियमानुसार शब्द बनाने की विधि का वर्णन होता है, वह 'वर्ण विभाग' है। 'शब्द विभाग' में शब्दों के वर्णन तथा 'वाक्य विभाग' में वाक्य रचना करने का वर्णन है।

वर्ण विभाग : वर्णविभाग दो प्रकार के होते हैं -

1) स्वर 2) व्यंजन

शब्द विभाग : शब्द पाँच प्रकार के होते हैं -

1) संज्ञा 2) सर्वनाम 3) क्रिया 4) विशेषण 5) अव्यय

संज्ञा पाँच प्रकार के होते हैं -

क) जातिवाचक संज्ञा . मानिस (आदमी), केटा (लड़का) बिरालो (बिल्ली) केटी (लड़की) आदि।

ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा . कृष्ण, राम, काशी, नेपाल आदि।

ग) समुदाय वाचक संज्ञा . बथान (पशु-पक्षियों का समूह), थूप्रो (ज्यादा), हूल (जनसमूह) इत्यादि।

घ) भाववाचक संज्ञा . मित्रता, सुंदरता, मोटाइ आदि।

ड.) द्रव्यवाचक संज्ञा . सुन (सोना), ताम्बो (ताँबा), फलाम (फल), माटो (मिट्टी) आदि।

संज्ञा लिंग : नेपाली भाषा में लिंग की व्यवस्था पूरी तरह संस्कृत से मिलती है। संस्कत तथा हिंदी की तरह नेपाली भाषा में भी दो ही लिंग हैं. स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग। तथा इन्हीं भाषाओं के समान नपुंसक लिंग का लोप है, नेपाली भाषा में।

"नेपाली की अधिकांश संज्ञाएँ संस्कृत संज्ञाओं से ही विकसित हैं। इसी कारण अधिकांश संज्ञाओं के लिंग भी संस्कृत से मिलते हैं। किन्तु अनेक स्थितियों में इसके अपवाद भी मिलते हैं, उदाहरणार्थ संस्कृत के देवता, शिक्षा, विद्या, प्रकृति, नीति आदि स्त्रीलिंग शब्द नेपाली में पुल्लिंग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे . शिक्षा राम्रो छ, विद्या राम्रो छ, नीति राम्रो छ।"[30]

वचन : संज्ञा शब्द के संख्या का बोध करानेवाला। नेपाली में संज्ञा पदों की रूप-रचना की प्रक्रिया संस्कृत से प्रायः समान है, भिन्नता केवल इतनी है कि नेपाली भाषा में वचन सूचक प्रत्यय अलग है। संस्कृत में तीन वचन है . एकवचन, द्विवचन, बहुवचन। किन्तु हिंदी की तरह नेपाली में भी केवल दो वचन होते हैं . एकवचन, बहुवचन।

निम्नलिखित मूल पाठ से एकवचन तथा बहुवचन के उदाहरण .

एकवचन . "आज यस छपड़ीको एउटा छाप्रोमा एउटा नेपाली शरीर...."(पृ. 8)

---

[30] : नेपाली और हिंदी का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. आशा सिंह, पृ. 132

बहुवचन . "कारण धरै जसो नेपालीहरू गाई-भैंसीको व्यवसाय..."(पृ. 7)

एकवचन 'नेपाली' शब्द बहुवचन में 'नेपालीहरू' बन जाता है यानी नेपाली लोग। नेपाली भाषा में बहुवचन के लिए 'हरू', 'गण', 'वर्ग', आदि को जोड़ा जाता है।

अव्यय : व्याकरण में अव्यय एक महत्त्वपूर्ण घटक है। पारसमणि के अनुसार "जुन शब्द को रूप सधैं समान हुन्छ, अर्थात् जुन शब्द का लिंग, वचन कारक केही हुँदैनन्, त्यस्ता शब्दलाई 'अव्यय' भन्दछन्।"[31] अर्थात् जिन शब्दों का रूप सदा समान होता है, तथा जिन शब्दों का लिंग, वचन, कारक कुछ नहीं होता, वैसे शब्दों को अव्यय कहते हैं।

पदक्रम : हर भाषा की वाक्य-रचना में पदों का प्रायः विशेष क्रम होता है। वियोगात्मक भाषा में यह क्रम बहुत निश्चित है और केवल किसी शब्द पर बल देने के लिए मात्र परिवर्तन किया जाता है। संयोगात्मक भाषाओं में काफी छूट ली जाती है, किन्तु उनमें भी क्रम है। जैसे नेपाली भाषा में हिंदी की तरह सकर्मक क्रिया होने पर पहले कर्ता, फिर कर्म और अंत में क्रिया।

उदाहरण . "गुमानेलाई यस वेला साँस फेर्ने अवकाश छैन।" (पृ. 50)

"गुमान को इस समय साँस लेने का भी अवकाश नहीं है।" (पृ. 49)

वाक्य भेद- रचना के आधार पर सामान्यतः वाक्य के तीन भेद हैं।

1) सरल वाक्य 2) मिश्र या जटिल वाक्य 3) संयुक्त या यौगिक वाक्य

---

[31] नेपाली व्याकरण, पारसमणि, पृ. 75

1) सरल वाक्य.

उदाहरण .

मूल पाठ . "त्यहाँका छात्रहरू महखुटी हाईस्कूलमै पढ्न आउँछन्।" (पृ. 50)

अनूदित पाठ . "वहाँ के छात्र महखुटी हाईस्कूल में पढ़ने आते हैं।" (पृ. 50)

मूल पाठ . "प्रेमको वरदान स्वरूप एउटा शिशु को जन्म भयो।" (पृ. 13)

अनूदित पाठ . "प्रेम के वरदान के रूप में एक शिशु का जन्म हुआ।" (पृ.11)

2) मिश्र वाक्य - इसमें एक मुख्य वाक्य रहता है और एक या एकाधिक उपवाक्य।

उदाहरण .

मूल पाठ . "त्यहाँको चिसो पानी र खुला बतास पाएर उ स्वस्थ बन्यो।" (पृ12)

इसमें 'त्यहाँको चिसो पानी र खुला बतास पाएर' आश्रित उपवाक्य है, मुख्य वाक्य है 'उ स्वस्छ बन्यो'।

मूल पाठ . "साँझ पनि मालतीलाई श्रीमती काकतीले पढ्न बसाउँछिन् तर गुमानेलाई कामले फुर्सत मिल्दैन।" (पृ. 46)

इसमें 'साँझ पनि मालतीलाई श्रीमती काकतीले पढ्ने बसाउँछिन' यह मुख्य वाक्य है, शेष आश्रित उपवाक्य है।

3)यौगिक वाक्य . नेपाली भाषा के संयुक्त वाक्य में सरल और सरल, सरल-मिश्र तथा मिश्र वाक्यों का संयोग होता है।

उदाहरण . सरल + मिश्र

मूल पाठ . "यसरी गुमानेले काकती बाबूको गोहालीभित्र प्रवेश त पायो तर मूल घर मित्र प्रवेश नपाए जस्तै श्रीमती काकती को हृदयमा पनि उसले ठाउँ बनाउन सकेको छैन।" (पृ. 46)

सरल + सरल

मूल पाठ . "छपड़ीमा व्यवहार हुने केही असमीया शब्दहरू मिसिए तापनि बोली चालीको ठप पूर्व नेपाल कै छ।"(पृ. 55)

मिश्र + मिश्र

मूल पाठ- "गाउँलेहरू सबैको हृदयमा त्यस मृतकप्रति सहानुभूति छ भन्ने कुरा, तिनका चेहरामा धेर थोर अंकित छ तर उसका निम्ति आँसु कसैका आँखामा छैन।"(पृ. 9)

मूल नेपाली पाठ में हिंदी से कई शब्द आए हैं, मगर लिप्यंतरण भिन्न हैं। जैसे . गाई (गाय) (पृ. 7), भैंसी (भैंस) (पृ. 7), बिषय (विषय) (पृ. 8) आदि।

मूल पाठ के नेपाली भाषा में ऐसे कई शब्द हैं, जो ध्वनियों के मुताबिक रखते हैं। जैसे - टयाक्कै (पृ. 10), धुत्रुक्क (पृ. 12), ध्वाप्प (पृ. 14), चसक्क (128) आदि।

नेपाली की भाषिक-संरचना के उपर्युक्त विवेचन के बाद ज्ञात होता है कि नेपाली भाषा भी संस्कृत से उद्‌भूत और हिंदी भाषा के समान ही समृद्ध है।

2.4 भाषागत विशिष्टताओं का अध्ययन

भारोपीय परिवार के सप्तम् वर्ग के अंतर्गत भारत-ईरानी शाखा के संस्कृत से विकसित खस प्राकृत तथा खस अपभ्रंश से होते हुए अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के साथ नेपाली का उद्‌भव एवं विकास हुआ है। नेपाली भाषा के विकास और समृद्धि में भोट-हिमाली (बर्मी) भाषाओं का भी विशेष योगदान रहा है। नेपाली मुख्यतः नेपाल देश की राष्ट्रभाषा है। इसकी लिपि देवनागरी है। "नेपाल में पहले तो किरातों की एक लिपि थी जिसको 'शिरिजंगा लिपि' कहते थे। परन्तु देवनागरी लिपि ने उसको अपदस्थ कर दिया। मल्ल-राजाओं के काल के समय से ही नेपाल में देवनागरी लिपि का प्रचलन हो गया था।"[32]

"यह देवनागरी लिपि ही नेपाल की राष्ट्रलिपि और जन-लिपि दोनों ही है।"[33]

आइजम पिटमैन, जिन्होंने 'शीघ्रलिपि' (फ़ोनोग्राफी) का अनुसंधान किया था, उनका कथन है कि "संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है, तो वह एकमात्र देवनागरी है।"[34]

देवनागरी लिपि की कुछ विशेषताएँ -

. यद्यपि देवनागरी रोमन 'Z' और 'F' के लिए वर्ण नहीं थे परन्तु 'ज़' और 'फ़' के नीचे बिन्दी (नुक्ता) के प्रयोग के द्वारा देवनागरी के तथाकथित अभाव तथा उसी प्रकार के कतिपय अन्य वर्णों के अभाव की पूर्ति कर दी गयी है।

. यह भाषा अधिक-से-अधिक ध्वनि-चिह्नों या वर्णों से सम्पन्न है।

.इसकी वर्णमाला में स्वर और व्यंजन का वर्गीकरण ध्वनि वैज्ञानिक पद्धति के उच्चारण-स्थान एवं प्रयत्नों के आधार पर किया गया है।

---

[32] नेपाली और हिंदी : भक्तिकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. मथुरादत्त पाण्डेय, पृ. 32.33

[33] नेपाल की कहोनी, काशी प्रसाद श्रीवास्तव, पृ. 9

[34] If in the world we have any alphabet, the most perfect it is those Hindi ones – Pitman (नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी, डॉ. अनन्त चौधरी, पृ. 72)

. इसकी वर्णमाला और वर्तनी को सीख लेने पर वर्तनी को रटने की आवश्यकता नहीं पड़ती, केवल शब्द के शुद्ध उच्चारण जानने ही से उन्हें शुद्ध लिखा जा सकता है।

. इस लिपि में जो लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है और जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है।

. इसमें लिखे प्रत्येक वर्ण का उच्चारण अनिवार्य है।

.इसमें संयुक्त वर्ण-रचना की क्षमता है, जो इसके वैज्ञानिक संतुलन एवं पूर्णता का प्रमाण है।

. यह ध्वन्यात्मक एवं लिप्यंतरण के पर्याप्त अनुकूल है।

. इस पर किसी भाषा विशेष का एकाधिपत्य नहीं है। यह संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, मराठी, नेपाली, गढ़वाली, बोड़ो आदि अनेक भाषाओं की लिपि है।

. यह लिपि इतनी वैज्ञानिक है कि इसमें संसार की किसी भी भाषा को लिखा जा सकता है। देवनागरी लिपि अन्तरराष्ट्रीय लिपि बनाए जाने के योग्य है।

. देवनागरी लिपि लेखन और वाचन की दृष्टि से सहज और सरल है।

नेपाली भाषा की अन्य विशेषताएँ ▪

. नेपाली भाषा की अपनी वर्ण-व्यवस्था है। इसमें छः मूल स्वर वर्ण है (अ, आ, इ, उ, ए, आ) तथा उन्तीस मूल व्यंजन वर्ण एवं तीन संयुक्त व्यंजन वर्ण (क् + ष् = क्ष), (त् + र् = त्र), (ज् + ञ् = ज्ञ) है।

. केवल नेपाली भाषा में अकर्मक क्रिया को कर्मवाच्य बनाने की प्रक्रिया मिलती है।

. नेपाली और हिंदी भाषा की बोलचाल की भाषा पर ध्यान दें तो, देखा गया है कि हिंदी की अपेक्षा नेपाली के शब्द, संस्कृत के अधिक समीप है।

. नेपाली शब्द के अन्त में आए 'ड' और 'ढ' का उच्चारण 'ड़' और 'ढ़' के रूप में होता है। जैसे . 'कांढ' का 'कांढ़', 'डाँडो' का 'डाँड़ो' आदि।

. नेपाली भाषा में भी हिंदी की भाँति अंग्रेंज़ी शब्दों के लिए 'ऑ' का प्रयोग करते हैं। जैसे . ऑफिस, डॉक्टर, हॉल, मॉल आदि।

. नेपाली भाषा में ही केवल 'व्य' संयुक्त वर्ण का प्रयोग होता। जिसका उच्चारण 'रेय' होता है। जैसै. पुप्याउन, पाप्यो आदि।

. नेपाली भाषा की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें भी हिंदी की भाँति आदरसूचक सर्वनाम रूप मिलता है 'तपई' यानि 'आप'। यह अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में नहीं मिलता।

. नेपाली शब्द भंडार बहुत विशाल है। इसके मौलिक शब्द भंडार में तत्सम्, तद्भव तथा देशज शब्द और आगन्तुक शब्द भंडार में विभिन्न स्वदेशी तथा विदेशी भाषाओं से लिए गए शब्द हैं।

. नेपाली भाषा के अपने मौलिक मुहावरे तथा लोकक्ति हैं।

मुहावरे एवं लोकोक्ति

आज के समय में भाषा अभिव्यक्ति मात्र का साधन न रहकर समाज की सांस्कृतिक विशिष्टताओं को भी उभारने लगी है। लेकिन अपनी समस्त क्षमताओं के बाद भी मानव अपनी प्रत्येक अनुभूतियों को शब्द देने में सफल नहीं हुआ है। इसी कारण मानव जाति ने भाषा की शब्दशक्ति के लक्षणा तथा व्यंजना का सहारा लेकर मुहावरे और लोकोक्ति का निर्माण किया है। यह वाक्यांश न होकर स्वतंत्र वाक्य हैं। इसका एक विशिष्ट अर्थ होता है, जो सामाजिक पृष्ठभूमि से रूढ़ होता है। सीमित वाक्यों में वह पूरी बात या अव्यक्त संदेश व्यक्त करने की क्षमता रखता है। उसके शब्द चयन और वाक्य-विन्यास लयात्मक होते हैं, इसीलिए इन्हें कंठस्थ करना आसान होता है। निम्नलिखित कुछ उदाहरण मूल पाठ से .

- न मामाभन्दा काने मामा (पृ. 21, 22)

- घरको साँढ़े वनको विरालो (पृ. 45)

- डुब्न आँटकोले तृण समाते झै (पृ. 36)

- हात बाँधेर बस्न (पृ. 50)

- जसको सिता खायो, उसैको गीता गायो (पृ. 59)

- डाडु पन्यूं जसको हातमा छ त्यसैलाई जदो गंरेकै भलो हो (पृ. 59)

- आँखाको छारो (पृ. 68)

- छाड़ा छाड़ेको साँढ झैं (पृ. 70)

- जस्ले जस्तो गर्छन् त्यस्तै पाउँछन। (पृ. 71)

नेपाली भाषा स्तरीकृत, मानकीकृत तथा परिष्कृत भाषा है। इस भाषा में साहित्य का विपुल भण्डार है। नेपाली में अनेक समाचार पत्र तथा अन्य पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। नेपाली भाषा का साहित्य विश्व में अपनी अलग पहचान बनाने में सक्षम हो सका है। विश्व के बहुत से देशों में अब नेपाली भाषा का अध्ययन होता है। जैसे-

i) University of London, School of Oriented and African studies (SOAS), London, UK

ii) Cornell University (New York) (a) Summer Intensive Nepali Lanuage Course (b) Department of Asian Sudies, USA

iii) University of Winconsin – Madison's South Asia Summer Language Institute (SASLI) USA.

iv) Indian Institute, Amsterdam (Netherlands)

साथ ही, भारत में काशी हिंदू विश्वविद्यालय, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, गौहाटी विश्वविद्यालय आदि में नेपाली भाषा का पठन-पाठन होता है।

सन् 2000 से भारत में नेपाली भाषा को विभाषी तक पहुँचाने का कार्य भारत सरकार ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के पूर्वोतर क्षेत्र भाषा केन्द्र, गुवाहाटी (असम) को दिया है।

भारत सरकार की सूचना प्रविधि मंत्रालय द्वारा नेपाली भाषा का कंप्यूटरीकरण कर उसमें वर्तनी, व्याकरण आदि समाविष्ट करके 'प्रोग्रामिंग (Programming) का कार्य चल रहा है। आई.आई.टी मुम्बई से चलित 'इण्डो-वर्डनेट योजना' में नेपाली भाषा का भी समावेश हो चुका है और सिडेक (पुणे) में भी नेपाली भाषा का केन्द्र स्थापित हुआ है और सिडेक (पुणे) ने नेपाली भाषा का, फांट भी तैयार कर लिया हैं । अतः नेपाली भाषा का भविष्य और भी उज्ज्वल है। यह सब नेपाली भाषा की विशेषताओं के कारण ही है।

हिंदी की भाषागत विशिष्टताएँ

'हिंदी' भारत की राजभाषा तथा संपर्क भाषा है। भारत बहुभाषा-भाषी देश है। परंतु हिंदी को ही संपर्क भाषा बनाने का कारण यह है कि इस भाषा को अधिक-से-अधिक लोग बोल, समझ और पढ़ सकते हैं। इसमें राष्ट्रभाषा के सभी गुण है। जैसे-

.जो भाषा समूचे शब्द को भावात्मक एकता के सूत्र में बाँध सके।

.राष्ट्रीय समारोह में जिसका प्रयोग होता हो।

. जिसके माध्यम से राष्ट्र के अधिकांश लोग परस्पर विचार-विनिमय कर सके।

हिंदी भाषा को संस्कृत शब्द भंडार तथा नवीन शब्द रचना करने का सामर्थ्य विरासत में मिला है। हिंदी काफ़ी लचीली भाषा है, क्योंकि इसमें देशी-विदेशी भाषाओं एवं बोलियों आदि से शब्द निस्संकोच लिए जाते हैं। साथ ही, जो शब्द अप्रचलित अथवा बदलते जीवन संदर्भों से दूर हो गया है, उसका त्याग भी कर दिया गया है। हिंदी शब्द-भंडार के वर्गीकरण को इस प्रकार चित्रित किया जा सकता हैः

हिंदी शब्द-भंडार

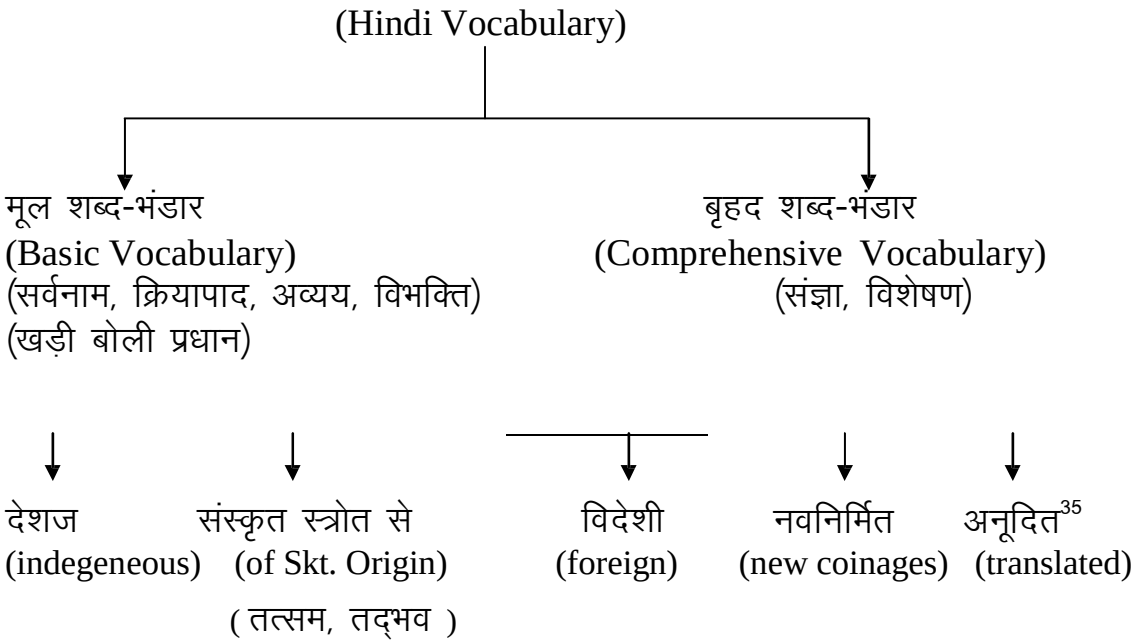

जहाँ तक देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का सवाल है, वह सर्वमान्य है। इस लिपि में लिखी जाने वाली भाषाएँ उच्चारण पर आधारित हैं।

हिंदी भाषा की एक अन्य विशिष्टता है कि इसमें संस्कृत के उपसर्ग तथा प्रत्ययों के आधार पर शब्द बनाने की क्षमता है।

हिंदी की एक अन्य विशेषता यह है कि इसे सीखना और व्यवहार में लाना अन्य भाषाओं की अपेक्षा ज़्यादा सुविधाजनक है। ऐसा इसीलिए भी कि यह लोक भाषाओं की विशेषताओं से सम्पन्न है।

हिंदी का साहित्य सभी दृष्टियों से समृद्ध है। इसे अन्तरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने का श्रेय बहुत कुछ हिंदी साहित्य के कारण भी है। हिंदी साहित्य ने पिछले एक सदी में कविता, कहानी, आलोचना, उपन्यास, चिन्तनपरक साहित्य आदि क्षेत्रों में बड़ी तेज़ी से विकास किया है। आज हिंदी किसी भी अन्य भाषा के श्रेष्ठ साहित्य का मुकाबला करने की क्षमता रखती है। प्रेमचंद, निराला, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन,

[35] अंग्रेज़ी-हिंदी अनुवाद व्याकरण, प्रो. सूरजभान सिंह, पृ. 65

मुक्तिबोध आदि के लेखन के अनुवाद विभिन्न देशी एवं विदेशी भाषाओं में हुए हैं। इस प्रक्रिया से हिंदी के ज़रिए दुनिया भर में लोगों का रचनात्मक एवं संवेदनात्मक संबंध कायम हुआ है। भारतीय चेतना का प्रतिनिधित्व सबसे अधिक हिंदी साहित्य ही करती है। साथ ही, हिंदी के माध्यम से दूसरी भाषाओं के साहित्य का परिचय भी विश्व का हिंदी समुदाय प्राप्त करता है। यह एक बड़ा कारण है कि विश्व भर में हिंदी का अध्ययन वह भी कर रहे हैं, जो भारतीय मूल के नहीं है।

अठाहरवीं तथा उन्नीसवीं सदी में भारत से मुख्यतः हिंदी भाषी को मजदूर के रूप में भारी संख्या में अनेक देशों में ले जाया गया। जैसे - मॉरिशस, फ़ीजी, दक्षिण अफ़्रीका, त्रिनीडाड, न्यूज़ीलैंड आदि। इसलिए इन जगहों में आज हिंदी बोली जाती है और भी अन्य ऐसे देश हैं जहाँ हिंदी भाषी जनता की संख्या बहुत बड़ी है जैसे नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान आदि। विश्व की सबसे अधिक बोले जानेवाली तीन भाषाओं में से एक हिंदी है, अन्य दो अंग्रेज़ी और चीनी है। हिंदी भाषा नेपाल और भारत में राष्ट्रीय एकता का माध्यम है। आज की परिस्थिति में हिंदी की एक अंतरराष्ट्रीय बिरादरी विकसित हो रही है।

हिंदी और नेपाली लिंग, वचन और पुरुष की दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील भाषाएँ हैं। हिंदी में अन्विति का क्षेत्र संज्ञा, क्रिया और विशेषण तीनों तक व्याप्त है। "अन्विति का तात्पर्य है लिंग, वचन और पुरुष के आधार पर दो व्याकरणिक घटकों के बीच रूपों का एक जैसा परिवर्तन, जैसे- छोटा लड़का, छोटी लड़की, छोटे लड़के।"[36]

अंग्रेज़ी में द्विरूक्ति का प्रयोग व्याकरण सम्मत नहीं माना जाता। जैसे . small-small, big-big आदि। जबकि हिंदी में स्वतंत्रता से द्विरूक्ति विशेषणों का बहुलता से प्रयोग किया जाता है। जैसे एक ही शब्द को दोहराकर . धीरे-धीरे (12), खाते-खाते (पृ. 20), फांय-फांय (पृ. 26), कभी-कभी (पृ. 27), कौन-कौन (28) आदि अनूदित पाठ के

[36] अंग्रेज़ी.हिंदी अनुवाद व्याकरण, प्रो. सूरजभान सिंह, पृ. 199

कुछ उदाहरण। नेपाली भाषा में भी इस प्रकार के उदाहरण मौजूद हैं मूल पाठ के कुछ शब्द -

घोची-घोची (पृ. 10) वेला-वेला (पृ. 20)

पीटाई-पीटाई (पृ. 17) साँझ-साँझ (पृ. 21)

पछि-पछि (पृ. 17) डर-डर (पृ. 24)

हिन्दी में दोहराए गए शब्दों में अल्प ध्वनि परिवर्तन कर शब्दों का प्रयोग होता है, हिंदी में। जैसे - उलझ-पुलझ (पृ. 12) पुराना-धुराना (पृ.27)

अगल-नगल (पृ. 26) बुझता-सुझता (पृ. 27)

नेपाली भाषा के कुछ उदाहरण-

ओहोर-दोहोर (पृ. 14) ओल्लो-पल्लो (पृ. 19)

घच्चा-घच्ची (पृ. 15) निद-सिद (पृ. 29)

हिंदी के मुहावरे और लोकोक्ति

हर भाषा और जाति के अपने-अपने रूढ़ मुहावरे तथा लोकोक्ति होते हैं। भारत की लोक-संस्कृति में मुहावरे और लोकोक्ति का विशेष स्थान है। 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' के हिन्दी अनुवाद में अनूदित पाठ से हिंदी के कुछ मुहावरे और लोकोक्ति का उदाहरण निम्नलिखित है.

- घर का साँढ वन का बिलार। (पृ. 44)
- जंगल में मंगल। (पृ. 30)
- डूबते को तिनके का सहारा (पृ. 35)
- हाथ बाँधकर बैठना (पृ. 49)

- जिसकी लाठी, उसकी भैंस (पृ. 60)

- आँख का काँटा (पृ. 69)

- छुट्टे साँड़ की तरह (पृ. 72)

- आग में घी का काम (पृ. 164)

- हाथ-पैर ही ठंडे पड़ गये (पृ. 165)

स्पष्ट है, इनमें नेपाली और हिन्दी की प्रकृति काफ़ी हद तक मिलती जुलती है।

मूल नेपाली पाठ में प्रयुक्त नेपाली भाषा के कुछ पदों जो अनुवादक ने हू-ब-हू लिप्यंतरित कर कोष्ठक में उनका समतुल्य हिंदी अर्थ दिया है और ऐसा करने से अनुवाद हिंदी भाषी पाठकों के लिए बोधगम्य बन पड़ा है। मूल पाठ की भाषा को यदि देखें तो उसमें तत्सम, तद्भव, देशज विदेशी सभी का प्रयोग मिलता है। मूल में लेखक ने बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। इसी कारण बहुत जटिल नहीं है। इन्होंने संवाद शैली का प्रयोग किया है। संवाद द्वारा परिवेश का ज्ञान हो जाता है। उपन्यास में संवाद से मूल कथ्य और उसमें आए पात्रों के मनःस्थिति को स्पष्ट रूप से अंकित किया गया है। पात्रों के संवाद में स्थानीय रंग झलकता है। मूल पाठ में सरल, संयुक्त तथा मिश्रित सभी वाक्य मिलते हैं परंतु हिन्दी अनुवाद में सरल वाक्य की अधिकता ही देखी जा सकती है।

अध्याय तृतीय

ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ के हिंदी अनुवाद का विश्लेषण

3.1 समतुल्यता के आधार पर मूल एवं लक्ष्य पाठ का विश्लेषण

3.2 सांस्कृतिक विश्लेषण

3.3 पाठाधारित समस्याएँ : लोप एवं संयोजन

3.4 प्रस्तावित पाठ

3.1 समतुल्यता के आधार पर मूल एवं लक्ष्य पाठ का विश्लेषण

स्रोत भाषा का मूल पाठ और लक्ष्य भाषा का अनूदित पाठ पूर्णरूप से एक समान नहीं होता। इसलिए अनुवादक को लक्ष्य भाषा के अर्थ को स्रोत भाषा के अर्थ के मूलगुण से यथासंभव निकटतम समान रूप में प्रस्तुत करना पड़ता है। अर्थ के इस निकटतम सादृश्य को समतुल्यता की संज्ञा दी गई है। समतुल्यता में समानता की खोज की जाती है। "मूल पाठ और अनूदित पाठ पूर्णरूप से 'समरूप' (identical) नहीं होते बल्कि 'समतुल्य' (equivalent) होते हैं।"[38] अर्थात् यह भी कहा जा सकता है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की भाषापरक और अर्थपरक अभिव्यक्तियाँ समान मूल्य की होनी चाहिए।

प्रसिद्ध आधुनिक अनुवादशास्त्री कैटफ़ॅर्ड और नाइडा ने 'समतुल्यता' की परिभाषा इस प्रकार दी है .

कैटफ़ॅर्ड के अनुसार, "अनुवाद एक भाषा के पाठपरक उपादानों का दूसरी भाषा के पाठपरक उपादानों के रूप में समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर प्रतिस्थापन है।" (The replacement of texual material in one language by equivalent texual material in another langauge. Catford)[39]

कैटफ़ॅर्ड ने मुख्यतः समतुल्यता के सिद्धांत के लिए पाठपरक उपादानों की समतुल्यता की अपेक्षा रखी है।

नाइडा के अनुसार, "अनुवाद का संबंध स्रोत भाषा के संदेश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्यभाषा में निकटतम, स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक उपादान प्रस्तुत करने से होता है।" (Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first

[38] अनुवाद विज्ञान सिद्धांत और अनुप्रयोग, डॉ. नगेन्द्र पृ. 70
[39] वही, पृ. 70

in meaning and secondly in style. Nida)[40] नाइडा ने पाठ में निहित अर्थ और शैली दोनों के समतुल्य उपादानों के प्रस्तुतीकरण पर ज़ोर दिया है।

अनुवाद प्रक्रिया में स्थिति के संदर्भ में समरूपता परिलक्षित होती है, जिसमें कुछ तत्त्वों में साम्य लाने का प्रयास रहता है। अनूदित कृति में दो भाषाओं की संरचना और संस्कृति एक दूसरे में निहित होकर संश्लिष्ट रूप में स्थित होते हैं। साहित्यिक कृति चाहे वह उपन्यास, कहानी, नाटक आदि जो भी हो, उसमें भावों और विचारों की समग्रता रहती है। साथ ही, "जिसमें प्रतीक विधान, बिंबविधान, सूक्ष्म अर्थवत्ता, व्यंग्यार्थ आदि अंतनिर्हित होते हैं। इन सबका अंतरण नई भाषा में करना होता है। अंतरण की प्रक्रिया में आगम, लोप, स्थानापत्ति आदि विभिन्न तत्त्वों की भी अपनी विशेष भूमिका रहती है। इसके अतिरिक्त शब्दानुवाद, आगत शब्द, शब्द-निर्माण, क्रम-परिवर्तन, रूपांतरण, अनुकूलन, लिप्यंतरण और भावानुवाद समतुल्यता के सिद्धांत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।"[41]

प्रस्तुत अनूदित पाठ में भाषापरक समतुल्यता के कुछ उदाहरण देख सकते हैं। भाषापरक समतुल्यता का आधार भाषिक सामग्री है। इसमें मुख्यतः शब्दों, पदबंधों, वाक्यों आदि का चयन किया जाता है।

उदाहरण के लिए, मूल पाठ नेपाली के शीर्षक 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' को लें, तो कहा जा सकता है कि इसका सीधा शब्दानुवाद हुआ है। अनूदित हिंदी पाठ में 'ब्रह्मपुत्र के आसपास' शीर्षक रखा गया है। इसमें भावानुवाद आदि की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि इसका शब्दानुवाद शीर्षक के पूर्ण अनुकूल है। साथ ही निकटतम समतुल्य भी। वैसे 'छेउ-छाउ' के लिए अन्य एक शब्द 'इधर-उधर' भी है परंतु यह शीर्षक के लिए सटीक नहीं है। अतः शीर्षक का सफल अनुवाद हुआ है। अर्थात् यह एक प्रकार से शब्दानुवाद ही है।

---

[40] अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, श्री कृष्णकुमार गोस्वामी पृ. 70

[41] अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्णकुमार गोस्वामी पृ. 171

प्रस्तुत मूल पाठ नेपाली भाषा में है। अनूदित पाठ में अनुवादक ने काफी हद तक सफल शब्दानुवाद किया है। जैसे कुछ उदाहरण इस प्रकार है .

मूल	पृष्ठ	अनूदित	पृष्ठ
थुम्का	7	शिखर	5
डाँड़ा	12	चोटी	10
मधौरू	76	बीमारी	77
मुन्द्र	103	मुंदरी	105
छेउता	112	बाबूजी	115
टुटुल्को	58	टेटर	59
गोठालाहरू	18	चरवाहे	17

कहीं-कहीं पर शब्दानुवाद सफल नहीं हो पाया है जैसे .

मूल	पृष्ठ	अनूदित	पृष्ठ	प्रस्तावित
मुटु	93	सिर	95	हृदय/दिल
खुजुरा	163	खुदरा	168	रेजगारी/सिक्के
लड्दैछन	53	खिसक रहे थे	53	गिर रहे थे
चांगघर	7	बगीचा	5	चाङ्घर
खुत्रुक्क्	157	खुर खुर	162	खड़-खड़

वाक्य के स्तर पर भी अनूदित पाठ, मूल पाठ के समतुल्य है। उदाहरण स्वरूप कुछ वाक्य प्रस्तुत हैं .

मूल पाठ - "केही छिनपछि मालती विदा हुन्छे।"(148)

अनूदित पाठ - "कुछ देर बाद मालती विदा होती है।"(153)

मूल पाठ - "लाल बहादुर शास्त्रीको नारा 'जय जवान, जय किसान' भारतभरि गुञ्जिजयो।"(150)

अनूदित पाठ - "लाल बहादुर शास्त्री का नारा 'जय जवान, जय किसान' पूरे भारत में गूँज उठा।"(155)

मूल पाठ - "गुमानेको परिक्षा राम्रो हुन्छ भन्ने कुरामा कसैलाई संशय छैन।"(73)

अनूदित पाठ - "गुमान की परीक्षा अच्छी होगी, इस बात में किसी को संशय नहीं था।"(74)

मूल पाठ - "नेपालको पहाड़भित्र उसको जन्म भएको हो।"(12)

अनूदित पाठ - "नेपाल के पहाड़ के बीच उसका जन्म हुआ है।"(10)

मूल पाठ - "प्लेटफर्मको एउटा कुनामा बसेर जुरे लीले चिउराको पोको फोई।"(16)

अनूदित पाठ - "प्लेटफार्म के एक कोने में बैठकर जुरेली ने चिउड़ा की एक पोटली खोली।"(14)

मूल कृति में कुछ असमिया शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। हालाँकि पाठ में मूल वर्णन नेपालियों का है, पर परिवेश असम का है, तो निश्चय ही असमिया शब्दों का आना स्वाभाविक है। अनूदित पाठ में कुछ असमिया शब्दों का समतुल्य शब्द नहीं रखा गया। एक शब्द 'गोहाली-घर' (45) मूल पाठ में है, जिसका अनुवाद 'गुहाल' (44) किया गया है। हिंदी भाषा में 'गुहाल' शब्द के स्थान पर 'गोशाला' अधिक सटीक है।

एक अन्य असमिया शब्द 'गडाखनिया' (76) मूल पाठ में है, जिसका अनुवाद 'बीमार' (77) किया गया है, जो पूर्णतः गलत है। 'गडाखनिया' यानि 'पानी द्वारा मिटट्ी का कटाव' है।

भावपरक समतुल्यता वस्तुतः व्यवहारपरक अर्थ है, जो स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। इसमें भाषिक अभिव्यक्ति की अपेक्षा संप्रेष्य कथ्य पर अधिक बल दिया जाता है और बाह्य स्तर की अपेक्षा आंतरिक स्तर पर अर्थ का निर्धारण किया जाता है। इसे भावानुवाद भी कह सकते हैं।

प्रस्तुत अनूदित पाठ में मूल पाठ के मुहावरों अथवा मुहावरेदार प्रयोगों का रूपांतरण प्रतिस्थापन करने में अनुवादक को काफ़ी सफलता मिली है। भारतीय नेपाली भाषा और हिंदी भाषा के मुहावरे लगभग समान है। कुछ उदाहरण .

मूल पाठ . घर को साँढे वनको बिरालो (45)

अनूदित पाठ . घर का साँढ़ बन का बिलार (44)

मूल पाठ . आँखा को छारो (68)

अनूदित पाठ . आँख का काँटा (69)

मूल पाठ . आगो भएको छ (47)

अनूदित पाठ . आग बबूला हो जाता है (46)

साथ ही कहीं-कहीं एक-दो स्थान पर समतुल्य मुहावरा अनूदित पाठ में नहीं है, परंतु अनुवादक ने उसकी समांतर अभिव्यक्ति तथा भावानुवाद इस प्रकार प्रस्तुत किया है। कुछ उदाहरण .

मूल पाठ - "न मामा भन्दा कानै मामा पनि जाति भन्ने विचारी।"(21-22)

अनूदित पाठ . "मामा नहीं रहने से काना मामा ही अच्छा है।"(21)

मूल पाठ . "मही मांग्नु फेरि के ढुंग्रो लुकाउनु र?"(102)

अनूदित पाठ ."मट्ठा माँगना है तो बर्तन छुपाना क्या?"(104)

मूल पाठ . "न ऐया भन्न पाइयो न आथो भन्न पाइयो।"(135)

अनूदित पाठ . "न 'ईस' बोल सकोगे न 'बीस'।"(140)

हर भाषा की अपनी रचनात्मक शैली होती है। मूल कृति नेपाली में कई ऐसे वाक्य हैं, जिनमें एक-दो शब्द या ध्वनि ऐसे हैं, जिनका सही अनुवाद कर पाना कठिन है। जैसे . ऐं, लौ, लो, क्या नाम आदि। ऐसे शब्दों का समतुल्य रख पाना जटिल कार्य है। अनूदित पाठ में ऐसा प्रायः कई स्थलों पर नेपाली शैली को कायम रखने के चलते हिंदी शैली का रूप बदल गया है। कुछ उदाहरण .

मूल पाठ . "ए ? फास्ट डिभिजनमा मिट्रिक पास भए...।"(83)

अनूदित पाठ ."ऐं ! फ़र्स्ट डिवीजन में मैट्रिक पास है...।"(84)

अनूदित पाठ का 'ऐं' शब्द हिंदी में 'आश्चर्य' होने के भाव को दर्शाता है। परंतु मूल पाठ में 'ए' का अर्थ 'अच्छा' या 'ओ' का भाव दर्शाता है। इसी कारण 'ए' के समतुल्य 'अच्छा' या 'ओ' रख सकते हैं।

मूल पाठ . "ए, लू ! अब यहाँसम्म आइसकेप छि, यसो हाम्रो गोठतिर पनि निस्कन पर्छ है।"(89)

अनूदित पाठ . "ए लो, अब यहाँ तक आ गये हो तो हमारे मवेशीशाला की ओर भी जाना पड़ेगा।"(91)

यहाँ 'ए लो' के स्थान 'अच्छा तो' या 'ये लो' शब्द मूल के अधिक समतुल्य है।

मूल पाठ . "नमस्कार है, बा!"(62)

अनूदित पाठ . "नमस्कार है, बाबू।"(63)

उपर्युक्त अनूदित वाक्य में नेपाली शैली ही रखा गया है, जबकि यहाँ 'नमस्ते बाबू' या 'नमस्कार बाबू' हो सकता है।

हर कृति में प्रतीकात्मक, लक्षणापरक और व्यंजनापरक अर्थ छिपे होते हैं। अनुवादक द्वारा इन तत्त्वों का भी पाठपरक समतुल्य शब्द रखना अति आवश्यक है। यह महत्त्वपूर्ण एवं सबसे कठिन कार्य है क्योंकि किसी एक भाषा या समाज का प्रतीक किसी दूसरी भाषा या समाज का कुछ और ही अर्थ कभी-कभार ध्वनित करता है। अनुवादक को सतर्क रहकर पाठपरक समतुल्य प्रतीक आदि रखना चाहिए। पाठपरक समतुल्यता में स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा दोनों पाठ में समान रूप से प्रभावोत्पादकता होती है। पाठपरक समतुल्यता में प्रतीकात्मक, लक्षणापरक, व्यंजनापरक में शब्द केवल भिन्न होते हैं, परन्तु इनमें समान तत्त्व निहित है, जिसमें अर्थ के मूल में परिवर्तन नहीं होता।

प्रस्तुत मूल कृति नेपाली में दिए गए प्रतीकात्मक शब्दों का अनुवाद में भी वही रूप रखा गया है। जैसे एक शब्द है 'कुल देवता'(पृ. 10)। अनूदित पाठ में भी यही शब्द रखा गया है क्योंकि हिंदी में भी 'कुल देवता' शब्द ही है। यह एक धार्मिक प्रतीक है। प्रत्येक व्यक्ति का जिस प्रकार नाम होता है, गोत्र होता है, उसी प्रकार कुल भी होता है। 'कुल' अर्थात 'खानदान' या उसकी 'वंश परम्परा'। 'कुलदेवता' का तात्पर्य है जिस देवता की कृपा से कुल में अभिवृद्धि हुई है तथा पूर्वज भी उसी देवता को पूजते हैं। प्रत्येक कुल परम्परा में उनके कुल देवी-देवता की अवश्य पूजा होती है। ख़ास कर ग्रामीण क्षेत्रों के घरों में 'कुल देवता' का अलग से मंदिर होता है, जहाँ उनकी पूजा होती है। पर्व-त्योहार आदि पर स्वर्गीय पूर्वजों के साथ 'कुल देवता' को भोग अर्पण अवश्य किया जाता है।

मूल कृति में एक अन्य शब्द 'जनै' (पृ. 41)है, जिसका शब्दानुवाद 'जनेऊ' है। यह हिंदू धर्म का धार्मिक प्रतीक है। इसी पृष्ठ पर 'ब्रतवंध' शब्द का प्रयोग है, जो धार्मिक संस्कार का प्रतीक है। इसका अनुवाद 'उपनयन' किया गया है, जो सटीक है। 'जनेऊ' के लिए एक अन्य शब्द 'यज्ञोपवीत' या 'यज्ञसूत्र' भी है। 'उपनयन' संस्कार के दौरान जनेऊ बालक को पहनाया जाता है। मुंडन और पवित्र जल से स्नान किया

जाता है। पूर्व में जनेऊ पहनने के बाद ही विद्या आरंभ होती थी। 'यज्ञोपवीत' एक विशिष्ट धागे को विशेष विधि से ग्रंथित करके बनाया जाता है। विवाह से पूर्व तीन धागों की तथा विवाहोपरांत छह धागों की जनेऊ धारण की जाती है। तीन धागे वाले इस जनेऊ को गुरु दीक्षा के बाद धारण किया जाता है। तीन धागे त्रिमूर्ति 'ब्रह्मा, विष्णु और महेश' के प्रतीक हैं। इसे धारण करने के उपरांत कई नियमों का पालन करना पड़ता है।

लक्ष्य पाठ में इस प्रकार के धार्मिक प्रतीकों का सफल अनुवाद हुआ है, क्योंकि दोनों समाजों में इसका प्रचलन है। अनूदित पाठ में सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतीकों को भी अधिकतर वैसा ही रखा गया है। वेश भूषा के संदर्भ में देखें तो मूल पाठ में 'दाउरा-सुरवाल' है, जो नेपाली जाति का एक ख़ास क़िस्म का वस्त्र है। यह उनके नेपाली होने का प्रतीक है। इसमें नेपाली की संस्कृति समाविष्ट हैं। इस कृति में नेपाली लोगों की वेशभूषा का भी उल्लेख मिलता है। लड़के दउरा-सुरवाल (कुर्त्ता-पायजामा) टोपी और छींटवाले कपड़े का कमरबंध पहनते हैं। साथ ही, असमिया पहनावे का भी उल्लेख है। जैसे . मूल में है 'एड़ीको खास्टो' (पृ.91) यह असमिया शब्द ही है। इसका अनुवाद है 'अंडी की चादर' (पृ.91)। असमी लड़कियाँ 'मेखला चादर' (पृ. 70) पहनती है, इसका उल्लेख तथा व्याख्या मूल में कोष्ठक में किया गया है ताकि नेपाली पाठक को इसका ज्ञान हो सके, क्योंकि यह नेपाली पाठकों के लिए अजनबी शब्द है। इसे इसलिए भी नहीं बदला गया क्योंकि यह किसी जाति का मौलिक तथा स्थानीय पहनावा है, इसके लिए कोई अन्य शब्द नहीं है। परन्तु अनूदित पाठ में इसे बदल दिया गया है, हालाँकि अर्थ तो निकलता है परन्तु 'मेखला चादर' का अनुवाद करना ग़लत है। अनूदित कृति में इसका पूर्ण अनुवाद भी नहीं हुआ है 'पाट की बनी हुई चादर'(पृ. 71) अर्थात् केवल किस चीज़ से बनी है उसका ही वर्णन है। 'मेखला चादर' के दो हिस्से होते हैं। 'मेखला' नीचे पहनते हैं, तथा 'चादर' को साड़ी के आँचल की तरह ओढ़ा जाता है।

अनूदित पाठ में एक स्थान पर 'असमी गमछा' (पृ.55) शब्द का प्रयोग हुआ है। यदि इसे असमिया समाज के बाहर कोई पाठक पढ़ेगा, तो उसके लिए यह मात्र शरीर पोछने वाला एक सामान्य 'गमछा' (कपड़े का टुकड़ा) मात्र होगा। परंतु 'असमिया गमछा' एक आदरसूचक पद भी है। असमिया समाज में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हर महत्त्वपूर्ण कार्य, त्योहार आदि में इसका प्रयोग होता है। इस कारण 'असमी गमछा' की व्याख्या करना आवश्यक है।

मूल पाठ में सामाजिक सूचनाएँ सभी स्तरों पर दी गई हैं। जैसे . 'ढिकी' (50), 'पानबट्टा' (118), 'खुकुरी' (23), 'दाउ' (66) आदि। 'दाउ' पूर्णतया संस्कृतिबद्ध शब्द है और हिंदी में उसी के अनुरूप शब्द मिलना कठिन है। यह न 'चाकू' है न 'तलवार', यह लोहे से बना एक अस्त्र है जो असम और उत्तर पूर्वांचल के लोग इस्तेमाल करते हैं। अनूदित पाठ में इसे 'दाँव' (67) रखा है, जो सामाजिक सूचना दे पाने में असमर्थ है। 'दाँव' का हिंदी में अर्थ है 'चाल' आदि। 'खुकुरी' नेपाली वीरों का प्रतीक है। इसके लिए कोई और प्रतीक शब्द हो ही नहीं सकता। असमिया शब्द 'बोटा' को यहाँ 'पानबट्टा' कहा गया है। यह हर असमिया घर में मिलता है। हर पूजा, त्योहार, आदि में इसका प्रयोग होता है। जिस प्रकार 'पानदान' होता है, उसी प्रकार असमिया लोग इसमें पान-सुपारी आदि रखते हैं। इसकी बनावट पानदान की तरह नहीं होती, यह खुला हुआ रहता है, और नीचे एक आधार पात्र रहता है। इसमें असमिया 'ढिकी' का अनुवाद 'ढेकी' किया गया है। यह ग्रामीण परिवेश से संबंधित है। आज भी जिनके घरों में मशीन नहीं है, वे ढेकी में ही चावल कूटते हैं।

अतः इस प्रकार के सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दों या प्रतीकों को इसी प्रकार रखा गया है। परन्तु कुछ शब्दों का अर्थ कोष्ठक या पाद-टिप्पणी में नहीं दिया गया है। इनका अर्थ स्पष्ट हो जाए तो पाठक को निकट समतुल्य का पता लग जाएगा। इससे मूल गंध भी रहेगी और पाठक को स्थानीय सूक्ष्मताओं की जानकारी भी मिलेगी।

3.2 सांस्कृतिक विश्लेषण : रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज़, उत्सव, स्थानिय विशेषताएँ, मुहावरे, लोकोक्ति एवं देशज प्रयोगों का अध्ययन

संस्कृति मनुष्य का वह समस्त सचेतन और सामूहिक क्रियाकलाप है, जो उसे प्रकृति की अचेतन व्यवस्था पर सोददे्श्य नियंत्रण स्थापित करने की क्षमता प्रदान करता है। ''संस्कृति का अर्थ है समस्त सीखा हुआ व्यवहार। संस्कृति समुदायों के रहन-सहन, उनके आचार-विचार-संस्कार और सुख दु:ख में जीने की सामूहिक परम्पराओं का विकास है। संस्कृति समुदायों के जीवित होने का अहसास है....''[42]

विश्वयुद्ध के बाद कोई देश अपनी लम्बाई-चौड़ाई मीलों में नहीं नापता। विश्व अब सीमित-सा हो गया है। इसी प्रकार भाषिक तथा सांस्कृतिक व्यापकता भी सिमट गयी है। नेपाली तथा भारतीय दोनों संस्कृतियाँ भी काफ़ी मिलती-जुलती हैं। अनूदित पाठ 'ब्रह्मपुत्र के आसपास' में कई सांस्कृतिक शब्दों को वैसे-का-वैसा रख दिया है, क्योंकि दोनों की संस्कृति काफ़ी मिलती-जुलती हैं। अनूदित कृति के कुछ सांस्कृतिक शब्द है .'कुलदेवता' (पृ.10), 'श्वेत चंदन' (पृ. 83) 'कन्यादान' (66) 'कुश का जनेऊ' (83), 'अग्निशिखा' (पृ.7) आदि।

मूल कृति में कई नेपाली खान-पान की वस्तुओं के नाम गिनाए गए हैं। कुछ तो ऐसे हैं जो केवल नेपालियों के अपने पकवान हैं, कुछ असमिया लोगों के पकवानों के भी नाम गिनाए गए हैं। इन खान-पान की सामग्री के नामों का कहीं-कहीं सही अनुवाद नहीं हुआ है, जैसे . 'सेल रोटी' (55) इसका अनुवाद केवल 'मीठी रोटी' किया गया है, जो कि उचित नहीं हैं और न ही इसकी व्याख्या या टिप्पणी में इसका अर्थ समझाया गया है। इसे अनूदित पाठ में भी 'सेल रोटी' रखते तो अधिक सटीक होता क्योंकि यह नेपाली लोगों के संस्कृति के एक हिस्से के समान है। हर पर्व या त्योहार में यह पकवान बनता ही है। इसके बिना खाना या पर्व पूर्ण नहीं लगता। 'दशहरा' जिसे

[42] भाषा, संस्कृति और समाज, डॉ. सोहन शर्मा, डॉ. श्रीमती शर्मा, उमाकांत स्वामी, पृ. 11

नेपाली में दसई और कालीपूजा को 'तिहार' कहते हैं, इन त्योहारों में 'सेल रोटी' एक प्रमुख पकवान के रूप में पकाया जाता है।

साथ ही एक अन्य 'फिलुंगे भर तीलको अचार'[43] का हिंदी अनुवाद किया गया है . 'कुतरूम और तिल का आचार'[44]। इसका अनुवाद कर देने से इसकी आवश्यकता का पता नहीं चलता।

एक अन्य खाने की वस्तु 'लिटो र पीठो' का अनुवाद लक्ष्य पाठ में गलत किया है 'लप्सी और मीठा' लिटो यानी (maize) 'मकई' के आटे को कहते हैं तथा पीटो यानि पीठा जो मकई के आटे से बनता है। उसको वैसे ही रखना चाहिए था, तथा इसकी व्याख्या करना ठीक होता। असम में बिहु पर्व के दौरान 'तिल पीठा' (पृ. 46) बनाया जाता है, जो मूल पकवान है। अनुवादक ने इसका कोष्ठक में अर्थ इस प्रकार दिया है . (चावल के पीठे में तिल मिलाकर बनाई गई एक चपटी रोटी) जिससे हिंदी पाठक को उसका अर्थ समझने में सुविधा हुई है।

उक्त कृति में अनेक खान-पान की सामग्री का वर्णन है। जैसे .

अनूदित शब्द	मूल शब्द
लिट्टी / पृ. 10	ढिढ़ो-पीठो / पृ. 12
चिउड़ा / 14	चिउरा / 12
खोआ / 14	कुराउनी / 12
सूखा आचार / 14	फिलुंगे को धुले अचार / 16

हर प्रदेश की अपनी संस्कृति होती है तथा उसकी अलग विशेषताएँ होती हैं, जो उसकी भाषा में अभिव्यक्त होती हैं। ऐसे शब्दों का अनुवाद एक जटिल कार्य है, क्योंकि

---

[43] मूल पाठ, पृ. 55

[44] अनूदित पाठ, पृ. 55

किसी विशिष्ट भाषा में एक विशेष प्रदेश की संस्कृति सुरक्षित होती है। उस संस्कृति की प्रतीति उसी भाषा से होती है, किसी दूसरी भाषा से नहीं। विषम सांस्कृति भाषाओं में तो यह समस्या आती ही है, परन्तु सम-सांस्कृतिक भाषाओं में भी इनको अनूदित करना काफ़ी जटिल कार्य है।

मूल कृति में 'नौमती बाजा' (पृ. 55) शब्द का प्रयोग है। अनूदित पाठ में इसे 'नौबत बाजा' (पृ.55) ही रखा गया है क्योंकि दोनों ही विषम समाजों में इसका एक-सा व्यवहार है। 'नौबत बाजा' शादी में बजाया जाता है। नेपाल में 'नौबत बाजा' केवल 'दमई' यानि छोटी जाति के लोग बजाते हैं। मूल पाठ में 'चांगघर' (पृ. 54) शब्द का अनेक बार प्रयोग हुआ है और अनूदित पाठ में इसके लिए हर जगह अलग-अलग शब्दों को रखा गया है, जिसके कारण कभी-कभी पाठक इसे समझने में नाकाम हो जाता है। कहीं पर 'मचान घर'(24) कहीं 'ऊँचे-ऊँचे घर' (55) आदि। इसे अनूदित पाठ में भी 'चांगघर' ही रखना चाहिए था। क्योंकि इससे लक्ष्य भाषा के पाठक अन्य संस्कृति के साथ-साथ अन्य भाषा के शब्दों से भी अवगत हो जाता। शब्दों की संरचना में भी सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य छिपे होते हैं। यदि अनुवादक इन मूल्यों को समझे बिना अनुवाद करें, तो सफल नहीं हो सकता। सांस्कृतिक निकटता के आधार पर उपर्युक्त शब्दों जिनका विश्लेषण किया गया है उनकी व्याख्या करना आवश्यक है। परन्तु अनुवादक को उनके संप्रेषण के लिए स्रोत और लक्ष्य भाषा की संस्कृति का समुचित ज्ञान अति आवश्यक है। इसको इसी रूप में रखकर पाद-टिप्पणी द्वारा व्याख्या की जा सकती है। जैसे. 'चांगघर' एक ख़ास किस्म का घर होता है। बाँस से बने ऊँचे बड़े घर को कहते हैं। इस तरह के घर बनाने का भी एक कारण यह है कि इन जगहों में बाढ़ की भारी समस्या है, तो बाढ़ से बचने तथा साँप, कीड़े-मकौड़ों आदि से बचने के लिए इन घरों का निर्माण किया गया। परन्तु आज भी असम के कई जगहों पर जहाँ बाढ़ की समस्या नहीं भी है, वहाँ भी ऐसे ही घरों में कई जनजातियों के लोग

रहते हैं। 'चांगघर' कुंदे के सहारे बहुत बड़े-बड़े घर बनाए जाते हैं। 'चांगघर' मुख्यतः जनजाति के घरों का प्रतीक है।

अनूदित पाठ में 'डाँगरिया की पूजा' (पृ. 55) का उल्लेख है। जो हू-ब-हू मूल पाठ की तरह रख दिया गया है। जिसे हिंदी पाठक को समझने में कठिनाई होती है। स्रोत भाषा नेपाली है, परन्तु यह शब्द मुख्यतः असमिया है क्योंकि लेखक असम से संबंधित नेपालियों का वर्णन कर रहे हैं। लेकिन इसका अनुवाद हो सकता था। 'डाँगरिया की पूजा' यानि 'वन देवता की पूजा'।

मूल कृति में अनेक मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। अनुवादक काफ़ी हद तक उनका सही तथा निकटतम रूप हिंदी में रखने में सफल हुआ है।

मूल	पृष्ठ	अनूदित	पृष्ठ
अहिले तेरा दारी कपाल खोरेर राखिदिऊला नि।	15	अभी तुम्हारी हजामत कर दूँगा।	13
अंधकारमा राँको फेला पारे झैं	17	अंधकार में पत्थर फेंकने की तरह	15
मनमा चिसो पस्यो	25	मन बैठ जाना	24
मणी हराएको सर्प जस्तै	26	मणि खोए सर्प की तरह	26
हावामै फुल्यो	28	हवा में फूलना	27
आफनो बिलौना पोख्यो	29	अपना रोना रोया	28
पानीमा डुब्न आँटेकोले तृण समाते झै	36	डूबते को तिनके का सहारा	35

चिंता नै चिता हो	38	चिंता ही चिता है	38
उही काल त रहेछ	38	काल के गाल में समाना	37
हात धोएर लागेकी छयो	48	हाथ धोकर पीछे पड़ गई	47
हात बाँधेर बस्न	50	हाथ बाँधकर बैठने	49
जस्तो पर्ला उस्तै टर्ला	52	जैसा होगा, देखा जाएगा	52
जसको सिता खायो, उसैको गीता गायो	59	जिसकी खीर खाई, उधर ही थिर रहे	60
डाडु पन्युं जसको हातमा छ त्यसैलाई जदौ गरेकै भलो हो	59	जिसकी लाठी, उसकी भैंस	60
स्वरमा स्वर मिलाउन	62	स्वर में स्वर मिलाना	63
हलमा गोरू नारिए जस्ता जोड़ी	70	हल में बैल की जोड़ी की तरह	71
छाड़ा छोडको साँढ झै	70	छुट्टे साँढ़ की तरह	72
जस्ले जस्तो गर्छन् त्यस्तै पाउँछन	71	जो जैसा करेगा वैसा पाएगा	72
निकै झुम्का लाएर	71	मिर्च-मसाला लगाकर कहना	72
सिंग न पुछारका कुरा	71	बिना सींग-पूँछ की बात	72
कुरालाई हवामा उड़ाउने	75	बात को हवा में उड़ाना	76
लंकामा सून छ कान मेरो बुच्चै	86	लंका में सोना है, मेरा कान सूना	87

है

जालोभित्र पसिसकेको माखो	106	जाल में फँसी मछली	108
कान खाइसके	114	कान खा गये	117
अभावे स्वभाव नष्ट	130	अभाव में स्वभाव नष्ट	135
कानमा तेल हालेर ढुवक सुत्छन	134	कान में तेल डालकर सोया	138
ऐया भन्न पाइयो न आथो भन्न पाइयो	135	'ईस' बोल सकोगे न 'बीस'	140
बिना मुकुटका राजा	138	बिना ताज का राजा	142
कुकूरले पुच्छर हल्लाउँदाझैं	141	कुत्ते की तरह पूछ हिलाते	146
खिल्ली उड़ाउँछौ	146	खिल्ली उड़ाना	151
बाउको बिहे देखोस् न हरियाले	152	बाप का ब्याह देखे न पाजी	157
लगाम बिना को घोड़ा	155	बेलग़ाम घोड़े	160
आगोमा घिउको काम	159	आग में घी का काम	164
हातगोड़ा त्यसै गलेर आएका	160	हाथ-पैर ही ठंडे पड़ गये	165
उम्केको माछो ठूलो	167	भागी हुई मछली जैसे बहुत बड़ी बात	172

प्रस्तुत उपन्यास मूलतः ग्रामीण परिवेश पर आधारित है। इसमें अनेक देशज शब्दों का प्रयोग मिलता है।

मूल	पृष्ठ	अनूदित	पृष्ठ
हतार	8	हड़बड़ी	7
खलबली	11	खलबली	7
गुट्मुटियो	14	उलझ-पुलझ	12
चुलो सल्काउन	13	चूल्हा सूलगाने	11
खचाखच	15	खचाखच	13
कुच्चुक्क	15	सिकुड़कर	13
बढ़ार-कुँढ़ार	18	झाड़-बुहार	16
छट्पटिन्छ	21	छटपटता	20
झर्किन्	21	झुझलाई	20
गुनगुनाइरहेको	22	गुनगुनाते	21
झोक्रेट	26	उकडूँ	25
तलब सलब	26	तलब सलब	26
बिग्रेंदैगयो	27	गड़बड़ाता	26
फ्वा	27	फायँ-फायँ	26
मुला थोत्रो	28	पुराना-घुराना	27

बुझु सुझनु	28	बूझता-सूझता	27
ननिमोठे	29	उमेठे	28
आले टाले	30	आल-टाल	29
लठेप्री	35	बोदी	34
अधियाँ	35	अधिया	35
झुम्रो	38	चिथड़ा	37
हपारे	39	फटकारा	39
चेब्राइँ	43	ठकुरसुहाती	42
फाटक	45	फाटक	44
गोहाली घर	45	गुहाल	44
ताँती	50	करघा	49
जाँतो	50	जाँता	49
झड़पा-झड़पी	55	झड़प	56
ओगट्ने	57	छेकने	58
टुटुलको	58	टेटर	59
थुमथुम्याएर	59	थपथपाकर	60

गलगिछ	65	ठूँस-ठूँसकर	66
ख्वारमा	68	अड़गड़ा	67
टुहुरो	70	टूअर	71
लाठे	86	बौड़म	87

दोनों भाषाएँ विषम समाजों से जुड़ी हुई होने पर भी, दोनों की संस्कृतियों में काफ़ी साम्य है। जैसे . मूल कृति में 'बेउलाको घर रत्तेली खेल्छन' (पृ. 55) दिया है। लक्ष्य पाठ में इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है 'औरतें दूल्हे के घर मर्द वेश में अश्लील नृत्य करती हैं।"(पृ. 55) इसी तरह भारतीय विवाह से संबंधित एक अनुष्ठान 'मेंहदी' में औरतें अश्लील नृत्य तो नहीं करती, पर लड़कों की पोशाक में हँसी-मज़ाक करती हैं। नेपाली परंपरा और संस्कृति में 'डाँगरिया की पूजा' (पृ. 55) यानि 'वन देवता' की पूजा की जाती है। इसी तरह भारत की भी जनजातियाँ आज भी 'डाँगरिया' की पूजा करती हैं। यह असमिया पद है।

नेपाली और भारतीय संस्कृति की समानता का एक अन्य उदाहरण इन पंक्तियों से मिलता है "यहाँ बलि के खूँटे की पूजा होती है, पशुशाला में धूप जलाई जाती है...। "(पृ. 55) असम तथा अन्य पूर्वी राज्यों में आज भी पशु-बलि, पूजा-त्योहारों में दी जाती है और जिस खूँटे में बलि दी जाती है, उसकी पूजा होती है। नेपाल तथा भारत दोनों ही देशों में 'गाय' माता के रूप में जानी जाती है। इसलिए भी पशुशाल में धूप जलाई जाती है। साथ ही, नेपालियों या किसी भी ऐसे व्यवसाय से जुड़े लोग, इसी कारण भी लक्ष्मी-पूजा हेतु पशुशाला में धूप जलाते हैं। अनेक शब्दों को हू-ब-हू मूल पाठ की तरह ही रखा गया है, क्योंकि नेपाली और हिंदी भाषा काफ़ी मिलती है। अनुवादक को

अनुवाद करने में इससे सुविधा हुई है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं . टोपी, धोती, विकराल, मोक्ष, प्रतिवाद, गोधूली, प्रतिवाद इत्यादि।

अनूदित पाठ में अनेक विदेशी शब्दों का अनुवाद न करते हुए, उन्हें मूल की तरह ही रख दिया गया है, जिसकी सूची यहाँ दी जा रही है .

विदेशी (अंग्रेज़ी)

	पृष्ठ		पृष्ठ
स्टेशन	12	कमेटी	63
ट्रक	12	कफ़	63
प्लेटफॉर्म	13	हेडमास्टर	65
बेंच	13	डेस्क	86
मैनेजर	17	बिल्डिंग	87
डेयरी	17	क्लास	88
कॉलेज	17	अपर असम	89
कोट	23	ट्रावल बेल्ट	95
मिलिटरी	27	टेस्ट	98
हाईस्कूल	30	रिक्रूटिंग ऑफिस	126
मैट्रिक	31	प्लाटून	126
फोरेस्ट	51	लेफ्टिनेंट	128

गोर्खालीग	56	मेजर	185
		साईन बोर्ड	176

उर्दू शब्द

	पृष्ठ		पृष्ठ
मज़ाक	13	इज़हार	163
ग़रीब	25	ज़ाहिर	163
सिफ़ारिश	62	फिराक	163
लिफ़ाफ़ा	68	ज़ब्त	165
हुजूर	73	हर्ज़	93
मर्ज़ी	73	खुशामद	56

विश्लेष्य रचना 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' के हिंदी अनुवाद 'ब्रह्मपुत्र' के आस-पास' दोनों का सांस्कृतिक विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि मूल एवं लक्ष्य के तौर पर नेपाली और हिंदी दोनों की भाषा ही केवल भिन्न है, परन्तु रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज़, त्योहार यहाँ तक कि देशज शब्दों के प्रयोग भी काफ़ी मिलते-जुलते हैं।

3.3 पाठाधारित समस्याएँ : लोप एवं संयोजन

मूल पाठ में जो अर्थ व्यंजित होता है, लक्ष्य पाठ में या दूसरी भाषा में सदैव वैसा ही अर्थ व्यंजित कर पाना कभी-कभार संभव नहीं होता। यानि जब मूल पाठ की संकल्पना का अंतरण अनूदित पाठ में किया जाता है, तब अनुवाद 'अनुरूप' न होकर 'समतुल्य' होता है। क्योंकि अनूदित पाठ में या तो कुछ छूट जाता है या कुछ जुड़ जाता है। विश्व की कोई भी दो भाषाएँ अपनी शब्दावली या व्याकरण में समान नहीं होती, इसलिए कई बार अनुवाद करते समय कथ्य को संप्रेषित करने के लिए अनुवादक को अपनी तरफ़ से कुछ जोड़ना या छोड़ना पड़ता है। भाषिक संरचना तथा सांस्कृतिक मूल्यों की भिन्नता, समतुल्य शब्दों का अभाव आदि के कारण भी ऐसा करना आवश्यक हो जाता है। इसे लोप एवं संयोजन का सिद्धांत (Theory of loss and gain) कहा जाता है। यह नाइडा द्वारा प्रस्तावित किया गया था।

लोप : अनुवाद में कई कारणों से लोप की स्थिति उत्पन्न होती है। स्रोत भाषा में ऐसी कई अवधारणाएँ होती हैं जो लक्ष्य में अनुपस्थित होती हैं। इनका अनुवाद करना बहुत कठिन है इसलिए कभी-कभार अनुवादक इसे छोड़ देता है। साथ ही, कई बार ऐसा भी होता है कि लक्ष्य तथा स्रोत दोनों भाषाओं की अवधारणाएँ काफ़ी साम्य रखती है। इस समीपता के कारण अनुवादक ऐसी अवधारणाओं या शब्दों के प्रतिशब्द के तौर पर प्रयोग करता है। परन्तु इस प्रक्रिया में कुछ सूचनाओं का लोप हो जाता है।

मूल पाठ में "मलामीको खलबल।" (पृ. 10) के अनुवाद में "साथ आए लोगों के बीच तरह-तरह की बातें।" (पृ. 8) किया गया है, जो सर्वथा सटीक नहीं है।

प्रस्तावित पाठ . शवयात्रा में उपस्थित लोगों में कोलाहल मचा है।

मूल पाठ में एक अन्य स्थान पर "एक जना बाजेले गुमानेलाई बोलाए, 'लू यो बाती सल्का, बाउलाई दागबत्ती दिनुपर्छ।'(पृ. 10) है। 'बाजेले' जिसका अर्थ होता है 'दादा', 'नाना' या 'ब्राह्मण' के लिए आदरपूर्वक संबोधन परन्तु अनुवाद में इसके लिए

'आदमी' (पृ. 8) शब्द दिया गया है, जो सटीक नहीं है। यहाँ पर 'बाजे' शब्द को भी रखा जा सकता था। क्योंकि आगे अनूदित पाठ में कई जगहों पर 'बाजे' शब्द रखा गया है। मूल कृति के पृ. 15 में "उसलाई लक्ष्य गरेर सिख पलटनेहरूले आफ्नै भाषामा कुरा काटे।" अनूदित पाठ में "उसे लक्ष्य करके एक दो फ़ौजियों ने अपनी भाषा में मज़ाक किया।" (पृ. 13) इसका अनुवाद करते समय 'सिख पलटन' के स्थान पर 'एक दो फ़ौजियों' कर दिया गया है, जो सरासर ग़लत है।

मल पाठ . "....महखुटी भन्ने एउटा निकै ठूलोगाउँमा पर्छ।" (पृ. 19)

अनूदित पाठ . "...महखुटी नामक एक अच्छे गाँव में है।" (पृ. 17)

यहाँ पर 'ठूलो' के स्थान पर 'अच्छे' का प्रयोग सटीक नहीं है। क्योंकि 'ठूलो' यानी 'बड़ा' है तथा 'बड़ा' का पर्याय 'अच्छा नहीं हो सकता'।

मूल पाठ . "... नसकिने रिमरिम उज्यालो हुँदा..." (पृ. 30)

अनूदित पाठ . "...अपने पराए का भेद न करने वाला उजाला...." (पृ. 29)

यहाँ 'रिमरिम' यानि 'धीमा-धीमा' अर्थ पूरी तरह छूट गया है।

मूल पाठ . "ए रा ! तिमिले दिन रात...." (पृ. 45)

अनूदित पाठ . "ए लो! तुम दिन रात..." (44)

'ए रा' शब्द असमिया का है। इसका प्रयोग पति-पत्नी एक-दूसरे को बुलाने के लिए करते हैं। इसका हिंदी अनुवाद 'ए जी!' होना चाहिए था।

मूल पाठ . "साँझ पनि मालतीलाई श्रीमती काकतीले पढ्न बसाउँछिन्..."(46)

अनूदित पाठ . "शाम को भी काकती बाबू मालती को पढ़ाने बैठते हैं...."(45)

अनुवाद में भी 'श्रीमती काकती' होना चाहिए था।

मूल पाठ . "तँलाई यो रूपमा देखूँला भन्ने भाबेकै (चिताएकै) थिएनँहिङ्भित्रै"(121)

अनूदित पाठ . "तुम्हें इस रूप में देखूँगा, ऐसा मैंने सोचा नहीं था।"(125)

यहाँ पर 'हिङ्भित्रै' छूट गया है। हिङ्भित्रै का अर्थ है 'अन्दर चलो'।'

मूल पाठ . "म जे. सी. ओ...."(122)

अनूदित पाठ . "मैं आर्मी आफ़िसर..."(126)

यहाँ अनूदित पाठ में यदि 'जे.सी.ओ.' ही रखते तो अधिक सटिक होता। यहाँ 'पद' या 'ओहदे' का उल्लेख है। 'जे.सी.ओ' यानि 'जूनियर कमिशन ऑफ़िसर' (Junior Commission Officer)। दोनों में अंतर है।

अनूदित कृति में कुछ वाक्यों और कहीं कहीं पूरे अनुच्छेद का अनुवाद हुआ ही नहीं है, ऐसे कुछ वाक्यों के अनुवाद उनके मूल पाठ के साथ नीचे दिए जा रहे हैं .

मूल पाठ . "महाजनको नाउँ केशर बहादुर खुलाल हो तापनि उनी डायरीवाला महाजनको उपनाउले सबैमा परिचित छन।"(पृ. 20)

प्रस्तावित . महाजन का नाम केशर बहादुर खुलाल है, फिर भी उन्हें डेयरीवाला महाजन के उपनाम से सभी जानते हैं।

मूल पाठ . "गुमानेको हर्षको सीमा छैन। उसलाई पढ़्ने ठूलो इक्छा छ।"(पृ. 35)

प्रस्तावित पाठ . गुमान के हर्ष की सीमा नहीं है। उसे पढ़ने की बड़ी इच्छा है।

मूल पाठ . "मानवीर। खिसिक्क हास्यो र ....." (पृ. 39)

प्रस्तावित पाठ . मानवीर मुस्कुराया और .....

मूल पाठ . "नोकरी को खोजमा उ बेला-बेला शहर गइ ने रहन्छ। तर नौकरी फेला परेको छैन।" (पृ.64)

प्रस्तावित पाठ . नौकरी की खोज में वह समय-समय पर शहर जाता रहता है। पर उसे नौकरी ही नहीं मिली है।

मूल पाठ . "भोलिपल्ट बेलुका, महाजन र गुमाने दुबै तीनसुकियाबाट छुट्ने मेलमा चढ्छन। महाजनको जेठो छोरो, कान्छा महाजन दुवै तीनसुकिया स्टेशनसम्म पुप्याउन आउँछन्।" (पृ. 98)

प्रस्तावित पाठ . दूसरे दिन शाम को महाजन और गुमान दोनों तीनसुकिया से जानेवाली मेल में चढ़ते हैं। महाजन का बड़ा बेटा, छोटा महाजन दोनों ही उसे तिनसुकिया स्टेशन में पहुँचाने आते हैं।

मूल पाठ . "अरू आफिसर त खोई आफूपछि बसेर सिपाहीलाई अधि बढ़ने आदेश दिन्थे। भरसक आफ्नो जिउ जोगाउने फेरमा रहन्थे। तर म त क्या नाम नेपाली को वीरताले तानेको हो वा हाम्रो रगतै त्यस्तो हो....।"(पृ. 122)

प्रस्तावित पाठ . दूसरे अफसर तो स्वयं पीछे बैठकर सिपाही को आगे बढ़ने का आदेश देते हैं। भरसक अपने (शरीर) को बचाने के फेर में रहते थे। पर मैं तो नेपाली की वीरता के नाम से ही आकर्षित होता हूँ या हमारे खून मे ही वैसा है।

मूल पाठ . "खई निद्राभित्रको आनन्द पो के आनन्द भन्नु ? मुड़ चेतनारहित, क्रियाहीन, गतिहीन। शून्यले जब आकार लिन्छ, आकारभित्र जब चेतना जन्मन्छ, सुख-दुःख को अनुभव त्यतिखैरबाट हुन्छ। यो अनुभवै गर्न नसकिने आनन्दमा केही आनन्द छैन, देउता। म ता आनन्द यही जीवनमै देख्छु जहाँ सुख-दुःखको अनुभव हुन्छ। हाँस्न पाँउदा हामी आनन्द मान्छौं किनकि हामी रोएका हुन्छौं। रून पर्दा हामी हाँसोको अनुभूति सँगेट्छौं। चैतन्यरहित आनन्दलाई कसरी आनन्द मान्नु? ढड़लाई के आनन्द, के सन्ताप!" (169)

प्रस्तावित पाठ . नींद के अंदर आनंद को क्या आनन्द कहे ? चेतनारहित, क्रियाहीन, गतिहीन। शून्य जब आकार लेता है, आकार के अंदर जब चेतना जन्म लेती है, सुख-दुःख का अनुभव तभी से होता है। इस अनुभव का आनन्द न कर सकने पर कोई आनन्द नहीं, पिताजी। मैं तो आनन्द इसी जीवन में देखता

हूँ, जहाँ सुख-दुःख का अनुभव है। जब हमें हँसने को मिलता है, तो हमें आनन्द मिलता है, क्योंकि हम रोते हैं। जब हम रोते हैं, तब हम हँसने की अनुभूति को समेटते हैं। चैतन्यरहित आनन्द को कैसे आनन्द मान लूँ! पत्थर के लिए कैसा आनन्द, कैसा संताप!

मूल पाठ . "बिस्तारै अब उ डॉक्टरको निकट आउन डराउन थालेकी छ।" (पृ. 119)

प्रस्तावित पाठ . धीरे-धीरे अब वह डॉक्टर के निटक आने से डरने लगी है।

नेपाली पाठ में एक स्थानीय असमिया शब्द 'मेखला चादर' का प्रयोग किया गया जिसका अर्थ कोष्ठक में दिया गया है। परन्तु अनुवादक ने उसका अनुवाद नहीं किया। अनुवाद करते तो लक्ष्य भाषा के पाठक को पढ़ने में अधिक सुविधा होती। मूल पाठ इस प्रकार है .

मूल पाठ . "(पाटले ताँतमा बनेको एक प्रकारको लुंगी जो आसामे स्वास्नीमानिसले गुन्यूँको रूपमा व्यवहार गर्छन।)" (पृ. 70)

प्रस्तावित पाठ . रेशम से तन्तु में बनने वाली एक प्रकार की लुंगी जो असमिया औरतें गुन्यूँ के रूप में व्यवहार करती हैं।

'गुन्यूँ' एक नेपाली स्थानीय शब्द है इसके अनुवाद के स्थान पर इसे इसी रूप में रखा जा सकता है केवल इसके अर्थ की टिप्पणी कर देना आवश्यक है। 'गुन्यूँ' यानि घाघरा या लहँगे की क़िस्म का एक परिधान, जो महिलाएँ पहनती हैं।

मूल पाठ . सभापति भने एकजना आछामे सज्जन छन् : हेडमास्टर स्वयं समिति का सचिव छन।' (61)

प्रस्तावित पाठ . सभापति एक असमिया सज्जन है : हेडमास्टर स्वयं समिति के सचिव हैं।

मूल पाठ में 'आमा छैनन' इसका अनुवाद नहीं किया गया। (पृ. 74)

प्रस्तावित पाठ . माँ नहीं है।

मूल पाठ . "तर गाउँ घरमा, साधारण अशिक्षित जनतामाझ यसतै कुरा महत्त्वपूर्ण ठहरिन्छ। उनोहरूको माझ गुमाने र मालतीको चर्चा एउटा मनोविनोदको वस्तु बनेको छ।"(पृ. 77)

प्रस्तावित पाठ . लेकिन गांव घर में, साधारण अशिक्षित जनता के बीच ऐसी बात महत्त्वपूर्ण ठहरती है। उन लोगों के बीच गुमान और मालती की चर्चा एक मनबहलाव की वस्तु बन गई है।

मूल पाठ . "उता टावाङ्ग र बमदिलाका तिब्बतीहरू डिब्रुगड़तिरबाट गौहाटी आइपुगे।" (पृ.150)

प्रस्तावित पाठ . वहाँ तावाङ् और बमदिला के तिब्बती लोग डिब्रुगढ़ की ओर से गौहाटी आ पहुँचे।

अनूदित पाठ में किसी-किसी स्थान पर एक-दो शब्द छूट गए है, जिससे अर्थ में बहुत हानि नहीं पहुँची है। मूल पाठ के कुछ शब्द जिनका अनुवाद नहीं हुआ है, इस प्रकार है .

मूल पाठ	अर्थ
कलिली (पृ. 70)	कली
होइन प (70)	ऐसा नहीं है
ढाँचामा (97)	अंदाज़, तरीका
दूधको (111)	दूध का
त्यसको (123)	उसके
रांगा (133)	भैंसा, महिष

मालतीको उत्तर (153)	मालती का उत्तर
वर्षमा (127)	वर्षा में
अँ (159)	हाँ
त्यसो भए (171)	ऐसा होने पर, ठीक है फिर

साथ ही अनेक व्यक्तिवाचक/संज्ञा शब्दों का लोप हुआ है। जैसे .

महाजन (पृ. 66),	नारायण (70)
बाजेले (पृ. 99)	मालती (144)
उत्तम (पृ. 154)	बोपाई (166)
देउता (170)	लेदु (94)

संयोजन

अनुवाद कार्य में कभी-भी पूर्ण अनुवाद कर पाना संभव नहीं होता। अनुवाद करते समय कुछ शब्दों का कभी लोप हो जाता है या कभी वाक्य में बल देने के कारण तथा वाक्य और स्पष्ट करने हेतु कुछ शब्द का संयोजन भी किया जाता है। प्रस्तुत अनुवाद में अल्प मात्रा में ही सही कुछ सामान्य शब्दों को जोड़ा गया है। वे निम्नलिखित है .

मूल पाठ . "यसरी यी दुइजनाको बिहान सखारै ब्रह्मपुत्रको खेउसम्म डुलेर फर्कने कार्यक्रम बनेको छ।" (पृ.74)

अनूदित पाठ . "इस प्रकार, इन दोनों का सुबह खूब सवेरे ब्रह्मपुत्र के किनारे तक घूमकर आने का कार्यक्रम बना।" (पृ. 75)

'खूब' शब्द जोड़कर यहाँ सवेरे पर बल दिया गया है, लेकिन 'खूब़' के बदले यहाँ 'बड़े' (बड़े सवेरे) शब्द अधिक उपयुक्त होता।

मूल पाठ . "महाजनलाई आउन देऊ।" (67)

अनूदित पाठ . "बोले कि महाजन को आने दो।" (68)

इस वाक्य में 'बोले कि' जोड़ा गया है।

मूल पाठ . "बिहारी मास्टर थियो एउटा....।" (पृ. 83)

अनूदित पाठ . "एक बिहारी मास्टर था एक...।".(पृ. 84)

इस वाक्य में दो बार 'एक' शब्द का प्रयोग हुआ है। दूसरा अनावश्यक है।

मूल पाठ . "नुहाई सक्ने हुल अब फर्कने तरखरमा छन् अनि नयाँ नयाँ हुल, आई नै रहेका हुन्छन्।" (पृ. 90)

अनूदित पाठ . "स्नान समाप्त करने वाली भीड़ अब लौटने की तैयारी में थी और नई-नई भीड़ आती-जाती थी।" (पृ. 92)

मूल वाक्य में 'आई' यानि 'आना' का प्रयोग मात्र है। परन्तु अनुवाद में 'जाती' शब्द जोड़ा गया है।

मल पाठ . "अचेल धेर जसो गुमानेले नै आफ्ना वस्तु भाउको हेर विचार गर्छ। आफ्ना बाबुको पनि उ ध्यान राख्छ।" (38)

अनूदित पाठ . "आजकल ज़्यादातर गुमाने ही अपनी चीज़ों की देखरेख करता है, साथ ही अपने पिता का भी ध्यान रखता है।"(पृ. 37)

उपर्युक्त वाक्य में 'साथ ही' शब्द से दो वाक्य को जोड़ा गया है।

मूल पाठ . "जिम्मा लिएँ भनिदिनुहोस्" (पृ. 39)

अनूदित पाठ . "कृपया कह दीजिए कि मैंने ज़िम्मा लिया....।"(पृ. 39)

इसमें 'कृपया कह दीजिए कि' जोड़ा गया है परन्तु इससे वाक्य में कोई हानि नहीं पहुँची है। वाक्य और निखर आया है।

3.4 प्रस्तावित पाठ

नेपाली पाठ से अनुवाद करते हुए सुरेन्द्र प्रसाद साह ने जहाँ तक हो सका है, इसका उचित अनुवाद किया है, परन्तु कहीं-कहीं हिंदी अनुवाद में भी उन्होंने नेपाली भाषा शैली ही रख दी है, जो कि हिंदी भाषा के अनुरूप नहीं है। यहाँ इस प्रकार के वाक्यों के लिए प्रस्तावित पाठ प्रस्तुत है।

मूल पाठ . "...महखुटी भन्ने एउटा निकै ठूलो गाउँमा पर्छ।" (पृ. 19)

अनूदित पाठ . "...महखुटी नामक एक अच्छे गाँव में है।" (पृ. 17)

प्रस्तावित पाठ . ...महखुटी नामक एक बड़े गाँव में है।

मूल पाठ . "...मानिसको गन्धबाट टाढ़ा रहन खोज्ने यिनलाई पनि यसवेला जीवनको मोहले मानिसकै आश्रय बाध्य गराउँछ।"(पृ. 20)

अनूदित पाठ . "...मानुष गंध से भी दूर जगह खोजने वाले ये भी प्राणी इस समय जीवन के मोह के कारण मनुष्य का आश्रय लेने को बाध्य हो जाते हैं।" (पृ. 18-19)

प्रस्तावित पाठ . ...मनुष्य की गंध से भी दूर जगह ढूँढ़ने वाले ये भी इस समय जीवन के मोह के कारण मनुष्य का आश्रय लेने को बाध्य हो जाते हैं।'

मूल पाठ . "अलिकति दूध भए दिनुहुन्थ्यो कि ?" (पृ. 21)

अनूदित पाठ . "जरा-सा दूध देगी क्या ?" (पृ. 20)

प्रस्तावित पाठ . क्या थोड़ा-सा दूध दे सकती हैं ?

मूल पाठ . "भोलीपल्ट महाजनसित कुरा गर्नु पर्ला' भन्ने विचार गरी उ पल्टन्छ।" (22)

अनूदित पाठ . "कल महाजन से बात करनी होगी सोचकर वह लौट गई।" (21)

प्रस्तावित पाठ . 'कल महाजन से बात करनी होगी', सोचकर वह लेट गया।'

मूल पाठ . "केही बेरपछि आँग तान्दै सुब्बाले फेरि भन्यो....।" (24)

अनूदित पाठ . "कुछ देर बाद शरीर को तानते हुए सुब्बा फिर बोला....।" (23)

प्रस्तावित पाठ . कुछ देर बाद देह को तानकर ख़िसकाते हुए सुब्बा फिर बोला....।

मूल पाठ . "हिंडयो पो होला त्यो पनि!" (26)

अनूदित पाठ . "जाने पर ही न भेंट भी होगी।" (25)

प्रस्तावित पाठ . चली गई होगी वह भी अभी।

.अभी वह भी चली गई होगी।

मूल पाठ . "मेरा जात, तेरो जात भन्ने पनि केही रहेन छ।" (39)

अनूदित पाठ . "मेरी और आपकी जाति अलग-अलग है।" (38)

प्रस्तावित . मेरी जाति, तुम्हारी जाति कहने के लिए कुछ भी नहीं है।

मूल पाठ . "...महाजन गुमानेप्रति मनमनै रॉंकिए।" (43)

अनूदित पाठ . "...महाजन गुमान के प्रति मन-ही-मन गुस्सा गये।" (42)

प्रस्तावित पाठ ....महाजन गुमान के प्रति मन-ही-मन नाराज़ हो गए।

मूल पाठ . "ए रा ! तिमीले दिन रात यसरी परिश्रम गरयौ भने तिम्रो रोग फेरी बल्झन बेर हुँदैन।" (पृ. 45)

अनूदित पाठ ."ए लो, तुम दिन-रात परिश्रम करोगी तो तुम्हारे रोग को फिर बढ़ने में देर नहीं लगेगी।" (44)

प्रस्तावित पाठ . ए जी! तुम दिन-रात मेहनत करोगी तो तुम्हारा रोग फिर बढ़ने में देर नहीं लगेगी।

मूल पाठ . "साँझ पनि मालतीलाई श्रीमती काकतीले पठ्न बसाउँछिन्...।" (46)

अनूदित पाठ ."शाम को भी मालती को काकती बाबू पढ़ाने बैठते हैं...।" (45)

प्रस्तावित पाठ . शाम को भी मालती को श्रीमती काकती पढ़ाने बैठाती है।

मूल पाठ . "उसको सोचाई अनुरूप भयो। " (48)

अनूदित पाठ ."उसका सोचना सही ही था।" (47)

प्रस्तावित पाठ . उसकी सोच के अनुरूप ही हुआ।

मूल पाठ . "महाजनलाई आफ्नै चिन्ता परेको छ।" (51)

अनूदित पाठ ."महाजन को स्वयं चिंता हो गई है।" (51)

प्रस्तावित पाठ . महाजन को स्वयं की चिंता पड़ी है।

मूल पाठ . "पछि जस्तो पर्ला उस्तै टर्ला" (52)

अनूदित पाठ ."पीछे जैसा होगा, देखा जायेगा" (52)

प्रस्तावित पाठ . जो होगा, देखा जायेगा

मूल पाठ . "एउटै घरमा बसेरा कस्तो मारपीट गरेको त त्यस्री।" (58)

अनूदित पाठ ."एक ही घर में रहकर उसने कैसे मारपीट की ?" (59)

प्रस्तावित पाठ . एक ही घर में रहकर तूने मारपीट कैसे की ?

. एक ही घर में रहकर तूने कैसे मारपीट की ?

मूल पाठ . "के भन्थे बजिया?" (66)

अनूदित पाठ ."कहता है दास ?" (67)

प्रस्तावित पाठ . क्या कहता है दास ?

मूल पाठ . "त्यसो भए हुन्छ।" (74)

अनूदित पाठ ."ऐसा होने से होगा।" (75)

प्रस्तावित . वैसा होने से होगा।

मूल पाठ . "फेरि यसमा त आफ्नै बहिनीको कुरा पज्यो"(77)

अनूदित पाठ ."फिर इसमें तो तुम्हारी बहन की ही बात है। " (78)

प्रस्तावित पाठ . 'फिर इसमें तो अपनी बहन की ही बात हो गई।'

मूल पाठ . "कलेज नहुँदा आठ माइल खरेल बाजेकैमा डेरा गराको छ उसले।" (87)

अनूदित पाठ ."क्लासेज नहीं रहने पर आठ मील पर खरेल बाजे के घर ही उसने डेरा कर लिया है।" (88)

प्रस्तावित पाठ . कॉलेज नहीं रहने पर आठ मील पर खरेल बाजे के घर ही उसने डेरा डाल लिया है।

मूल पाठ . "बासमैं भाड़ा-कुँड़ा, सातु-सामल सबै थन्क्याएका छन।" (90)

अनूदित पाठ ."बस में भाड़ा-बर्तन, सत्तू-चावल सभी चीज़ें रखी हुई हैं।" (92)

प्रस्तावित . बस में बर्तन-वर्तन, सत्तू-चावल सारी चीज़ें रखी हुई हैं।

मूल पाठ . "गड़ा खनियाले (गरालो लडनु ना नदीले माटो काट्नु) सखाप पाप्यो।" (93-94)

अनूदित पाठ ."नदी के द्वारा मिट्टी काट देने के कारण वह समाप्त हो गया।" (96)

प्रस्तावित पाठ . नदी के द्वारा मिट्टी कट जाने के चलते वह ख़त्म हो गया।

मूल पाठ . "के हो नि गिरमिट भनेको ?" (95)

अनूदित पाठ ."क्या है वह संधि ?" (97)

प्रस्तावित पाठ . क्या है यह गिरमिट ?

मूल पाठ . "त्यसैले बचेका अलिकति छात्रहरूलाई नौ माइलको स्कूलमा सारिन्छ र त्यहाँको स्कूल बन्द गरिन्छ।" (99)

अनूदित पाठ ."इसलिए, बाक़ी को छात्र नौ मील के स्कूल में चले गये और वहाँ का स्कूल का बंद हो गया।" (101)

प्रस्तावित . इसीलिए बाकी छात्रों को नौ माइल के स्कूल में भेज दिया गया और वहाँ के स्कूल को बंद कर दिया गया।

मूल पाठ . "टुहुरालाई मानो कहिले पच्छ र ?" (106)

अनूदित पाठ ."टूअर को आधा किलो चावल कैसे पचेगा?" (108)

प्रस्तावित . टूअर को कभी सम्मान पचता है ?

मूल पाठ . "जेनतेन प्रकारले आफ्नो पढ़ाई भने चलाइरहेको छु" (108)

अनूदित पाठ ."येनकेन प्रकारेण अपनी पढ़ाई चलाता जा रहा हूँ" (111)

प्रस्तावित पाठ . जैसे- तैसे किसी प्रकार से अपनी पढ़ाई को आगे बढ़ा रहा हूँ

मूल पाठ . "...मालती को पछि एकहोरो लागेका छन्..." (111)

अनूदित पाठ ."...मालती के पीछे लग गयी हैं हाथ धोकर" (114)

प्रस्तावित पाठ . ...मालती के पीछे हाथ धोकर लग गयी हैं

मूल पाठ . "तिमीलाई हराएर के म बाँच्न सक्छु ?" (113)

अनूदित पाठ ."तुम्हारे खो जाने से क्या मैं जीवित रह पाऊँगा ?" (116)

प्रस्तावित पाठ . तुम्हें खोकर क्या मैं जीवित रह पाऊँगा ?

मूल पाठ . "बास लिएर जन्ती राति एघार बजेतिर आइपुगे" (118)

अनूदित पाठ ."बारातघर से बारात रात के ग्यारह बजे के लगभग आ पहुँची।" (121)

प्रस्तावित पाठ . बस लेकर बारात रात के ग्यारह बजे के लगभग आ पहुँची।

मूल पाठ . "हामी त साथ दिन्छौं नाइ।" (127)

अनूदित पाठ ."मैं तो साथ दूँगा नहीं।" (131)

प्रस्तावित पाठ . हम तो साथ देंगे ही।

मूल पाठ . "चेहरा पनि राम्रै अर्कै पो भएछ त ?" (131)

अनूदित पाठ ."चेहरा भी एकदम बदल हो गया है ?" (136)

प्रस्तावित पाठ . चेहरा भी एकदम से बदल गया है।

मूल पाठ . "इविक्सन अलिदिनलाई टरिहाल्छ नि ?" (136)

अनूदित पाठ ."एक्शन कुछ दिनों के लिए टल जाएगा न ?" (141)

प्रस्तावित पाठ . एविक्शन (बेदख़ली)कुछ दिनों के लिए टल जाएगी न ?

मूल पाठ . "...त्यस्ता धेरै बेपारी एविक्सन भएको थलो...।" (137)

अनूदित पाठ ."...ऐसे बहुत सारे व्यापारी एक्शन हुई जगह...।" (141)

प्रस्तावित पाठ . ...ऐसे बहुत सारे व्यापारी एविक्शन हुई जगह...।

मूल पाठ . "थाना को ओ. सी. आफै हरेनको वारान्ट लिएर पहुमारा पुग्छ" (158)

अनूदित पाठ ."थाने का ओ.पी. स्वयं हरेन का वारंट लेकिर वहुमारा पहुँचते हैं।" (163)

प्रस्तावित पाठ . थाने का ओ. सी. (ऑफिसर इंचार्ज) स्वयं हरेन का वारंट लेकर पहुमारा पहुँचते हैं।

मूल पाठ . "तिमीले नै त वहाँको हेरचाह गर्नु पर्छ" (161)

अनूदित पाठ ."तुम्हें ही उनकी देखरेख करनी पड़ती है। " (166)

प्रस्तावित पाठ . तुम्हें ही उनकी देखरेख करनी पड़ेगी।

मूल पाठ . "वरपर सोध-खोज गर्न जान्छौ तिमी कि मै जान पर्छ ?" (162)

अनूदित पाठ ."तुम आसपास में खोज पुछार करने जाओगे कि मैं जाऊँ?" (167)

प्रस्तावित पाठ . तुम आसपास पूछताछ करने जाओगे कि मैं जाऊँ ?

मूल पाठ . "हुण्डरीले बोट ढाल्छ, रूख लड़ाउँछ।" (168)

अनूदित पाठ ."अंधड़ पेड़ को उखाड़ता है, गिराता है।" (172)

प्रस्तावित पाठ . आँधी पेड़ों को उजाड़ देती है।

मूल पाठ . "केटा-केटीले साँचो लाइदिएर चल्न छाडिदिएको खेलौना हो यो जीवन। साँचो सकिएपछि चल्न बन्द हुन्छ।" (169)

अनूदित पाठ ."जैसे बच्चे का मशीनवाला खिलौना एक दिन चलना छोड़ देता है, उसी प्रकार है यह जीवन। मशीन के बिगड़ जाने पर चलना बंद हो जाता है।" (173)

प्रस्तावित पाठ . जैसे बच्चे का चाबीवाला खिलौना एक दिन चलना छोड़ देता है, उसी प्रकार यह जीवन। चाबी के बिगड़ जाने पर चलना बंद हो जाता है।

उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में सुरेन्द्र प्रसाद साह द्वारा अनूदित 'ब्रह्मपुत्र के आसपास' का लील बहादुर क्षत्री कृत 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' के परिप्रेक्ष्य में भावपरक, भाषापरक विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही मूल पाठ की भाषा नेपाली तथा अनूदित पाठ की भाषा हिंदी की अपनी संरचना, व्याकरण के विश्लेषण के साथ ही उनके आपसी संबंधों की भी समीक्षा की गई है। लील बहादुर क्षत्री ने अपने उपन्यास 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' में नेपाल से रोजगार की तलाश में असम में बसे प्रवासी नागरिकों के संघर्षपूर्ण जीवन की यथार्थ कथा कही है। इस उपन्यास में लेखक काल्पनिक कथा की ओर न झुककर सामाजिक परिवेश के यथार्थ का कुशलतापूर्वक कलात्मक ढंग से औपन्यासिक कलेवर प्रदान किया है। प्रस्तुत उपन्यास नेपाली साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। ज़िन्दगी की मुश्किलों के बीच रोज़गार की तलाश में अपनी जगह से विस्थापित हो कहीं और बसना, अपने आप में काफ़ी मुश्किल काम है। इस समस्या को लेखक ने अपनी नज़रों से देखा एवं महसूस किया है और तब इस रचना की निर्मिति हुई है।

भाषिक विश्लेषण वाले अध्याय में स्रोतभाषा नेपाली तथा लक्ष्य भाषा हिंदी की संरचना का अध्ययन करते हुए यह पाया गया कि दोनों ही भाषाओं में बोलचाल के स्तर पर काफ़ी समानता है। दोनों ही भाषाएँ संस्कृत से उद्‌भूत हैं। बहुत सारे शब्द थोड़ी-सी भिन्नता के साथ एक-दूसरे से काफ़ी मिलते-जुलते हैं। लेकिन भाषिक संरचना, शैली और रचनात्मकता के स्तर पर दोनों भाषाओं में कई असमानताएँ हैं। साक्षात्कार के दौरान मूल पाठ के लेखक लील बहादुर क्षत्री ने स्वयं कहा है कि उन्होंने असम में बोली जाने वाली आम नेपाली भाषा का प्रयोग किया है। असम के नेपाली भाषा में यह स्वाभाविक है कि अनेक असमिया शब्दों का प्रचलन होने लगा है। इसलिए मूल पाठ में लेखक ने असमिया शब्दों का प्रयोग किया है। अनुवादक ने एक हद तक असमिया शब्दों का भी सटीक अनुवाद किया है।

दोनों भाषाओं के साहित्य में भी समानता देखी जा सकती है। हिंदी के भक्ति साहित्य के समान ही नेपाली भाषा का भक्ति साहित्य भी काफ़ी उन्नत है तथा वहाँ (नेपाल में) भी हिंदी भक्ति साहित्य के समान सगुण एवं निर्गुण की धारा मिलती है। साथ ही वीर काव्य और श्रृंगारिक काव्य भी मिलते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के अनूदित पाठ में मूल पाठ के मुहावरों अथवा मुहावरेदार प्रयोगों का पर्याय एवं प्रतिशब्द देने में अनुवादक को काफ़ी सफलता मिली है। कई जगहों पर मूल पाठ की शैली को अनुवादक ने अनूदित पाठ में बखूबी सुरक्षित बनाए रखा है। बहुत संभव है कि नेपाली और हिंदी भाषा की संरचनात्मक समानता के कारण अनुवादक के लिए यह अनुवाद कर्म उतना मुश्किल न रहा हो। फिर भी तमाम समानताओं के बावजूद हर भाषा की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है, अपनी एक 'रंगत और रचाव' होता है, उसे बचाए रख पाना ही अनुवादक का दायित्व होता है, यही उसकी चुनौती होती है। उसी तरह कुछ पदों को अनुवादक ने हू-ब-हू लिप्यंतरित कर कोष्ठक में उसका समतुल्य हिंदी अर्थ दिया है और ऐसा करने से अनुवाद हिंदी भाषी पाठकों के लिए बोधगम्य बन पड़ा है।

हालाँकि लेखक ने इस अनुवाद को उत्कृष्ट स्तर का अनुवाद नहीं माना है, लेकिन यह भी सच है कि हर अनुवाद की अपनी सीमाएँ हैं। बावजूद इसके शोध में किए गए विश्लेषण के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि सुरेन्द्र प्रसाद साह द्वारा अनूदित 'ब्रह्मपुत्र के आसपास' ने एक महत्त्वपूर्ण नेपाली रचना को हिंदी पाठकों के लिए उपलब्ध कराया है। यह सच है कि इस अनुवाद में संशोधन की पर्याप्त संभावनाएँ हैं, फिर भी इस अनूदित पाठ ने मूल रचना के वस्तु को तो संप्रेषित किया ही है। इस लिहाज़ से इसका अपना महत्त्व है।

परिशिष्ट

संबंधित चित्र

साक्षात्कार (लेखक से)

1. पोते

2. असमिया गमछा

3. दउरा सुरवाल, ढाका चोली

4. मेखला-चादर

5. खुकुरी

6. दाउ

7. बोटा (पान पात्र)

8. चाड्.घर

9. सेल रोटी

10. तिल पीठा

साक्षात्कार

दिनांक 12 अक्टूबर 2011 को जब लील बहादुर जी से मेरी पहली मुलाकात, उनके आवास पर हुई तब वे शाम को घर के बाहर बरामदे में बैठे हुए थे। मुझे देखते ही उन्होंने खुले दिल से स्वागत किया और आने का कारण पूछा। जब मैंने बताया कि मैं उनके उपन्यास 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' के अनुवाद तथा हिंदी और नेपाली का तुलनात्मक अध्ययन कर रही हूँ, तो वे बहुत खूश हुए। उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया तथा शाबाशी भी दी कि मैं नेपाली न होते हुए भी इस शोधकार्य में रुचि ले रही हूँ। पहले तो उन्होंने बिना पूछे ही बता दिया कि उनकी कृतियों को यदि मन लगाकर ध्यान से पढ़े तो उनके जीवन की झाँकी उसमें प्रतिबिम्बत होगी। इसमें उनके जीवन के कई अंश है।

सबसे पहले तो उन्होंने मुझे से यह स्पष्ट कर लिया कि मैं किस भाषा में उत्तर चाहती हूँ। मैंने कहा हिंदी में, क्योंकि मेरा शोध कार्य हिंदी में है। प्रश्नोत्तर के बाद जब हम यू ही बैठे थे, तब उनके साथ अंग्रेज़ी तथा असमिया में भी बातचीत हुई। जितने वे नेपाली भाषा के ज्ञाता हैं, उतने ही अंग्रेज़ी, असमिया, बांग्ला तथा हिंदी के भी ज्ञाता हैं। उनकी स्मरण शक्ति बहुत तेज़ है क्योंकि साक्षात्कार के दौरान उनको हर तिथि याद थी। मैंने उनसे निम्नलिखित विषय पर सवाल किए-

प्रश्न :. कृपया अपनी शिक्षा के बारे में कुछ बताइए कि आपकी प्रारंभिक शिक्षा और फिर उच्च स्तरीय पढ़ाई कहाँ से की ?

उत्तर :. मेरे पिताजी पुलिस सेवा में थे। तबादले के चलते मैंने अपनी प्राथमिक शिक्षा शिलाड. (मेघालय) में बांग्ला माध्यम से की और बाद में वहीं से एम.ई. गोर्खा पाठशाला से की। उसके बाद में बी.ए. करने कॉटन कॉलेज गुवाहाटी आया और अर्थशास्त्र को लेकर मैंने एम.ए. की पढ़ाई पूरी की।

प्रश्न :. अब तक आप कहाँ-कहाँ अपनी सेवाएँ दे चुके हैं ?

उत्तर :. मैंने कुछ समय के लिए ऑल इंडिया रेडियो में लगभग चार वर्षों तक नेपाली कार्यक्रम का परिचालन किया और मैं 'आर्य विद्यापीठ कॉलेज' में अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष के पद से सेवामुक्त हुआ। कुछ समय के लिए मैं साहित्य अकादेमी की नेपाली परामर्श समिति का सदस्य भी था।

प्रश्न :. साहित्य सृजन की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली ?

उत्तर :. घर में नेपाली परिवेश तथा माता-पिता की प्रेरणा से मैंने नेपाली लिखना शुरू किया था। एक और नाम मैं लेना चाहूँगा वह है 'भक्ति चन्द्र कलिता' -एक असमिया सिपाही, जो मेरे बहुत करीब था। उसी की प्रेरणा से मैंने अपना पहला उपन्यास 'विरह' लिखा था, जो कभी प्रकाशित ही नहीं हो पाया। पर इसी कृति ने मुझे और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। एक कारण यह भी है कि मेरी हमेशा से नेपाली जीवन के बारे में लिखने की इच्छा रही थी।

प्रश्न :. आप साहित्य की किस विधा में अधिक रुचि रखते हैं ?

उत्तर :. मैं सभी विधा में रुचि रखता हूँ। नाटक, कविता, उपन्यास, कहानी सब में। वैसे सबसे पहले मैंने कविता लिखना शुरू किया 1949 में। 'शिवस्तुति' नाम से यह पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुई वर्ष 1952 में बनारस से 'युगवाणी' पत्रिका में 'कर्तव्य', 'स्यानी आमा' प्रकाशित हुआ। पर मेरी अधिक रुचि नाटक में है। मैं कई नाटकों का मंचन कर चुका हूँ। साथ ही नाटकों में अभिनय भी किया है। उनमें से कुछ हैं - 'लक्ष्य' , 'दो बाटो' जो काठमांडौ से प्रकाशित हैं।

प्रश्न :. ब्रह्मपुत्र का छेउ -छाउ' लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली ?

उत्तर :. इस उपन्यास को लिखने की प्रेरणा मुझे मेरे ही उपन्यास 'बसाइँ' से मिली। 'बसाइँ' में मुख्य रूप से नेपाल के नेपालियों के जीवन की झाँकी है तो 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' में असम के नेपालियों की स्थितियों को दर्शाने की कोशिश है। चूँकि मेरा

जन्म असम में हुआ, तो मेरा यह कर्तव्य भी था। साथ ही, मेरी इच्छा थी कि मैं कुछ असम के नेपालियों के जीवन, स्थिति, और उनकी जीविका आदि के बारे में लिखूँ।

प्रश्न :. इस उपन्यास के पात्र काल्पनिक है या यथार्थ ?

उत्तर :. इसमें मैंने जितने भी पात्र रखे हैं, उनमें से अधिकतर काल्पनिक ही हैं। पर जिन स्थितियों को रखा है, वे काफ़ी हद तक सच्चाई बयाँ करती हैं। जैसे हर साल यहाँ बाढ़ के कारण लोग विस्थापित हो जाते हैं, उनकी गायें कुछ डूबकर मर जाती हैं, कुछ खो जाती हैं और उन्हें फिर से नए सिरे से अपना जीवन, व्यवसाय सभी की शुरूआत करनी पड़ती है। और यह स्थिति आज भी उतनी ही भयावह और प्रासंगिक है।

प्रश्न :. किस आधार पर अपने भाषा-शैली यानी संवाद आदि का चुनाव किया है?

उत्तर :. इसमें पात्रों के जो संवाद है वह मैंने आम नेपाली बोलचाल की भाषा ही रखी है, ताकि पाठक को अधिक कठिनाई न हो। यह भी ध्यान में रखा है कि असम के नेपाली निवासियों की नेपाली भाषा में किस प्रकार असमिया शब्द भी घुलमिल गए है।

प्रश्न :. भारत के अन्य स्थानों में प्रवासी नेपालियों की आज क्या यही हालत है ?

उत्तर :. जहाँ तक देखा जाए 'हाँ'। क्योंकि हर जगह अधिकतर ये लोग गौ पालते हैं और दूध का व्यापार करते हैं। पर अब स्थिति बदलती नज़र आ रही हैं सभी क्षेत्रों में, पढ़ाई हो या नौकरी . इस पर अधिक ज़ोर है।

प्रश्न :. 'ब्रह्मपत्र का छेउ-छाउ' उपन्यास लिखने के पीछे क्या कोई उददे्श्य भी रहा है ?

उत्तर :. जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि मेरा मुख्य उददे्श्य असम में बसे नेपालियों के जीवनचर्या को और उनके जीवन संघर्ष को दिखाना ही मुख्य रहा है। इसी क्रम में अन्य कई बातें, पात्र एवं स्थितियों के चलते आ गई है।

प्रश्न :. ब्रह्मपुत्र का छेउ-छाउ' और 'बसाइँ' में क्या अंतर्संबंध है ?

उत्तर :. हाँ, आप कह सकती है कि दोनों ही उपन्यास में परस्पर संबंध है। 'बसाइँ' को पढ़ने के बाद अगर आप 'ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ' पढ़ेंगे तो आपको लगेगा कि 'ब्रह्मपुत्र का छेउ-छाउ' इसका दूसरा भाग है। दोनों ही उपन्यासों की परिस्थितियों में भी काफ़ी समानता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

लील बहादुर क्षत्री — ब्रह्मपुत्रका छेउ-छाउ
श्याम प्रकाशन, दार्जीलिंङ
प्रकाशन काल, 1986

सुरेन्द्र प्रसाद साह — ब्रह्मपुत्र के आसपास
साहित्य अकादेमी, दिल्ली-110001
प्रथम संस्करण, 1996

सहायक ग्रंथ (हिंदी)

अनंत चौधरी — नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी
हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय
दिल्ली विश्विद्यालय, दिल्ली-110009
प्रथम संस्करण , 1973

आशा सिंह — नेपाली और हिंदी का तुलनात्मक अध्ययन
पारिजात प्रकाशन, पटना-1
प्रथम संस्करण : 1983

आर. ए. गुप्ता — लोकोक्तियाँ : हिंदी तथा अंग्रेज़ी
पुस्तक महल, दरियागंज,
नई दिल्ली.110002, संस्करण : 2010

एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

अनुवाद भाषाएँ-समस्याएँ

ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली . 110006

संस्करण, 1992

कमला सांकृत्यायन

नेपाली साहित्य

लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद-1

प्रथम संस्करण : 1986

कैलाश चंद्र भाटिया (सं.)

भारतीय भाषाएँ और हिंदी अनुवाद समस्या-समाधान

वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-02

तृतीय संस्करण : 2004

कैलाश चंद्र भाटिया

अनुवाद प्रक्रिया और स्वरूप

तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली-110002

प्रथम संस्करण, 2004

कृष्ण कुमार गोस्वामी

अनुवाद विज्ञान की भूमिका

राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-02

प्रथम संस्करण, 2008

गोपीनाथन, एस. कंद स्वामी	अनुवाद की समस्याएँ (Problems of Translation) लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद. 211001 प्रथम संस्करण, 1993
जी. गोपीनाथन	अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद पाँचवाँ संस्करण, 2004
देवेन्द्र शर्मा	हिंदी भाषा और नागरी लिपि हिंदी साहित्य सम्मलेन प्रकाशन, प्रयाग
नगेन्द्र (सं.)	अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली- 110007
प्रदीप सक्सेना	अनुवाद सैद्धांतिकी आधार प्रकाशन पंचकूला (हरियाणा) प्रथम संस्करण , 2000
भोलानाथ तिवारी	हिंदी भाषा की संरचना वाणी प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, 2008

मथुरादत्त पाण्डेय

नेपाली और हिंदी : भक्ति-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय ग्रंथ निकेतन

लाजपतराय मार्केट, दिल्ली -110006

प्रथम संस्करण, 1970

महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिंदी भाषा

वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002

संस्करण, 2007

मोतीलाल गुप्त

आधुनिक भाषा विज्ञान

रिसर्च प्रकाशन, दिल्ली-110007

संस्करण, 1972

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

हिंदी भाषा : संरचना के विविध आयाम

राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली-110002

प्रथम संस्करण, 1995

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव,
कृष्णकुमार गोस्वामी

अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ

आलेख प्रकाशन

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

संस्करण, 2010

राचमल्लू रामचन्द्र रेड्डी	अनुवाद के सिद्धांत समस्याएँ और समाधान साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली-110001 प्रथम संस्करण, 1998
रामविलास शर्मा	भारत की भाषा-समस्या राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002 तीसरा संस्करण 2003
राजनाथ मौर्य	भाषा विज्ञान के तत्त्व साहित्य भवन प्रकाशन, प्रा. लि. इलाहबाद
शिवकुमार शर्मा	हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ अशोक प्रकाशन, दिल्ली.110006 अठारहवाँ संस्करण, 2006
सुरेन्द्र प्रसाद साह	सतह के नीचे जयश्री प्रकाशन, दिल्ली.110032 संस्करण 1990
सुरेश धींगड़ा	नेपाल में तराई समुदाय एवं राष्ट्रीय एकता अमन ग्राफ़िक्स एल-5 ए, त्रिवेणी, शेख़ सराय, फेस-2, नई दिल्ली-110003

सुरेश सिंहल

अनुवाद संवेदना और सरोकार

संजय प्रकाशन, नई दिल्ली

प्रथम संस्करण, 2008

सुरेश कुमार

अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा

वाणी प्रकाशन, दिल्ली-110002

पंचम संस्करण, 2007

सूरजभान सिंह

हिंदी भाषा संदर्भ संरचना

साहित्य सहकार प्रकाशन,

दिल्ली. 110051

प्रथम संस्करण, 1991

सूरजभान सिंह

अंग्रेज़ी-हिंदी अनुवाद व्याकरण

प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली-02

प्रथम संस्करण, 2003

सहायक ग्रंथ (नेपाली)

असीत राई

भारतीय नेपाली साहित्यको विकासक्रम

प्रकाश धवन, वाराणसी, 221001

प्रथम संस्करण 1986

इन्द्रबहादुर छेत्री	केही साहित्यिक समीक्षा ग्राफिक प्रिण्टर्स, दुर्गागढ़ी दार्जीलिंङ, सिलगढ़ी प्रथम संस्करण- 2009
कृष्णचन्द्रसिंह प्रधान	नेपाली उपन्यास र उपन्यासकार साझा प्रकाशन, नेपाल दूसरा संस्करण, वि. सं. 2043
जार्ज ताड़तिल, जीवन नामदुंग, ललिता राई 'अहमद' (सं.)	दार्जीलिंङ को नेपाली भाषी समुदाय सांस्कृतिक र भाषिक संक्रमण साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली . 110001 प्रथम संस्करण, 2009
जार्ज ताड़तिल, जीवन नामदुंग (सं.)	नेपाली भाषा साहित्यमा सांस्कृतिक चिह्नारी सेलेशियन कलेज, सोनादा दार्जीलिंग . 734219 प्रथम संस्करण, 2005
जीवन नामदुंग	समकालीन नेपाली समालोचना साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली . 110001 प्रथम संस्करण, 2000

दौलतविक्रम विष्ट

हिमालय र मान्छे

नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान

नरेन्द्र चापागाई

केही भाषा : केही साहित्य

प्रतिभा पुरस्कार प्रतिष्ठान

विराटनगर

प्रथम संस्करण, 2045 वि.

पारसमणि प्रधान,

नगेन्द्रमणि प्रधान

नेपाली व्याकरण

म्याकलिन एण्ड कंपनी, लिमिटेड

कलकत्ता, 1959

पासड. छिरिड.

कार्यालयीय सहायक

मञजुश्री प्रकाशन, दार्जीलिंङ

प्रथम संस्करण, 2002

बाल चन्द्र शर्मा

नेपाली संस्कृति

काठमाण्डू, नेपाल, 2020 वि.

बाल चन्द्र शर्मा

नेपाली साहित्य को इतिहास

नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान

काठमाडौं, नेपाल

प्रथम संस्करण 2039 वि.

रामविक्रम सिजापति	केन्द्रीय भाषिकाहरू नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान काठमाडौं, नेपाल प्रथम संस्करण, वि. स. 2041
लेखवीर सिंह	नेपाल राष्ट्रको ऐतिहासिक झलक नेपाली साहित्य भवन, विराटनगर प्रथम संस्करण, 2028 वि.
वीरभद्र कार्कीढोली	सामयिक विविध विषयक संकलन प्रक्रिया प्रकाशन, पश्चिम सिक्किम संस्करण, 1993
शरणहरि श्रेष्ठ	नेपालको आर्थिक तथा मानव भूगोल इन्टरप्राइज़ (प्रा.) लि., महाकालस्थान, काठमाडौं सप्तम संस्करण, 2045 वि.
सूर्य विक्रम ज्ञवाली	नेपाल उपत्यकाको मध्यकालीन इतिहास रायल नेपाल एकेडेमी, काठमांडौ प्रथम वार, संवत् 2019

सहायक ग्रंथ (अंग्रेज़ी)

A. C. Sinha, T.B. Subba(ed.)	The Nepalis in Northeast India : A community in Search of Indian Identity Indus Publishing Company New Delhi-110027
T.B. Subba, A.C. Sinha, G.S. Nepal, D.R. Nepal (ed.)	Indian Nepalis Issues and Perspectives Concept Publishing Company Mohan Garden, New Delhi- 110059 First Published, 2009

पत्र-पत्रिकाएँ

नेपाली पत्रिकाएँ

रचना असमे नेपाली विशेषांक (2068वि.)	गहनापोखरी, टड्.गाल
(सं.) ज्ञानुवाकर पौडेल	काठमाडौं- 5
मासिक 'हाम्रो ध्वनि'	प्रकाशक नवध्वनि संगठन
जुलाई 2008, जनवरी 2011	गुवाहाटी-1, असम
(संस्थापक सम्पादक) अनुराग प्रधान (संपादक) पौडयाल (संयुक्त संपादिका) डॉ. शांति थापा	

कोश

भोलानाथ तिवारी, अमरनाथ कपूर, विश्वप्रकाश गुप्त	संपूर्ण अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दकोश किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.02
हिंदी-नेपाली कोश	केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली प्रथम संस्करण . 2004
नेपाली.हिंदी कोश	केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली प्रथम संस्करण . 2009
K.L. Karmacharya, P.R. Vaidya	Advanced Learner's Dictionary English-English-Nepali Ajanta Prakashan, Delhi-110006
K.R. Adhikary	A Concise English –Nepali Dictionary
K.R. Adhikary	A Concise Nepali-English Dictionary
R.C. Pathak	Bhargava's Dictionary Hindi-English Dictionary Bhargava Book Depot Varanasi Reprint, 2006
S.K. Verma, R.N. Sahai	Oxford English-Hindi Dictionary